शान्ति-दूत नेहरु

वीरेन्द्र मोहन रतूडी

Shanti-Doot Nehru (Biographical Sketch of Nehru)

by Virendra Mohan Raturi

Rs. 2.50

© उमेश प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक ● उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६
मुद्रक ● मूवीज़ प्रेस
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
आवरण-मुद्रक ● परमहंस प्रेस
दरियागंज, दिल्ली
कलापक्ष ● जगदीश चड्ढा
संस्करण ● प्रथम (दिसम्बर १९६४)
मूल्य ● दो रुपए पचास पैसे

लेखक
की अन्य
रचनायें

●

नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएँ

वीर कुंवरसिंह

मीरां बावरी

●

किशोर-उपन्यास-माला के पुष्प

[सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य]

वीर रस से पूर्ण

अर्जुन	श्रीकृष्ण
हल्दी घाटी	दुर्गादास
खूब लडी मर्दानी	वीर कुंवरसिंह
चित्तौडगढ़ की रानी	सम्राट् शिलादित्य
गढ़मण्डल की रानी	बाजीराव पेशवा
जय भवानी	वीर कुणाल
कर्ण	भीष्म

अन्य महापुरुषों पर आधारित

शान्ति-दूत नेहरू	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
ऋषि का शाप	देवता हार गए
गुरु नानक देव	सम्राट् अशोक
गुरु अंगद देव	मीरां बावरी
गुरु श्रमरदास	संत कबीर
गौतम बुद्ध	रवि बाबू

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान	हैमलेट
मैकबेथ	राजा लियर
जूलियस सीजर	राई से पहाङ

शिकार एवं ज्ञान-विज्ञान पर आधारित

पूपू

रूपा और लल्ली

बाघ का शिकार

मगरमच्छ का शिकार

यह पुस्तक

...२७ मई १९६४ की दोपहर को महामानव शान्ति-दूत जवाहर- लाल नेहरू के निधन से एक मनवन्तर समाप्त हो गया।

जीवन में उन्माद, प्राणों में पीडा, मन में आत्मोत्सर्ग का तेज और चेहरे पर आशा-निराशा की धूप-छांव लिए भारत-माता का यह लाडला सपूत जवाहरलाल हमेशा चलता रहा, चलता रहा- पहले भारत माता को गुलामी के लौहपाशों से मुक्त करने के लिए; और बाद में भारत की जनता को प्रगति के पथ पर ले जाने, दुनिया को युद्ध के भयावह परिणामों से बचाने तथा समस्त मानव जाति को प्रेम और शान्ति का संदेश देने के लिए। कभी शहरों में गया कभी गाँवों में, कभी विमान से गया कभी जहाज से, कभी रेल से कभी मोटर से, कभी पैदल कभी हेलिकाप्टर से, कभी ऊंट से कभी याक से, कभी टट्टू पर कभी बैलगाडी से; कभी विश्वनेताओं से मिला कभी मामूली किसानों से, कभी पूंजी- पतियों से मिला कभी मजदूरों से, कभी वैज्ञानिकों से मिला कभी इंजी- नियरों से, कभी वृद्धों से मिला कभी बच्चों से।

भारत-माता का वही लाडला सपूत २७ मई १९६४ की दोपहर को चल दिया अनन्त यात्रा पर, वायु-मार्ग से, जाने किस लोक के देवताओं से मिलने।

आज नेहरू हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी अमर कहानी, उनका अमर प्यार और संदेश हमारे पास हैं।

नेहरू नहीं रहे - नेहरू अमर है, उसी महामानव नेहरू की कहानी इस पुस्तक में है।

X

X

X

यह जीवन है या उपन्यास- यह प्रश्न नहीं उठता, क्योंकि युगपुरुष नेहरू का जीवन किसी भी उपन्यास से कम रुचिकर नहीं रहा। इस कथावस्तु में अनेक घटनायें हैं, अनेक कथोपकथन हैं। सभी घटनाये प्रामाणिक हैं और उनका उल्लेख अनेक पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में

है। जो कथोपकथन यहां दिए गए हैं, वे या तो मूल हैं या अंग्रेजी के अनुवाद। सही-सही वाक्य क्या थे, यह बताना अत्यन्त कठिन है, लेकिन विद्वत्जनों ने अपने संस्मरणों आदि में जिन वाक्यों का उल्लेख किया, उन्हें ज्यों का त्यों अथवा उनका सही-सही अनुवाद देने का प्रयत्न किया गया है। हां, अन्दाजे बयां अपना है।

X

X

X

जिन पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली गई, उनका अत्यन्त आभारी हूँ। उनमें प्रमुख ये हैं श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित - मेरी कहानी, आजादी के सत्रह कदम, स्वाधीनता और उसके बाद, कुछ पुरानी चिट्ठियां; नेहरू : ए पॉलिटिकल बायग्राफी - माइकेल ब्रीचर; जवाहरलाल नेहरू - फ्रैंक मारेस; पण्डित नेहरू - देवीप्रसाद धवन 'विकल'; नेहरू की रूस यात्रा - राजकुमार; नेहरू विश्वशान्ति की खोज में - ओमप्रकाश गुप्त; नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ; एम्बेसडर्स रिपोर्ट- चेस्टर बॉल्स; मेरी कौन सुनेगा- महावीर त्यागी; गांधी की कहानी - लुई फिशर; भारतीय स्वतन्त्रता का इतिहास इन्द्र विद्यावाचस्पति । पत्र-पत्रिकायें : युवक-कांग्रेस, मजदूर संदेश, चरित्र-निर्माण, जीवन- साहित्य, नवनीत, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, टाइम्स अफ इण्डिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, हिन्दुस्तान तथा ब्लिट्ज।

और अन्त में आभारी हूँ - भाई गोपालजी मेहरोत्रा का, जिन्होंने चित्र एवं मैटर एकत्र करने में सहायता दी; तथा उमेश प्रकाशन के भाई रमेश सन्त और शिव सन्त तथा चित्रकार जगदीश चड्ढा का, जिनके अथक प्रयास से पुस्तक इस रूप में आई।

दिसम्बर, १९६४
आार ५५१, शंकर रोड,
न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली।

- वीरेन्द्र मोहन रतूडी

१

अनन्त यात्रा पर

भोर हो गई है। ती र हो गई है। तीन मूति में प्रधानमंत्री-भवन के वृक्षों की पर बाल-सूर्य की गुलाबी किरणें अठखेलियाँ करने लगी हैं; टहनियों पर चिडियाँ चहचहा रही हैं, उद्यान की हरी दूब में चमक आ गई है और गुलाब के लाल- लाल फूल नवजात विहान का स्वागत कर रहे हैं।

रात बीत चुकी है, भोर हो गई है।

कल रात तीन मूति के इसी भवन में जब लगभग सभी लोग गहरी नींद में डूबे थे, तब भी भवन के एक कमरे में वह, उम्र में वृद्ध लेकिन कर्मक्षेत्र में उत्साही तरुण, मेज पर सिर भुकाए कागज-पत्र देखने में लीन था। रात काफी बीत गई थी, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। तब उस व्यक्ति ने अपनी कलाई-घङी की ओर देखा । आधी रात हो चुकी थी ।

"मैंने सब फाइलें निबटा दी हैं," उस व्यक्ति ने अपनी कुर्सी से उठते हुए अपनी चिरपरिचित मुस्कान बिखेरते हुए अपने सहायक से कहा ।

वह उठा। फिर अचानक उसकी निगाह मेज की ओर चली गई। मेज पर एक पैड रखा था और उस पैड पर हाथ से लिखी कुछ पंक्तियाँ थीं। उसने गौर से उन पंक्तियों की ओर देखा ।

ये पंक्तियाँ उसी की लिखी थीं। कभी उसने राबर्ट फास्ट की कवितायें पढ़ी थीं और उनमें से एक कविता की कुछ पंक्तियाँ उसे बेहद पसन्द आई थीं; उन्हीं पंक्तियों को उसने अपने पैड पर लिख दिया था। और अब खडा-खडा वह फिर उन्हीं पंक्तियों को गौर से देख रहा था :

दि उड्स आर लवली, डार्क एण्ड डीप,
बट आई हैव प्रामिसेज टु कीप,
एण्ड माइल्स टु गो, बिफोर आई स्लीप,
एण्ड माइल्स टु गो, बिफोर आई स्लीप।
(घने ये वन सुन्दर भरपूर,
मुझे पर रखनी बात जरूर,
अभी सोने से पहले और,
मुझे चलना है मीलों दूर,
मुझे चलना है मीलों दूर)।

इन पंक्तियों ने जाने कितनी बार उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी, आगे बढ़ने की, निरंतर आगे बढ़ने की। और इसीलिए आज ७४ वर्ष की आयु में भी वह कर्मशील है, बिना थके निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है।

लेकिन इधर कुछ महीनों से उसकी गतिशीलता में कुछ अवरोध आ गया है, अनेक चिन्ताओं ने, आपसी मतभेद ने, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं ने, मित्रता का दावा करने वालों के मित्रघात ने उसे थका डाला है, उसके चेहरे पर शिकनें डाल दी हैं और उसकी गुलाब-सी निश्छल मुस्कान में वेदना की हलकी कूची फेर दी है। फिर भी वह नीलकण्ठ शिव की तरह समस्त समस्याओं, समस्त दुखों और समस्त वेदनाओं को अपने में समेटे चला जा रहा है, आगे बढ़ता जा रहा है। लेकिन कब तक ? ईर्ष्या, द्वेष, सम्प्रदाय, कूटनीति, रंगभेद, मित्रघात के हजारों सर्पों के डंक को वह कब तक सह सकेगा; कब तक उन्हें

हँसते-हँसते झेल सकेगा ?

इसीलिए कल रात जब वह अपना समस्त कार्य निबटाकर उठा और उसकी निगाहें अपने पैड पर लिखी कविता पर टिकीं, तो वह मुस्कराया। लेकिन इस मुस्कान में अकथ वेदना थी, एक गतिशील मनुष्य की थकान थी, और थी विषपायी कण्ठ की ओर बढ़ती हुई गहरी नीली छाया।

वह हलके-हलके कदमों से अपने पलंग की ओर बढ़ा और शीघ्र ही निद्रा ने उसे अपने अंक में ले लिया।

"लेकिन... मुझे रखनी है बात जरूर अभी सोने से पहले और, मुझे चलना है मीलों दूर... मीलों दूर।"

जाने कितने वायदे थे, जो उसे पूरे करने थे; कितनी समस्यायें थीं, जो उसे हल करनी थीं; कितने प्रश्न थे, जिन पर उसे विचार करना था।

भोर हुई और वह उठा। सूर्य की किरणों ने तीन मूर्ति के उस भवन की ओर अपनी बाँहें फैलाई ही थीं कि तभी एक अजीब-सा दर्द उसने अपनी पीठ पर महसूस किया।

सामने टंगा कैलेण्डर बता रहा था, आज की तारीख - २७ मई १९६४। दीवाल की घङी समय बता रही थी - ६ बज- कर २० मिनट। और इसी समय उसे दिल का भारी दौरा पङा और वह बेहोश हो गया। चेतना ने शरीर का साथ छोङ दिया और वाणी ने जिह्वा का।

डाक्टर दौङे-दौङे आये। उस महामानव की चेतना वापस लौटाने का, जिह्वा में वाक्-शक्ति लाने का भरसक प्रयत्न करने लगे। इंजेक्शन दिए गए, आक्सीजन दिया गया, सभी सम्भव प्रयत्न किए गए। लेकिन जो अचेत था, अचेत बना रहा।

सूचना पाते ही राष्ट्रपति भागे हुए आये; उपराष्ट्रपति दौङे, अनेक मंत्रीगण पहुँचे। तीन मूर्ति भवन में अजीब-सा सन्नाटा

छा गया-एक अजीब-सा वातावरण, मानों काल की छाया मंडरा रही हो। चारों ओर सुनसान। केवल वहाँ उपस्थित लोगों के हाथों की घड़ियों की टिक-टिक सुनाई दे रही थी।

लगता था समय तेजी से बढ़ता जा रहा है।

डाक्टर भरसक प्रयत्न कर रहे थे; सभी की निगाहें उस व्यक्ति पर टिकीं थीं, जो बेहोश पड़ा था; कहीं कोई आवाज नहीं; केवल समय तेजी से भाग रहा था- टिक-टिक-टिक।

ग्यारह बजे लोकसभा की बैठक आरम्भ हुई। गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने भारी कण्ठ से सूचना दी, "स्पीकर महोदय, अत्यन्त परितप्त हृदय से मैं सदन को प्रधानमंत्री श्री नेहरू के स्वास्थ्य की हालत से सूचित करना चाहता हूँ। प्रातः ६ बजकर २० मिनट से वे सख्त बीमार हैं और उनकी हालत चिन्ताजनक है।"

श्रोताओं के हृदय अज्ञात भय से धड़क उठे। जंगल की आग की तरह यह खबर पूरी राजधानी में फैल गई। जो जिस हालत में था उसी हालत में तीन मूर्ति की ओर चल पड़ा। नेहरू जी की कोठी की ओर मंत्रियों, संसद सदस्यों, आबाल, वृद्धों, स्त्रियों सभी का ताँता लग गया।

शान्ति का मसीहा आज शान्त मुद्रा में अपने पलंग पर पड़ा था, और दर्जनों निगाहें उस पर टिकी थीं। सब प्रतीक्षा में थे कि वह आँखें खोले।

लेकिन सुबह साढ़े छः बजे जो उसने आँखें बन्द की थीं, वे कभी नहीं खोलीं। लगभग दो बजे डाक्टरों ने हताश होकर कह दिया- "ज्योति बुझ गई है।"

एक अजीब-सा सन्नाटा छा गया, मानो समय रुक गया हो।

दुनिया की सभी चीजें स्थिर हो गई हों। कहीं कोई हलचल नहीं रही।

आकाशवाणी के विविध भारती से गीत चल रहा था- "मत रो माता, लाल तेरे बहुतेरे..।" यकायक गीत बन्द हो गया। श्रोताओं ने चौंककर अपने-अपने रेडियो की ओर देखा। यह गाना क्यों बन्द हुआ। तभी रेडियो से उन्हें भर्राई आवाज़ में सुनाई दिया- "हमें अत्यन्त खेद के साथ सूचित करना पड रहा है कि भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू अब इस संसार में नहीं रहे। आज दोपहर दो बजे अचानक उनका स्वर्गवास हो गया...।"

विदेशों के रेडियो स्टेशनों ने भी अपने कार्यक्रम बन्द कर दिए और बडे दुख से सुनाया कि भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू अब नहीं रहे।

सारा संसार शोक के सागर में डूब गया। वह व्यक्ति जिसने जाने कितनी बार सारी दुनिया को विश्व युद्ध के कगार में गिरते-गिरते बचाया था, जिसने समस्त संसार को शान्ति का पाठ पढ़ाया था, जिसने संसार की दो प्रमुख विरोधी शक्तियों में मेल कराया था, वही आज अपनी अनन्त यात्रा पर चल दिया था।

धरती शोक-विह्वल थी। उसने अपना सपूत खो दिया था, अपना कुलदीपक, अपना सूर्य खो दिया था। वास्तव में आकाश का सूर्य भी उस समय अपने आँसू छिपाने बादलों की ओट हो गया। मई की तपती दोपहरी के वे बादल भी काँप उठे थे, उसने भी शान्ति के उस मसीहे की स्मृति में दो बूंदें ढलका दी थीं।

अब तक जो समय रुक गया था, तेजी से बढ़ने लगा। दुकानें

बन्द हो गईं, दफ्तर बन्द हो गए; जो जहाँ था, वहीं से तीन मूर्ति की ओर चल पडा । बाजार सुनसान हो गए, दफ्तरों में सन्नाटा छा गया। हलचल थी तो केवल तीन मूति की ओर जाने वाली सडकों पर, जहाँ जनता का सागर उमड पडा था ।

मनहूस वातावरण । श्राकाश का रंग बदल गया। बादलों में हलचल आ गई। हवा तेज हो गई। देखते-देखते सारा आकाश धूल से भर उठा और तेज आँधी चलने लगी। लोगों ने देखा मिण्टो रोड के पास दो पेड एक के बाद एक धडाम से गिर पडे, मानो अपने प्यारे नेता नेहरू के निधन का दुख न सह पाए हों।

केवल ये पेड ही नहीं, अनेक मनुष्य भी यह महान दुख न सह पाये । कई व्यक्तियों की हृदय की गति बन्द हो गई और वे भी अपने प्रिय नेता के साथ ही चल बसे । अनेक व्यक्तियों ने अपना सिर मुंडवा दिया, मानों उनके अपने किसी सगे की मृत्यु हो गई हो ।

भारत ही नहीं बल्कि सारा संसार शोक-सागर में डूब गया । देश-देश के नेता अपनी अन्तिम श्रद्धांजलियाँ भेंट करने विमानों द्वारा दिल्ली की ओर चल पडे। देश के प्रत्येक शहर से लोग दिल्ली श्राने लगे। और जो दिल्ली में थे वे तीन मूर्ति की ओर चल पडे।

आँधी और तूफान में भी तीन मूर्ति के आगे लाखों की भीड जमा हो गई- अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन करने ।

छोटे-छोटे बच्चे प्रधानमंत्री भवन के फाटक के सींकचे पकड कर अन्दर झांक रहे थे, उनके नरम नरम गालों पर आँसू की बूंदें दुलक रही थीं, बाल बिखरे थे और वे सिसक-सिसककर कह रहे थे- "चाचा नेहरू भ्रमर हैं।"

हाय ! अब कौन उन्हें इतना प्यार करेगा ?

CHADDA

लम्बी लाइन लग गई, नेहरू जी के दर्शन करने। कोई हाथ में लाल गुलाब लिए था, कोई सफेद जूही, कोई फूलों की माला और कोई गुलदस्ता। फूलों के उस राजकुमार को सब फूलों से ढक देना चाहते थे; शान्ति के उस दूत पर सब फूलों की कोमल पंखुड़ियाँ बिखेर देना चाहते थे।

और तभी उनके माली ने देखा, फूलों से ढके उस राजकुमार की अचकन पर तो लाल गुलाब है ही नहीं। शायद जब उन्हें शयनागार से नीचे लाया गया, तभी अचकन से फूल गिर पड़ा। माली दौड़ा-दौड़ा बाहर गया। एक सुन्दर-सी लाल-लाल गुलाब की कली तोड़ी उसने। अन्दर आया और कांपते हाथों से उस गुलाब को अपने राजा नेहरू की अचकन पर टाँक दिया - "लो! फूलों के राजकुमार, अपना गुलाब! मेरे रहते तुम्हारी अचकन पर लाल गुलाब न हो! मर जाऊँगा मैं, लेकिन तुम्हें बिना गुलाब के नहीं देख सकूंगा। लो, यह एक और लाल गुलाब, अन्तिम गुलाब!"

कौन ऐसा अभागा होगा, जिसने माली को गुलाब टाँकते देख दो आँसू न लुढ़का दिए होंगे, जिसका कण्ठ न भर आया होगा, जिसके होंठों पर कम्पन न आ गई होगी।

रात का एक बज गया। लाखों की भीड़ अब भी खड़ी थी, शान्त, दुखी, पंक्ति बांधे अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन के लिए। बच्चे रो रहे थे, स्त्रियां सिसक रही थीं, युवकों की आँखें नम थीं, वृद्धों के गालों पर आँसू सूख गए थे और आँखें पथराई- सी उस लम्बी लाइन को पार कर उस भवन पर टिकी थीं, जहाँ

वह प्रिय नेता आज चुपचाप लेटा था। जो कभी चुप नहीं रहा, जिसने हमेशा गरीबों, पीड़ितों, दुखियों के पक्ष में आवाज बुलन्द की, जो देश की स्वतंत्रता के लिए सैकड़ों बार मंच पर दहाड़ा, जिसने विश्वशांति के लिए सैकड़ों बार बीसियों देशों में नारे लगाये, जिसने दुनिया को युद्ध की

आग से बचाने के लिए लाखों मीलों की यात्रा की, जो किसानों के बीच किसान बन गया और मजदूरों के बीच मजदूर, जो राजनीतिज्ञों के बीच गम्भीर विचारक बना और बच्चों के बीच बच्चों की तरह खिलखिलाया- वही आज अपने भवन के आँगन में शान्त लेटा था और आबाल-वृद्ध सभी पंक्तिबद्ध हो उसके अन्तिम दर्शन कर रहे थे। किसी को नींद नहीं, भूख-प्यास नहीं, थकान नहीं। घण्टों से पंक्ति में खडे । जाने कौन-सा जादू था उस व्यक्ति में, जिसने, जब जीवित रहा तब भी इसी तरह लाखों का मन मोहा और आज मृत है तब भी लाखों को अपनी ओर खींच रहा है।

कितना भाग्यशाली होता है वह युग, जो इतने महान व्यक्ति को जन्म देता है; कितना भाग्यशाली होता है वह देश, जिसकी मिट्टी में इतना महान व्यक्ति खेलता है और बडा होता है; कितने सौभाग्यशाली होते हैं वे लोग, जो इतने महान व्यक्ति के दर्शन करते हैं ।

और आज उसके निधन से धरती रोई, आसमान रोया, सूय बादलों की ओट छिप गया, हवा बेतहाशा भागने लगी, जनता की आँखों से गंगा-जमुना बहने लगी ।

कल इसी महान आत्मा के पार्थिव शरीर को शान्ति घाट ले जाया जाएगा - अन्तिम संस्कार के लिए। इस भवन में वह पूरे १७ वर्ष रहा और इसी भवन से उसने देश की बागडोर संभाली, सारे संसार को शान्ति का मार्ग दिखाया । कल जब उसके पार्थिव शरीर को इस भवन से हमेशा-हमेशा के लिए ले जाया जाएगा, तब क्या यह भवन रो नहीं उठेगा, धरती डगमगा नहीं जाएगी...?

२

राजगृह से कारागृह तक

गंगा, जमुना और अन्तः सलिला सरस्वती के संगम पर एक खूबसूरत शहर है - प्रयाग। इसी को इलाहाबाद भी कहते हैं। वहाँ सुप्रसिद्ध वकील पण्डित मोतीलाल नेहरू रहते थे, जिनके ऐश्वर्य को देखकर बडे-बडे राजा-महाराजा भी दंग रह जाते थे। उन्हीं के घर १४ नवम्बर १८८९ को जवाहरलाल जी ने जन्म लिया।

इकलौता लडका, सब की आँखों का राजदुलारा। घर पर ही अँग्रेज अध्यापक पढ़ाने आता और रात को सोने से पहले माँ या मौसी धर्म-पुराण की कहानियाँ सुनातीं। जब वे ११ वर्ष के हुए तब एक बहन पैदा हुई।

पिता अच्छी से अच्छी शिक्षा देना चाहते थे। इसलिए वे पूरा परिवार लेकर इंग्लैण्ड गए, बालक जवाहरलाल को स्कूल में भरती करने। वहाँ हैरो स्कूल में भरती कराकर पिता सपरिवार लौट श्राये। बालक नेहरू वहाँ अकेले रह गए, अजनबियों के बीच, घर से हजारों मील दूर - १५ साल की कच्ची उम्र में।

फिर उन्होंने कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कालेज से बी० ए० की डिग्री ली और १९१२ में इनर टैम्पल से बैरिस्टरी की। इसी बीच जर्मनी, फ्रांस, आयरलैण्ड, नारवे आदि अनेक यूरोपीय देशों की यात्रा की।

सन् १९१२ में भारत लौटे तो यहाँ की हालत देखकर बहुत दुखी हुए। प्यारा देश, दासता की बेडियों में जकडा हुआ।

CHADDA

इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत शुरू की, लेकिन दिल भारत की दुर्दशा पर अटका रहा।

लोकमान्य तिलक जेल में थे, गरम दल वाले कुचल दिए गए थे, चारों ओर अंग्रेजों का आतंक जमा हुआ था। इसी बीच बांकीपुर में कांग्रेस-अधिवेशन हुआ। युवक जवाहर उसके प्रतिनिधि की हैसियत से गए। उस समय कांग्रेस बडे आदमियों की संस्था मात्र थी। जवाहरलाल जी को संतोष नहीं हुआ। उनके मन में तो देश प्रेम का जोश हिलोरें ले रहा था। वे तो भारत को उतना ही स्वतंत्र और समृद्ध देखना चाहते थे, जितना इंग्लैण्ड था। देश का दुख उन्हें सता रहा था, जनता उन्हें बुला रही थी, "आओ, आओ देश के जवाहर, हमारा उद्धार करो। हमें रास्ता दिखाओ।"

तब पहली बार वे जनता के बीच गए, उनसे बोले। अंग्रेज सरकार ने १९१५ में प्रेस कानून बनाकर समाचारपत्रों पर कुछ पाबन्दियां लगाईं। युवक जवाहरलाल से सहा न गया। कानून के विरोध में आम सभा हुई। युवक जवाहरलाल बोले, पहली बार, जनता के बीच में। इतना अच्छा बोले कि भाषण के बाद सर तेज बहादुर सप्रू ने उन्हें उठाकर चूम लिया।

यह उनका पहला भाषण था और यहीं उन्हें पहला पुरस्कार मिला, प्रेम का।

१९१६ में लखनऊ में कांग्रेस-अधिवेशन हुआ। कर्मवीर गांधी आये थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों के लिए जो कार्य किए थे, उनसे भारत के नवयुवक उनकी ओर आषित हो चुके थे। युवकों के मन में उनके प्रति बहुत श्रद्धा पैदा हो गई थी।

यहीं लखनऊ-अधिवेशन में जवाहरलाल जी ने पहले-पहल

देखा गांधी को; उस महामानव को, जिसने भारत की गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का संकल्प लिया था।

पहला विश्वयुद्ध १९१४ में शुरू हो चुका था। भारत इस युद्ध में नहीं था, लेकिन गुलाम देश होने के कारण उसे जबरदस्ती अंग्रेजों का साथ देना पड़ रहा था। भारतवासियों को जबरदस्ती युद्ध-कोष में चन्दा देना पड़ता था। करोड़ों रुपए भारत की गरीब जनता ने दिए।

पंजाब आदि इलाकों में जबरन भरती खुल गई थी। युद्ध के लिए कुल ९।। लाख युवक भरती किए गए, जिनमें से ३० हजार मारे गए, ६० हजार घायल हुए, ७।। हजार बन्दी बनाए गए और ५ हजार लापता माने गए।

युद्ध की यह विभीषिका किसी भी संवेदनशील व्यक्ति का दिल दहला देने के लिए काफी थी।

गुलाम देश कितना परबस होता है, इसका पहला अनुभव युवक जवाहर को इस विश्वयुद्ध से हुआ।

फिर जलियानवाला बाग का पैशाचिक हत्याकाण्ड। कर्मवीर गांधी के आह्वान पर देश भर में ६ अप्रैल १९१९ को सत्याग्रह दिवस मनाया गया था। सारे देश में हड़ताल रही, तमाम काम-काज बन्द रहे। जनता को गांधी जी एक नई ज्योति दिखा रहे थे। अंग्रेज घबरा उठे। उनके आदेश से दिल्ली, अमृतसर और अहमदाबाद में पुलिस और सेना ने गोलियां चलाईं। पंजाब में 'मार्शल ला' लागू कर दिया गया।

तब १३ अप्रैल १९१९ को जलियानवाला बाग में विराट सभा हुई। लगभग २० हजार स्त्री-पुरुष और बच्चे थे। लाला हंसराज भाषण दे रहे थे।

तभी जनरल डायर अपने सैनिक लेकर आ पहुंचा। उसने

बाग के दरवाजे पर सैनिक बिठा दिए और फिर बिना सूचना दिए उपस्थित जनता पर गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। सैकडों मारे गए, हजारों घायल हुए।

काफी दिनों बाद पंजाब से 'मार्शल ला' हटा। तब कांग्रेस ने जांच कमेटी भेजी, जिसमें थे- महात्मा गांधी, पं० मोतीलाल नेहरू, देशबन्धु दास, अब्बास तैयब जी, फजलुल हक और श्री सन्तानम्। युवक जवाहर भी श्री देशबन्धु दास के सहायक के रूप में गए।

युवक जवाहर ने वहां वह बाग देखा, जहाँ हत्याकाण्ड हुआ था; वे गलियां देखीं जहाँ लोगों को पेट के बल रेंगाया गया था। और तब उन्हें पहली बार महसूस हुआ कि अंग्रेज किस हद तक नृशंस अत्याचार कर सकते हैं।

फिर एक घटना और घटी। युवक जवाहर का विवाह १९१९ में हो चुका था। १९२० में उनकी पत्नी श्रीमती कमला नेहरू और माता स्वरूप रानी दोनों बीमार पडीं। वे दोनों को मई के महीने मसूरी ले गए और सेवाय होटल में ठहरे।

एक दिन अचानक शाम को पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट उनके पास पहुँचा। उसने मैजिस्ट्रेट का पत्र दिया। पत्र में लिखा था कि जवाहरलाल वायदा करें कि वे अफगान प्रतिनिधि मण्डल से कोई सरोकार नहीं रखेंगे।

अजीब बात थी। उसी होटल में अफगानिस्तान के प्रतिनिधि भी टिके थे, लेकिन उनसे जवाहरलाल जी कभी मिले तक न थे, बातें करना तो दूर रहा। फिर यह वायदा क्यों ? जवाहर- लाल जी भड्क उठे। वायदा करना उनकी शान के खिलाफ था। उन्होंने साफ इन्कार कर दिया।

तब हुक्म हुआ कि वे २४ घण्टे के अन्दर मसूरी छोड दें। माँ और पत्नी बीमार। कौन देखेगा इन्हें ? लेकिन सरकार

की यह ज्यादती - इसे कौन सहेगा ? जवाहरलाल ने मसूरी छोड दिया, लेकिन सिर नहीं झुकाया।

और तब युवक जवाहर को पहली बार अंग्रेजी शासन की ज्यादतियों का अनुभव हुआ।

मसूरी से नेहरू जी का निर्वासन किसानों के लिए सौभाग्य लाया । वे किसान-आन्दोलन में भाग लेने लगे। तब नंगे-भूखे, दलित, पीडित भारत का एक नया चित्र पहली बार उनकी आंखों के सामने दिखाई दिया।

नेहरू जी ने स्वयं लिखा है कि - "मैंने उनके दुःख की सैकडों कहानियाँ सुनीं। कैसे लगान का बोझ दिन-दिन बढ़ता जा रहा है, जिसके तले वे कुचले जा रहे हैं। किस तरह खिलाफ कानून लागें लगाई जाती हैं और जोरो-जुल्म से वसूली की जाती है। जमीन और कच्चे झोपडों से किस तरह उनको बेदखल किया जाता है, कैसे उन पर मार पडती है, कैसे वे चारों तरफ जमींदारों के एजेण्टों, साहूकारों और पुलिस के गिद्धों से घिरे रहते हैं। किस तरह वे कडी धूप में मशक्कत करते हैं और अन्त में यह देखते हैं कि उनकी सारी पैदावार उनकी नहीं है- दूसरे ही उठा ले जाते हैं और उसका बदला उन्हें मिलता है ठोकरों, गालियों और भूखे पेट से।"

और इस प्रकार युवक नेहरू ने पहली बार एक नया भारत देखा-किसानों का भारत; नंगे-भूखे, दलित, पीडित और अत्याचारों से दबे गरीब किसानों का भारत।

१९२० साल के सितम्बर मास में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ। गांधी-युग आरम्भ हो चुका था। विलायती कपडे चले गए थे। चारों ओर खादी ही खादी दिखाई देती थी।

असहयोग आन्दोलन शुरू हो चुका था। गांधी जी ने असहयोग का कार्यक्रम बताया- "हिन्दू-मुसलमान दोनों कौमें एक साथ कंधे से कंधा भिङाकर आन्दोलन को सफल करें । देश का एक भी बच्चा सरकार को शासन चलाने में मदद न दे। सरकारी नौकर नौकरी छोङ दें। वकील अंग्रेज पक्षपातपूर्ण अदालतों में वकालत करना छोङ दें। विद्यार्थी गुलामी सिखाने वाले स्कूल छोङ दें । प्रत्येक विदेशी वस्तु से बहिष्कार करें। विदेशी वस्त्र छोङ दें और खादी अपनायें । गांव के लोग अपने झगङों को पंचायतों में निपटायें ।"

तब पहली बार नेहरू जी को लगा कि अब उनका रास्ता निश्चित हो चुका है, उन्हें किस ओर बढ़ना है और क्या करना है।

गांधी जी के इस आदेश पर देश का युवक-दल मातृभूमि को स्वतंत्र करने के लिए सिर पर कफन बांधे असहयोग आन्दोलन में कूद पङा और उनमें सबसे आगे थे- जवाहरलाल नेहरू ।

१९२१ में इंग्लैण्ड के युवराज भारत आने वाले थे । कांग्रेस उनका बहिष्कार करने का निर्णय कर चुकी थी। सबसे पहले बम्बई में युवराज विरोधी नारे लगे। अंग्रेजों ने जलूस पर गोलियां बरसा दीं, जिससे ५३ सत्याग्रही मारे गए और ४०० घायल हुए।

तब तो सत्याग्रह की यह आग पूरे देश में फैल गई । युवक जवाहरलाल अब तक काफी सक्रिय कार्यकर्ता हो चुके थे। वे उत्तर प्रदेश की कांग्रेस कमेटी के मंत्री भी थे । इसलिए वे कभी एक शहर में जाते और कभी दूसरे शहर - संगठन कार्य करने । लखनऊ में उन्होंने भी युवराज के स्वागत का बहिष्कार करने के लिए पर्चे बांटे और इलाहाबाद लौट आये ।

इलाहाबाद में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का कार्यालय

हीवेट रोड पर था। वहीं जवाहरलाल अपने काम में व्यस्त थे। तभी एक क्लर्क भागता हुआ उनके पास पहुँचा। उन्होंने प्रश्न- सूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"पुलिस तलाशी का वारण्ट लेकर आई है। उसने कार्यालय की इमारत को घेर लिया है," क्लर्क ने हांफते हुए कहा। जवाहरलाल जी थोड़े से उत्तेजित हुए, लेकिन तुरन्त ही

शान्त होकर बोले, "देखो, जब पुलिस अफसर दफ्तर के कमरों की तलाशी ले तो तुम उसके साथ-साथ रहो। बाकी कर्मचारी हमेशा की तरह अपना-अपना काम करते रहें। पुलिस की तरफ ध्यान देने की जरूरत नहीं है।"

सब काम पूर्ववत चलने लगा। जवाहरलाल जी अपने काम पर लग गए। इस बीच उनका एक कार्यकर्ता और मित्र गिरफ्तार कर लिया गया। वह उनसे विदाई लेने पहुँचा।

जवाहरलाल जी चिट्ठी लिख रहे थे, उन्होंने बिना सिर उठाए कहा, "मैं जब तक चिट्ठी पूरी न कर लूं तब तक ठहरिए।" चिट्ठी समाप्त हुई, तब उन्होंने उसे विदाई दी। फिर सोचा कि, 'देखें घर पर क्या हो रहा है। कहीं वहां भी तो पुलिस नहीं पहुँच गई है।'

काफी शाम हो चुकी थी। वे अपने घर 'आनन्द भवन' की ओर चल पड़े।

घर पर उन्होंने देखा कि वहां भी पुलिस तलाशी ले रही है। पिता मोतीलाल और उनके लिए गिरफ्तारी का वारण्ट है।

पिता-पुत्र की गिरफ्तारी की खबर फैलते ही पूरा इलाहाबाद शहर आनन्द भवन की ओर उमड़ पड़ा। चारों ओर "पण्डित मोतीलाल नेहरू की जय," "पण्डित जवाहरलाल नेहरू की जय" के नारे गूंज उठे।

जवाहरलाल जी ने उत्तेजित भीड़ को संदेश दिया, "हम खुश हैं कि हम देश के लिए जेल जा रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास

है कि इससे हमारे कार्य का फायदा होगा और हमारी विजय नजदीक आएगी। याद रखिए १२ तारीख को हड़ताल है। हरेक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह स्वयंसेवक बने और सबसे बड़ी बात यह है कि आप लोग शान्त रहें। श्राप लोगों के हाथ में इलाहाबाद की इज्ज़त है।"

जनता जय-जयकार करती रही और पिता-पुत्र दोनों जेल चले गए।

फिर जवाहरलाल जी को लखनऊ जेल भेज दिया गया। वहां अदालत में मुकदमे का नाटक रचा गया। उन पर लखनऊ में युवराज विरोधी पर्चे बांटने का अभियोग लगाया गया।

मैजिस्ट्रेट ने पूछा, "क्या आप केन्द्रीय स्वयंसेवक मण्डल के सदस्य हैं, जो २४ या २५ नवम्बर १९२१ को संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) में स्वयंसेवक दल का संगठन करने के लिए नियुक्त किया गया था ?"

नेहरू जी ने गरजते हुए उत्तर दिया, "मैं भारत में ब्रिटिश सरकार को स्वीकार नहीं करता और न इस अदालत को ही अदालत मानता हूँ। मैं इस अदालती कार्रवाई को फरजी समझता हूँ, जो बिल्कुल दिखावटी है। जो निर्णय पहले ही निश्चित हो चुका है, उसी को यह अदालत कार्यान्वित करती है।"

मैजिस्ट्रेट ने फिर पूछा, "क्या आप ३ दिसम्बर १९२१ को कांग्रेस समिति की बैठक में उपस्थित थे, जो लखनऊ में हुई थी ?" नेहरू जी ने बड़ी उपेक्षा से उत्तर दिया, "मैं इस प्रश्न का या किसी अन्य प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता।"

दो दिन बाद मैजिस्ट्रेट ने फैसला सुनाया, "मैं पण्डित जवाहरलाल नेहरू को दण्ड विधि संशोधन की धारा (१७१) के अन्तर्गत दोषी ठहराता हूँ और उन्हें ६ माह की सादी कैद तथा १०० रुपया जुर्माने की सजा देता हूँ। जुर्माने की अदायगी

न करने की हालत में कैद की अवधि एक महीने और बढ़ जाएगी।"

यह नेहरू जी की पहली जेल-यात्रा थी।

और इस प्रकार जनता का यह प्रेमी, अपनी जनता की मुक्ति के लिए, अपनी जनता को दासता की बेडियों से छुडाने के लिए अपने राजगृह से कारागृह पहुंच गया।

३

लाठियों का पुरस्कार

तीन महीने के बाद जवाहरलाल जी अचानक जेल से छोड दिए गए। वे फिर स्वतंत्रता-आन्दोलन में लग गए। अंग्रेज सरकार देख रही थी- स्वच्छ श्वेत खादी पहने यह लम्बा छरहरा खूबसूरत नौजवान जहाँ जाता है, जादूगर की तरह जनता को अपने वश में कर लेता है। उसके आवाहन पर भारत का बच्चा-बच्चा परवाने की तरह स्वतंत्रता की लौ पर अपनी आहुति देने को तैयार हो जाता है। इतने 'खतरनाक' व्यक्ति को बाहर स्वतंत्रतापूर्वक रहने देना सरकार के हक में अच्छा न होगा।

और तब से जवाहरलाल जी 'जेल के पंछी' हो गए। अंग्रेज सरकार किसी न किसी बहाने उन्हें जेल में डाल देती। जब वे जेल से छूट कर आते तो कुछ अजीब दीवानेपन से स्वतंत्रता का

अलख जगाते हुए देश में घूमते । जो जवाहर कभी सौंदर्य और ऐश्वर्य में राजकुमार से भी बढ़कर थे, वही स्वतंत्रता के दीवाने बनकर गांव-गांव भटकने लगे। उनका चौड़ा ललाट, स्नेहिल आँखें, सतेज मुख और मधुर वाणी लोगों को बरबस अपनी ओर खींचतीं, वे जन-जन के हृदय के सम्राट बन गए ऐसे सम्राट जिसके सिर पर कांटों का ताज था।

भारत जाग चुका था, जवाहर की वाणी घर-घर पहुँच रही थी, गांधी जी को लोग महात्मा मानने लगे थे। तब अंग्रेज सरकार ने एक नाटक रचा। उसने घोषणा की कि भारत के शासन में सुधार करने के लिए एक कमीशन बनाया जाएगा और उस कमीशन के अध्यक्ष होंगे- सर जान साइमन । कांग्रेस जानती थी कि यह केवल एक नाटक मात्र है, अंग्रेज सरकार जनता की आंखों में धूल झोंकना चाहती है। तब उसने 'साइमन कमीशन' का विरोध करने का निर्णय किया।

फिर जिस दिन (३ फरवरी १९२८) 'साइमन कमीशन' के सदस्यों ने विलायत से आकर भारत की भूमि पर पैर रखा, उसी दिन पूरे भारत में हड़ताल हो गई। जगह-जगह जनता काले झण्डे लेकर 'साइमन गो बैंक' (साइमन वापस लौट जाओ) के नारे लगाने लगी। साइमन को बम्बई बन्दरगाह से चोरों की तरह छिपाकर होटल तक पहुँचाया गया।

कुछ समय बाद यह कमीशन लाहौर पहुँचा। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय के नेतृत्व में हजारों की भीड़ काले झण्डे लेकर 'साइमन गो बैक' के नारे लगाती हुई पहुँच गई। अंग्रेजों के होश उड़ गए। उन्होंने बिना आगा पीछा सोचे पुलिस को डण्डे बरसाने का हुक्म दे दिया।

लाला जी पर तक-तक कर डण्डे मारे गए।

पंजाब केसरी का इतना बड़ा अपमान ! पूरे पंजाब का खून खौल उठा।

लाला जी बच न सके। चिकित्सकों के बहुत प्रयत्न करने पर भी १७ नवम्बर १९२८ को वे चल बसे। अपने अन्तिम समय दिल से उठती आह को दबाकर उन्होंने कहा था- "मेरे शरीर पर पडी हुई एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील साबित होगी।"

यही साइमन कमीशन ३० नवम्बर को लखनऊ पहुँचने
वाला था। उसके 'स्वागत' के लिए जोर-शोर से तैयारी होने
लगी। आजादी के दीवाने जवाहर भी वहां पहुँच गए।

पुलिस घबरा गई। उसने आदेश दिया कि जलूस निकालने से सडकों पर आना-जाना रुक जाता है, इसलिए जलूस न निकाले जाएं।

तब नेहरू जी ने निर्णय किया कि १६-१६ व्यक्तियों की टोलियां बनाकर जलूस निकाला जाए।

साइमन के आने से एक दिन पहले २९ नवम्बर को हजरतगंज से जलूस निकला। सबसे आगे की टोली में नेहरू जी थे, पीछे की टोली में गोविन्द वल्लभ पन्त।

पहली टोली अभी दो सौ गज ही चली होगी कि पुलिस के तीन दर्जन घुडसवार घोडे दौडाते हुए आ गए। टोली के स्वयं- सेवक तितर-बितर हो गए। कोई सडक के किनारे की ओर भागा, तो कोई दुकान के अन्दर। घुडसवार उनका पीछा करते रहे और जहां जो मिला वहीं उसे डण्डे मारते रहे।

लेकिन अकेले नेहरू ही ऐसे थे, जो सडक के बीचों बीच अचल खडे रहे। एक सवार उनकी श्रोर डण्डा घुमाता हुआ बढ़ा। वे फिर भी खडे रहे।

सवार और निकट पहुँचा। नेहरू जी का दिल क्रोध और अपमान से जल उठा। उन्होंने कहा, "लगायो।"

सवार ने धमाधम डण्डे मारने शुरू कर दिए। सिर चक्कर

खा गया, लेकिन फिर भी वे अडिग खडे रहे।

तब तक पं० गोविन्द वल्लभ पन्त की टोली भी आ गई। सवार उन पर भी पिल पडे।

अब सभी सत्याग्रही वहीं बैठ गए। किसी का सिर फट गया था, किसी के खून निकल रहा था, कोई बेहोश था और किसी का हाथ-पैर टूट गया था। फिर भी आजादी के वे दीवाने वहीं बैठे रहे।

लखनऊ भर में खबर फैल गई कि नेहरू जी पर लाठी-प्रहार हुआ है। देखते-देखते हजारों की भीड जमा हो गई। अजीब दृश्य था वह। एक ओर पुलिस घुडसवार, बीच सडक पर सत्याग्रही और दूसरी ओर हजारों की भीड।

कहीं बगावत न हो जाए - पुलिस को डर लगा। उसने रास्ता छोड दिया और तब सत्याग्रहियों का जलूस आगे बढ़ गया।

पिता मोतीलाल जी उस दिन इलाहाबाद थे। खबर पाते ही रात को ही अपने हाथों मोटर चलाकर लखनऊ के लिए रवाना हो गए। इकलौता बेटा, भारत की भावी आशा - न जाने जालिमों ने कितना मारा होगा!

सुबह ९ बजे जब वे लखनऊ पहुंचे तो बेटा जवाहरलाल जलूस लेकर स्टेशन जाने की तैयारी कर रहा था। आज ही तो 'साइमन कमीशन' को आना था।

कल जो लाठी प्रहार हुआ था, उससे सारा लखनऊ भडक उठा था। स्टेशन पर हजारों की भीड जमा हो गई थी। सब के हाथ में काले झण्डे थे और बार-बार नारा लग रहा था- 'साइमन गो बैंक'। स्टेशन के सामने का सारा मैदान भरा पडा था। इनमें बहुत से सत्याग्रही थे और बहुत से केवल दर्शक। स्टेशन पर गाडी आने वाली थी।

इसी समय पुलिस और सेना के दर्जनों घुड़सवारों ने घोड़ा दौड़ाते हुए पूरे मैदान को घेर लिया और फिर भीड़ के अन्दर अपने घोड़े दौड़ाने लगे।

यह भी अजीब दृश्य था। हजारों की भीड़ और उन पर घुड़सवार घोड़े दौड़ाते हुए। जाने कितने मारे गए, कितने कुचल गए।

जनता में भगदड़ मच गई। लेकिन सत्याग्रही अचल खड़े रहे। घुड़सवारों ने उन्हें घेर लिया। धड़ाधड़ लाठियां पड़ने लगीं। सत्याग्रही फिर भी अचल खड़े रहे। बड़ी भयंकर मार थी और उससे भी भयंकर निश्चय था इन सत्याग्रहियों का। नेहरू जी पर वह मार पड़ी कि पीठ की खाल उधड़ गई, परन्तु मजाल है कि वे टस से मस हुए हों। पन्त जी की गर्दन टूट गई, लेकिन वे भी अचल खड़े रहे।

नेहरू जी बेहोश होने लगे, तो स्वयंसेवकों ने उन्हें उठा लिया और एक ओर ले गए।

इसी बीच, जिस साइमन के लिए यह सत्याग्रह हुआ था, उसे स्टेशन से आधा मील दूर ही चोरों की तरह उतारकर उसके टिकने की जगह पहुँचा दिया गया। लेकिन जाते-जाते उसने देख ही लिया कि लखनऊ में उसका कैसा 'स्वागत' हुआ है।

नेहरू जी घर लाए गए। पिता मोतीलाल ने अपने लाड़ले बेटे की पीठ की उधड़ी खाल देखी तो रो पड़े।

दुनिया के इतिहास में सम्भवतः कभी भी किसी राष्ट्रीय नेता को पुलिस ने इतना नहीं मारा होगा, जितना भारत के इस सपूत जवाहरलाल को।

उस समय उन घुड़सवारों में कौन जानता था कि यह व्यक्ति जो इस तरह डण्डों की बौछार के नीचे भी शान्त खड़ा है, कभी

शान्ति-दूत बनकर सारे विश्व में शान्ति की अलख जगाएगा। कौन जानता था कि जब हिंसा का दैत्य मानव जाति को निगलने के लिए अपना भयावना मुँह फैलाएगा; जब घायल, पीड़ित, दुखी और अपमानित मानव भृठे अहंकार पर जीने वाले शोषकों के पैरों के तले कराहेगा; जब समस्त संसार में युद्ध के भय से अंधकार छा जाएगा, तब यही डण्डों की मार खाने वाला जवाहर आशा की किरणें लेकर मानव जाति के क्षितिज पर सूर्य की तरह जगमगाएगा और समस्त पीड़ित तथा घायल मानवों का त्राता बनकर विश्व भर में शान्ति की जोत जलाएगा।

उन बेचारे वेतनभोगी घुड़सवारों को क्या मालूम था; लेकिन अन्तरात्मा की आवाज सुनने वाले, मनुष्य के दिल की गहराइयों तक पैठकर उसका भेद जानने वाले महात्मा गांधी ने भारत के इस जवाहर को पहचान लिया था।

इसीलिए १९२९ में गांधी जी ने कांग्रेस के राष्ट्रपति पद के लिए जवाहरलाल जी का नाम रखा। इतनी कम आयु का कोई भी व्यक्ति पहले इतने महत्वपूर्ण पद पर आसीन नहीं हुआ था। कुछ लोगों को गांधी जी के प्रस्ताव पर आश्चर्य हुआ।

लेकिन गांधी जी ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया - "बहादुरी में कोई उनसे (जवाहरलाल जी से) बढ़ नहीं सकता और देश- प्रेम में उनके आगे कौन जा सकता है? कुछ लोग कहते हैं कि वह जल्दबाज और अधीर हैं। यह तो इस समय एक गुण है। फिर जहां उनमें एक वीर योद्धा की तेजी और अधीरता है, वहां एक राजनीतिज्ञ का विवेक भी है।"

कितना सही-सही पहचाना था बापू ने। यही नहीं, बापू ने तो यह भी घोषणा कर दी थी कि - "वह (जवाहरलाल जी) स्फटिक मणि की भांति पवित्र हैं। उनकी सत्यशीलता संदेह से परे है। वह अहिंसक और अनिन्दनीय योद्धा हैं। राष्ट्र उनके हाथ में सुरक्षित है।"

अतः १९२९ में जवाहरलाल जी कांग्रेस के सभापति चुन लिए गए।

ठीक एक साल पहले दिसम्बर १९२८ में इसी कांग्रेस के सभापति पण्डित मोतीलाल नेहरू थे और कलकत्ता अधिवेशन में १६ घोडों की गाडी में पण्डित जी का शानदार जलूस निकाला गया था। अब एक साल बाद २४ दिसम्बर १९२९ को उनके ही पुत्र श्री जवाहरलाल नेहरू इस कांग्रेस के सभापति बने और लाहौर में रावी नदी के तट पर उनका शानदार जलूस निकाला गया। पुत्र सफेद दूधिया रंग के घोडे पर सवार था। दोनों ओर स्वयं- सेवक और उनके पीछे हाथियों के भूल । लाखों की संख्या में नर-नारी 'महात्मा गांधी की जय,' 'जवाहरलाल की जय,' के नारे लगा रहे थे। माता स्वरूपरानी और पिता मोतीलाल जी एक ओर खडे पुत्र के इस राष्ट्रीय सम्मान को प्रेम से भीगे सजल नयनों से देख रहे थे। सडक पर, खिडकियों में, छतों पर, छज्जों पर नरमुण्ड ही नरमुण्ड दिखाई दे रहे थे। नारों से सारा आकाश गूंज रहा था।

पुत्र और निकट पहुंचा तो हर्षातिरेक से माता स्वरूपरानी के गालों पर मोती की लडियां बिखर गईं। उन्होंने दोनों हाथों से अंजुली भरकर रुपयों की बौछार कर दी। पिता मोतीलाल ने फूल बरसा दिए।

कितने सौभाग्यशाली थे वे पिता और माता, जो अपने पुत्र को देश के भाग्यविधाता के रूप में देख रहे थे, और कितनी सौभाग्यशाली थी वह जनता, जिसने अपनी आंखों से वह अनुपम मनोहारी दृश्य देखा था।

पिता मोतीलाल जी ने सगर्व कहा था- "जो काम पिता पूर्ण न कर सका, उसे पुत्र पूरा करेगा।"

फिर सभा-भवन में पुत्र को अध्यक्ष पद सौंपते हुए पिता ने करतल ध्वनि की गूंज के बीच ममतामयी मीठी मुस्कान के साथ

कहा - "मैं नए अध्यक्ष महोदय को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अत्यन्त नियमशील रूप से उनके आदेशों का पालन करूंगा।"

धन्य है वह पिता, जो इतना भाग्यवान था और साथ ही इतना अनुशासनबद्ध भी।

२९ दिसम्बर को महा-अधिवेशन में जन-सागर उमड पडा। व्यक्तियों की संख्या ३ लाख से कम न थी। जवाहरलाल जी ने राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराया तो गगनभेदी नारे गूंजने लगे - "जवाहरलाल की जय", "महात्मा गांधी की जय", "बन्दे मातरम"।

जवाहरलाल मंच पर पहुंचे तो सर्वत्र सन्नाटा। उन्होंने अपने ओजपूर्ण स्वर में कहा- "मैंने अभी-अभी भारत का राष्ट्रीय झण्डा फहराया है। यह भारत की स्वतंत्रता का चिह्न है और भारत की एकता की निशानी है, याद रखिए, जब एक बार यह झण्डा फहराया जा चुका है, तो यह तब तक न गिरने पाए, जब तक देश का एक भी मनुष्य जीवित है।"

फिर ३१ दिसम्बर १९२९ को रात के १२ बज कर १ मिनट पर कांग्रेस अधिवेशन में "पूर्ण स्वराज" का प्रस्ताव पास हो गया।

पूरा पण्डाल गगनभेदी जय-जयकारों और करतल ध्वनि से गूंज उठा।

युवक पुत्र सभापति के पद पर गम्भीर 'वृद्ध' की तरह बैठा सब देखता रहा और वृद्ध पिता अपने पुत्र की विजय पर 'युवक' की तरह पण्डाल में ही नाच उठा।

और इस प्रकार कांग्रेस सभापति का पद ग्रहण करते ही भारत के जवाहर ने देश भर में एक नई क्रान्ति का सूत्रपात कर दिया। जिस काम को पिता ने शुरू किया था, उसे पुत्र आगे बढ़ाने लगा।

४

जेल का पंछी : वियोग के आघात

१७ अक्तूबर १९३० । मसूरी बीमार । में मोतीलाल जी काफी समय से

जवाहरलाल जी का तूफानी जीवन । एक दिन की भी फुरसत नहीं । अभी ११ अक्तूबर को जेल से छूटे थे। फिर पिता को देखने तुरन्त मसूरी रवाना हो गए। साथ में धर्मपत्नी कमला। तीन दिन पिता के पास रहकर फिर इलाहाबाद रवाना, क्योंकि १९ अक्तूबर को इलाहाबाद में किसान सम्मेलन में जाना था ।

देहरादून में श्री महावीर त्यागी ने सुना कि जवाहरलाल जी मसूरी से लौट रहे हैं तो उन्होंने एक जलसा रख दिया । जलसा रखना था कि कलक्टर ने दफा १४४ लगा दी। अब त्यागी जी घबराये । जवाहरलाल जी अभी जेल से बाहर आये थे, बहुत से काम बाकी थे, इलाहाबाद में किसान सम्मेलन में जाना आवश्यक था । अब क्या किया जाए? जवाहरलाल जी तो अब तक मसूरी से चल भी चुके होंगे ।

त्यागी जी ने तुरन्त साइकिल उठाई और मसूरी जाने वाली सड़क पर अंधाधुन्ध भागे। काफी दूर उन्हें मोटर आती दिखाई दी। त्यागी जी ने उसे रोका ।

"देहरादून में दफा १४४ का नोटिस जारी हो गया है," त्यागी जी ने हांफते हांफते बताया।

"तुमने गजब कर दिया। मेरा सारा प्रोग्राम खराब हो गया, जवाहरलाल जी ने माथे पर हाथ मारकर कहा और फिर कमला जी

की ओर मुड़कर बोले, "बस कमला, तुम पापा की देखभाल करना, मैं तो चला। आई एम डन।"

त्यागी जी कसूरवार की तरह खड़े थे, बोले "एक तरकीब हो सकती है।"

"अब क्या खाक तरकीब हो सकती है," जवाहरलाल ने झुंझलाकर कहा, "आपकी हिमाकत का नतीजा है यह।"

लेकिन त्यागी जी ने सचमुच अच्छी तरकीब बता दी। बात यह थी कि जवाहरलाल जी के लिए एक सज्जन के यहाँ चाय का प्रबन्ध था। वहाँ से चाय पीने के बाद ही उन्हें जलसे में जाना था। त्यागी जी ने सुझाया कि पहले ही जलसे में चला जाए और दो शब्द कहकर जलसा खत्म करके देहरादून से चल दिया जाए।

जवाहरलाल जी को बात जंच गई, "यह ठीक है, जल्दी मोटर में बैठो।"

तीनों जलसे में पहुँचे। हजारों की भीड़। प्यारे जवाहरलाल को कौन नहीं देखना चाहता, उसकी श्रोजमयी मधुर वाणी कौन नहीं सुनना चाहता। और जवाहरलाल ? जनता का प्रेमी, बोलना शुरू किया तो बोलते चले गए। यहाँ तक कि पुलिस भी पहुँच गई। त्यागी जी ने जवाहरलाल जी का अनेक बार कुरता झटका, पर जनता का यह प्रेमी, स्वतंत्रता का यह दीवाना, बोलता रहा।

बड़ी मुश्किल से भाषण बन्द कराया, तो दफा १४४ का नोटिस उनके सामने कर दिया गया। जवाहरलाल जी ने नोटिस के पीछे लिख दिया- "भाषण के बाद मिला। मुझे अफसोस है कि मैं इसे भंग करने से वंचित रह गया।" और फिर कमला जी के साथ सीधे इलाहाबाद रवाना हो गए।

उनके जाने के बाद त्यागी जी ने मोतीलाल जी को फोन पर सब बातें बताई तो, तुरन्त पूछ बैठे, "स्टेशन पर कितनी

भीड़ थी ? और भीड़ में कमला को धक्का-उक्का तो नहीं लगा ?"

धन्य है वह पुत्र और पुत्रवधू जिन्हें बाप का इतना प्यार मिला और धन्य है वह पिता जो इतना प्यार बरसा सकता है। यही नहीं बल्कि मोतीलाल जी बीमार होते हुए भी दूसरे दिन इलाहाबाद के लिए रवाना हो गए।

लखनऊ में फिर एक और जलसा। दफा १४४ लागू और जवाहरलाल जी का सार्वजनिक भाषण। वहां भी अथाह भीड़ के कारण पुलिस उन्हें न पकड़ सकी।

१८ अक्तूबर की रात जवाहरलाल जी इलाहाबाद पहुँचे और १९ की रात मोतीलाल जी पहुँचने वाले थे। सुबह ही दफा १४४ का नोटिस जारी कर दिया गया था। लेकिन किसान सम्मेलन में जाना जरूरी था।

सम्मेलन में शाम हो गई। वहां से कमला जी के साथ सीधे स्टेशन पहुंचे, पिता को लेने।

गाड़ी लेट थी और उधर फिर एक और सभा में जाना था। बहुत प्रतीक्षा के बाद गाड़ी पहुंची। पिता जी उतरे, माता जी उतरीं, नन्ही पुत्री इन्दिरा और अन्य लोग उतरे।

जवाहरलाल जी उनसे मिले और फिर उन्हें वहीं छोड़कर कमला जी के साथ चल दिए, एक और सभा में।

रात के ८ बज गए। सभा समाप्त हुई। थकी मांदी कमला जी को लेकर जवाहरलाल जी कार में बैठे और कार चल दी सीधे आनन्द भवन की ओर।

शाम को पिता जी सपरिवार मसूरी से आये थे। दो बातें भी न हो पाई थीं। बहुत-सी बातें करनी हैं, पिताजी के साथ। पुत्री इन्दिरा और तीन नन्ही-मुन्नी भान्जियों के साथ अभी खेलना है, हंसना है, हंसाना है। पिताजी भी तो उतावले होंगे। मिलने के लिए। ड्राइवर कार तेज क्यों नहीं चलाता।

हाँ, वह सामने आनन्द भवन दिखाई तो दे रहा है। बस दो मिनट की बात है। ड्राइवर पर झुंझलाने से क्या फायदा ! बस अभी दो मिनट हैं, यह क्या ?

कार झटके से रुक गई। सामने नायब कोतवाल वारण्ट लेकर खडा कह रहा है- "मैं आपको गिरफ्तार करने आया

जवाहरलाल जी नीचे उतर गए और कार अकेली कमला जो को लेकर आनन्द भवन की ओर चल दी।

और 'जेल का पंछी' केवल ८ दिन बाहर रहकर पांचवीं बार फिर जेल पहुँच गया।

कितना सदमा लगा होगा, बेचारी कमला को ! लेकिन नहीं, सदमा नहीं लगा कमला जी को। स्वतन्त्रता के वीर योद्धा की पत्नी, चाहे कितनी कमजोर हो, बीमार हो, वीरता में पीछे नहीं रह सकती। भारत की यही परम्परा है। पति जिस ध्येय को लेकर बढ़ रहे हैं और जेल गए हैं, उसे आगे बढ़ाना ही होगा, चाहे लाख तूफान आयें या लाख रुकावटें आयें। बढ़ना है, और आगे बढ़ना है- बस यही भारतीय नारी की परम्परा रही है।

जवाहरलाल जी जेल गए तो कमला जी ने असहयोग- आन्दोलन का नेतृत्व हाथ में ले लिया। जलूसों में राष्ट्रीय झण्डा लेकर आगे-आगे चलने लगीं, विदेशी वस्त्रों की होली जलाने लगीं, धरना देने लगीं। न खाने-पीने की परवाह और न अपनी बीमारी की परवाह। और तब जो होना था वही हुआ। १९३१ का पहला दिन शुरू ही हुआ था कि वे गिरफ्तार कर ली गई।

शान के साथ, राजकुमारी की तरह जब वे जेल की ओर बढ़ीं तो एक पत्रकार ने उनसे संदेश मांगा। उन्होंने मुस्कराते

हुए संदेश दिया - "आज मुझे असीम प्रसन्नता है और इस बात का गर्व है कि मैं अपने पति के पदचिह्नों पर चल सकी हूँ। मुझे आशा है कि आप लोग इस ऊंचे झण्डे को नीचे न झुकने देंगे।"

धन्य है यह भारतीय नारी ! जवाहरलाल जी ने जब सुना होगा तो गर्व से उनका सीना कितना फूल गया होगा, होंठों पर कितनी प्यारी मुस्कान और चेहरे पर आत्मसंतोष की कैसी झलक आ गई होगी !

वृद्ध पिता मोतीलाल ने सुना तो कलकत्ते से भागे-भागे इलाहाबाद पहुँचे । ७० वर्ष के वृद्ध अनेक बार जेल जाने और गुलामी के अनेक आघात सहने से वृद्ध सिंह की तरह जर्जरित हो गए थे। आते ही बीमार पड गए।

२६ जनवरी को जवाहरलाल जी छोड दिए गए और कमला जी भी । उसी दिन गांधी जी भी यरवदा जेल से छोडे गए । मोतीलाल जी का बहुत उपचार किया गया, ४ फरवरी को उन्हें एक्सरे कराने लखनऊ ले गए, लेकिन होनी टल न सकी। ६ फरवरी १९३१ को वे चल बसे ।

उन्हें तिरंगे कफन में लपेटकर इलाहाबाद लाया गया । लाखों की भीड, हरेक की आँखों में आँसू । महात्मा गांधी ने रोते-रोते कहा- "मोतीलाल जी के चले जाने से मैं एक विधवा की भांति पीडा अनुभव कर रहा हूँ।"

और जवाहरलाल जी ? क्या कहते वे । दुख जब चरम सीमा पर होता है तब वाणी मूक हो जाती है।

फिर ८ अप्रैल १९३२ का वह वह कलंकित दिन । जवाहर- लाल जी छठी बार जेल की सजा भुगत रहे थे। उनके परिवार के प्रमुख व्यक्ति - श्री रणजीत पण्डित, श्रीमती कृष्णा नेहरू-

सभी जेल पहुँच चुके थे। कमला जी बीमारी के कारण जेल न जा सकी थीं और बाहर छटपटा रही थीं। माता स्वरूपरानी कातर नयनों से अपने बच्चों को एक-एक करके जेल जाते देख चुकी थीं।

जब उनसे नहीं रहा गया तो वे भी राष्ट्रीय सप्ताह में भाग लेने लगीं। यह सप्ताह ६ से १३ अप्रैल १९३२ को मनाया जा रहा था। ८ अप्रैल को इलाहाबाद में शानदार जलूस निकला, जिसके आगे-आगे थीं- माता स्वरूप रानी।

और तभी पुलिस ने अपनी काली करतूत दिखाई। जलूस के लोगों को तङातङ लाठियों से मारना शुरू कर दिया।

पूरा जलूस रुक गया। वृद्धा माता थक गई थीं। कोई एक कुर्सी ले आया और जलूस में सबसे आगे रखकर उसने उस पर पर वृद्धा माता स्वरूपरानी को बिठा दिया।

पुलिस से यह नहीं देखा गया। उसने एक-एक करके सबको खदेङना शुरू कर दिया और अपने पापी हाथों से वृद्धा माता को कुर्सी से नीचे गिरा दिया तथा उन पर तङातङ डण्डे बरसा दिए।

वृद्धा माता का सिर फट गया। खून की धार बह निकली और वे बेहोश हो गईं।

पुत्र जवाहर ने बरेली जेल में यह खबर सुनी। क्या बीती होगी उन पर ? वृद्धा मां, और पुलिस के क्रूर डण्डे। यदि वे वहां होते और यह कलंकित दृश्य देखते, तो...? तो शायद पिछले १२ वर्षों से उन्होंने अहिंसा का जो पाठ पढ़ा था और इसी कारण स्वयं डण्डे खाते समय अन्त तक शान्त रहे, उसे वे भूल गए होते। कौन जाने ?

नेहरू जी जेल से छूट चुके थे। जनवरी १९३४ में वे कलकत्ता गए। वहां कांग्रेस अधिवेशन होने वाला था। पुलिस ने धरपकङ

शुरू कर दी। वातावरण क्षोभपूर्ण था। अनेक सभायें हुईं, जिनमें नेहरू जी ने साम्राज्यवाद की बुराइयां बताईं और वर्तमान सरकार के प्रति क्षोभ प्रकट किया।

इस बीच बिहार में भीषण भूकम्प आया था। नेहरू जी का मोम-सा हृदय पिघल गया। वे तुरन्त बिहार चल दिए।

बिहार के बाद ११ फरवरी को इलाहाबाद पहुँचे। उन्हें मालूम था कि वे अधिक समय तक बाहर नहीं रह सकते।

दूसरे दिन शाम को वे कमला जी के साथ बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे। उसी समय राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन भी पहुँचे। वे सब बरामदे में खड़े ही थे कि आनन्द भवन के फाटक के अन्दर पुलिस की गाड़ी आती दिखाई दी।

पुलिस अफसर गाड़ी से उतरा ही था कि नेहरू जी ने आग बढ़कर मुसकराते हुए कहा, "आइए, बहुत दिनों से आपका इन्तजार था।"

बेचारा अफसर खिसिया गया, कैंपते हुए बोला, "कसूर मेरा नहीं है, यह वारण्ट कलकत्ते से आया है।"

और इस तरह जेल का पंछी फिर आठवीं बार जेल जाने को तैयार हो गया।

कमला जी कपड़े लाने के लिए अन्दर चल दीं। नेहरू जी भी पीछे-पीछे गए। अन्दर पहुंचते ही कमला जी अचानक मुड़ीं और नेहरू जी की गर्दन में अपनी बांहें डालकर बेहोश हो गईं।

क्यों ? ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था। वीरांगना की तरह उन्होंने सदैव नेहरू जी को आँखों में आँसू और मुँह पर मुस्कान लाकर विदाई दी थी। फिर इस बार ऐसा क्यों हुआ ?

नेहरू जी देहरादून जेल भेज दिए गए। कमला जी सख्त बीमार पड़ गईं। ११ अगस्त १६३४ को नेहरू जी देहरादून से इलाहाबाद लाए गए और दूसरे दिन शाम को ११ दिन के लिए

रिहा कर दिए गए-बीमार पत्नी को देखने।

घर आकर देखा तो पत्नी हड्डियों का ढेर मात्र रह गई थी। आह ! विवाह हुए पूरे अठारह वर्ष हो गए थे, लेकिन क्या कभी दिल खोलकर मिल पाये ? पति सार्वजनिक कार्यों में फंसता चला गया और पत्नी बीमारी में। एक ओर जेल-यात्रा का दौर-दौरा और दूसरी ओर बीमारियों का।

ये अठारह वर्ष कैसे बीते ? नेहरू जी ने लिखा- 'वैवाहिक जीवन के अठारह बरस ! लेकिन इनमें से कितने साल मैंने जेल की कोठरियों में और कमला ने अस्पतालों तथा सैनिटोरियमों में बिताये ? और फिर इस समय भी मैं जेल की सजा भुगतता हुआ कुछ ही दिनों के लिए बाहर आ गया था और वह बीमार पडी हुई जीवन के लिए संघर्ष कर रही थी।'

ग्यारह दिन बाद नेहरू जी फिर जेल चले गए और उधर कमला जी की हालत खराब होती चली गई। नेहरू जी अपना समय काटने के लिए अपनी आत्मकथा लिखने लगे।

कमला जी को भुवाली पहुंचाया गया और फिर यूरोप। नेहरू जी ४ सितम्बर १९३५ को जेल से एकाएक छोड दिए गए। कमला जी की हालत अत्यन्त चिन्ताजनक हो गई थी। नेहरू जी हवाई जहाज से तुरन्त यूरोप रवाना हुए।

यूरोप से उन्होंने डा० महमूद को लिखा- 'मेरा अधिकांश समय सैनिटोरियम में कमला के साथ बीतता है और फिर मैं काफी रात तक अन्य काम करता हूँ। जेल में मैंने जो पुस्तक (मेरी कहानी) लिखी उसे दुहराने में मेरा बहुत समय लग जाता है। और फिर यूरोप तथा भारत के बहुत से दोस्त मुझे पत्र लिखते हैं, उन्हें उत्तर भेजना बहुत कठिन हो जाता है...।'

इस बीच नेहरू जी को सूचना मिली कि वे फिर कांग्रेस के सभापति चुने गए हैं। वे उस समय लोजान (स्विट्जरलैण्ड) में थे। कमला जी अच्छी हो रही हैं- ऐसा उन्हें लगा। अतः उन्होंने

२८ फरवरी १९३६ को वहां से लौटने का निश्चय किया।

लेकिन फिर यकायक कमला जी की हालत बहुत खराब हो गई और २८ फरवरी की सुबह वे इस असार संसार से चल दीं। वह सुन्दर शरीर और वह प्यारा-सा मुँह, जो बराबर मुस्कराता था और इतना प्यारा था, राख में बदल गया। तब हाथ में अपनी प्रिय पत्नी की अस्थियों की मंजूषा और सीने में टूटा दिल लेकर नेहरू जी स्विट्जरलैण्ड से रवाना हुए।

अपनी पुस्तक 'मेरी कहानी' को वे लन्दन में एक प्रकाशक को दे आये थे। भारत लौटते समय जब वे बगदाद रुके तो उनके मन में एक विचार आया। उन्होंने अपने प्रकाशक को केबुल (समुद्री तार) भेजा कि उस पुस्तक में यह समर्पण लिख दे - 'कमला को, जिसकी अब याद ही रह गई।'

७

स्वतन्त्रता के द्वार पर

अजीब जिन्दगी थी वह भी। एक ओर पारिवारिक दुख-पिता की मृत्यु, माता पर लाठी का प्रहार, बहनें और बहनोई जेल में, पत्नी की मृत्यु ; और दूसरी ओर पूरे देश की बागडोर हाथ में। जिन्दगी को कहीं चैन नहीं, आराम नहीं, चारों ओर काम, काम, बस काम।

उधर दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो गया। १ सितम्बर १९३६ को जर्मनी ने पोलैण्ड पर हमला कर दिया। सारा संसार युद्ध

की लपटों में झुलसने लगा। जर्मनी और इटली ने पूरे यूरोप को नष्ट कर डाला। इंगलैण्ड पर बमों की वर्षा की।

नेहरू जी सब देखते रहे, सुनते रहे। फिर भारत को भी इस युद्ध में घसीट लिया गया। हजारों युवक भरती करके युद्ध में झोंक दिए गए। गेहूँ महंगा हो गया, चावल महंगा हो गया, गरीब भूखों मरने लगे। नेहरू जी की आत्मा तिलमिला उठी। भारत को स्वतन्त्र होना ही चाहिए। इस तरह दूसरे लोग जबर- दस्ती उसे युद्ध में क्यों धकेलें ? क्या हक है किसी का कि वह एक देश के जवानों को जबरदस्ती विदेशों में होने वाले युद्ध में भेज दे ?

और तब आया अगस्त १९४२। भारत की स्वतन्त्रता के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण महीना।

८ अगस्त को बम्बई में ग्वालिया टैंक के मैदान में अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी का युगान्तरकारी अधिवेशन हुआ। रात के दस बज चुके थे, महात्मा गाँधी का १४० मिनट का ऐतिहासिक भाषण चल रहा था :

"...मैं आजादी तुरन्त चाहता हूँ, आज ही रात को, भोर होने से पहले। आप सबको यह समझ लेना चाहिए कि आप इसी क्षण से स्वतन्त्र स्त्री-पुरुष हैं; तथा यह अनुभव करना चाहिये कि आप स्वतन्त्र हैं, और अब इस साम्राज्यवाद की एडी के नीचे दबे हुए नहीं हैं। जो मैं बता रहा हूँ, यह कोई बनावटी विश्वास की बात नहीं है। यह स्वतन्त्रता का वास्तविक सत्य है।"

सब शान्त होकर उत्सुकता से सुन रहे थे और गाँधी जी कहते जा रहे थे - "जब गुलाम अपने को स्वतन्त्र प्राणी समझने लगता है, तभी उसका बन्धन टूट जाता है। यह मैं एक छोटा- सा मंत्र आपको दे रहा हूँ। आप इसे अपने हृदय पर अंकित कर

CHAPPA

लीजिये, जिससे कि आपके प्रत्येक श्वास से यह ध्वनित होता रहे। मन्त्र यह है : "हम करेंगे या मरेंगे।" या तो भारत को आजाद करेंगे या इस कोशिश में मर जायेंगे । यह देखने के लिये कि हमारी पराधीनता शाश्वत हो गई है, हम जीवित नहीं रहेंगे।"

अंग्रेजों में घबराहट फैल गई। वे जानते थे कि इस बार गाँधी की यह आँधी उन्हें भारत से बाहर उडाकर ही चैन लेगी। अतः रातों-रात उन्होंने योजना बनाई और ९ अगस्त की सुबह को अभी सूरज की पहली किरण भी नहीं फूटी थी कि सभी बडे-बडे नेता गिरफ्तार कर लिए गए ।

महात्मा गाँधी बिडला हाउस में थे। रात को ही पुलिस ने बिडला हाउस घेर लिया और सुबह के ५ बजते ही वे दीवालें फांदकर अन्दर घुस गए। गाँधी जी नाश्ता कर चुके थे। पुलिस के पहुँचते ही उन्होंने अपने साथियों से 'वैष्णव जन तो तेने कहियो, जो पीर पराई जाने रे', भजन गवाया और फिर पुलिस के साथ चल दिए ।

नेहरू जी अपनी बहन कृष्णा हठीसिंह के यहाँ ठहरे हुए थे। सुबह पाँच बजे पुलिस उन्हें भी बन्दी बना कर ले गई। इसके बाद श्री गोविन्द वल्लभ पन्त, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, सरदार पटेल, राजेन्द्रप्रसाद, मौलाना आजाद, श्रीमती सरोजनी नायडू आदि सभी नेताओं को नजरबन्द कर दिया गया ।

देश में सनसनी फैल गई। जगह-जगह सैकडों लोग नारे लगाते- 'अंग्रेजो, भारत छोडो', 'महात्मा गाँधी की जय', और 'इन्क्लाब जिन्दाबाद' । हजारों गिरफ्तार होते, फिर दूसरे दिन उनके स्थान पर हजारों लोग नारे लगाने आ जाते ।

सन् १८५७ के बाद यह दूसरा अवसर था, जब देश भर में अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध इतना व्यापक आन्दोलन हुआ । आजादी की लौ बहुत तेज जल उठी थी, देश का बच्चा-बच्चा श्राजादी

का दीवाना बन चुका था। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और गुजरात से लेकर बंगाल तक क्रान्ति की लहर फैल चुकी थी। हजारों लोग गिरफ्तार हुए, हजारों पुलिस की गोलियों से मारे गए और हजारों लोगों ने अंग्रेज राज्य को विफल करने के लिये तोङ-फोङ की।

अंग्रेजों का शासन डगमगा उठा।

नेहरू जी जेल में थे और उधर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में ४० हजार भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उन्होंने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज बनाई और देश की आजादी के लिए लङने लगे।

इस बीच बंगाल में महा-अकाल पङा, जिस में १० लाख भारतीय मर गए।

मुहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान बनाने के लिए अपना युद्ध और बढ़ा दिया।

भारत से अंग्रेजों के पैर उखङ चुके थे। वे समझ गए थे कि उनके अन्तिम दिन आ गए। उधर विश्व युद्ध समाप्त हुआ और इधर १५ जून १९४५ को १०४० दिन जेल में रहने के बाद नेहरू जो छोङ दिए गए।

१९४६ के शुरू होते ही भारतीय वायुसेना के अनेक कर्म- चारियों में भूख हङताल कर दी। फिर १८ फरवरी को नौसेना में गदर हो गया। भारत में स्वतन्त्रता की भावना इतनी तेज हो चुकी थी कि अंग्रेजी शासन किसी भी तरह यहाँ नहीं टिक सकता था। चुनाव में कांग्रेस बहुत अधिक मतों से जीत चुकी थी। तब वायसराय ने नेहरू जी को अन्तरिम सरकार बनाने को कहा।

२ सितम्बर १९४६ को आन्तरिक सरकार बनी और नेहरू जी बने - उसके पहले प्रधान मन्त्री। अपने जीवन के बहुमूल्य

३,२६२ दिन अंग्रेजों की जेल में बिताने के बाद यह पहला दिन था जब नेहरू जी के हाथ में भारत के शासन की बागडोर दे दी गई थी।

लेकिन मुस्लिम लीग से यह सहन नहीं हुआ। उसने मातम मनाया और देश में 'जेहाद' बोल दिया। लाखों भारतीय मारे गए और घायल हुए। सबसे बड़ा हत्याकाण्ड नवाखली (बंगाल) में हुआ। वहाँ स्त्रियों, बच्चों, बूढों - किसी को भी नहीं छोड़ा गया। नवाखली का यह खूनी काण्ड सुनकर महात्मा गाँधी भागे-भागे वहाँ पहुँचे।

फिर बिहार में भी दंगे शुरू हो गए। पूरे देश में गृहयुद्ध भड़कने की आशंका पैदा हो गई।

स्वतन्त्रता की मंजिल बिल्कुल निकट पहुँच चुकी थी, परन्तु नवाखली और बिहार में जो हत्याकाण्ड हो रहा था, उसका क्या किया जाए ? मुस्लिम लीग की जिद के आगे किसी की न चल सकी।

तब लाचार होकर काँग्रेस को वह बात माननी ही पड़ी, जिसे वह अब तक रोके हुए थी। वह था - भारत का विभाजन। गाँधी जी रो पड़े, नेहरू जी की आत्मा कराह उठी, बड़े-बड़े नेताओं के चेहरे मुरझा गए। लेकिन इसके अलावा किया भी

क्या जा सकता था ?

घोषणा कर दी गई कि १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र हो जाएगा और उसी दिन उसके दो खण्ड भी हो जाएंगे-एक खण्ड होगा भारत और दूसरा होगा पाकिस्तान।

६

स्वतंत्रता पर खून के छौटे

आखिर निर्धारित दिन निकट आ पहुंचा। १४ अगस्त १९४७ को नेहरू जी ने संविधान परिषद में कहा :

"बहुत वर्ष हुए हमने भाग्य से एक सौदा किया था, और अब प्रतिज्ञा पूरी करने का समय आया है- पूरी तौर पर या जितनी चाहिए उतनी तो नहीं, फिर भी काफी हद तक। जब आधी रात के घण्टे बजेंगे, जबकि सारी दुनिया सोती होगी, उस समय भारत जगकर जीवन और स्वतंत्रता प्राप्त करेगा।"

आधी रात हुई। १४ अगस्त के अन्तिम क्षण बीते और १५ अगस्त के आगमन के घण्टे बजे।

२०० वर्ष की गुलामी की जंजीरें टूट गईं, अंग्रेजों ने भारत का शासन भारतवासियों को सौंप दिया। नए दिन के साथ भारत का नया जीवन आरम्भ हुआ। नया बिल्कुल नया जीवन, स्वतंत्र जीवन।

प्रधानमंत्री नेहरू ने देश के नाम संदेश दिया - "नियत दिवस आ गया है, यह नियत दिवस जिसे भाग्य ने निश्चित किया था। और भारत आज फिर लम्बी नींद और कोशिशों के बाद जागा है और शक्तिशाली, मुक्त तथा स्वतंत्र हुआ है।"

नेहरू जी इस अवसर पर देश के करोडों दुखी किसानों और मजदूरों को नहीं भूले। उन्होंने कहा- "भविष्य हमें बुला रहा है। हम कहां जाएंगे और हमारा क्या प्रयत्न होगा ? हमारा प्रयत्न होगा साधारण मनुष्य को, भारत के किसानों और मजदूरों को स्वतंत्रता और अवसर दिलाना; एक समृद्ध, जनसत्तात्मक और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना; और ऐसी सामाजिक,

SHADDA

आर्थिक और राजनैतिक संस्थाओं की रचना करना, जिनसे कि प्रत्येक पुरुष और स्त्री को न्याय और जीवन की परिपूर्णता प्राप्त हो सके।"

देश के कोने-कोने में स्वतंत्रता की खुशी की लहर दौड़ रही थी, लेकिन नेहरू जी को अभी भी बहुत कुछ सहना था।

पाकिस्तान बनते ही वहां से शरणार्थियों के झुण्ड के झुण्ड भारत आने लगे। लाखों मारे गए, कुछ वहीं रास्ते में। जो भारत तक पहुंचे वे बुरी हालत में थे। स्त्रियों, बच्चों, बूढ़ों और जवानों की कतारें की कतारें चली आ रही थीं।

भारत में भी दंगे होने लगे। नेहरू जी नई दिल्ली में थे। वे बराबर लोगों से शान्ति की अपील करते रहे।

एक दिन उन्हें पता चला कि दिल्ली के कनाट प्लेस में दंगा हो गया है। वे तुरन्त कार से वहां पहुंचे। उन्होंने देखा कि कुछ गुण्डे एक मकान को लूट रहे हैं और हजारों लोग चुपचाप तमाशा देख रहे हैं।

नेहरू जी से नहीं देखा गया। वे तुरन्त कार से उतरे और उस दुकान की ओर भागे। उनके हाथ में एक छड़ी थी। वे उसी छड़ी को लेकर गुण्डों पर पिल पड़े।

हजारों लोगों ने देखा - स्वतंत्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री अकेले केवल एक छड़ी से इतने अधिक गुण्डों से लड़ रहा है। गुण्डे भाग गए, दुकान बच गई। प्रधानमंत्री वापस लौट आये।

१५ अगस्त को जब सारा देश स्वतंत्रता दिवस मना रहा था, तब भी राष्ट्रपिता गांधी बंगाल के दीन-दुखियों और पीड़ितों की सेवा में लगे थे। भारत-विभाजन का दिन उनके जीवन का

सबसे कष्टपूर्ण दिन था। भारत माता के दो खण्ड हो गए- इसका दुख उन्हें इतना अधिक था कि जिस स्वतंत्रता के लिए वे जीवन भर लङते रहे, उसे पाने पर वे खुशी तक न मना सके।

९ सितम्बर को अत्यन्त दुखी हृदय को लेकर राष्ट्रपिता दिल्ली पहुँचे। उनकी करुण मूर्ति नेहरू जी से नहीं देखी गई। उन्होंने बङे दुखी स्वर में कहा - "आज हमारे नेता महात्मा जी कलकत्ते से आये हैं। जब मैं उनके पास थोङी देर के लिए बैठा तो आसानी से आँख न मिला पाया। मुझे शर्म मालूम होती थी कि मैं प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी पूरी तरह नहीं अदा कर पाया। देश में जहां भी जो कुछ हो रहा है, उसे मैं अपना कसूर मानता हूँ। हिन्दुस्तान का महान व्यक्ति आज यहाँ क्या देख रहा है ?"

देश में दंगे समाप्त नहीं हुए। तब १३ जनवरी १९४८ को राष्ट्रपिता ने आमरण अनशन कर दिया।

देश भर में सन्नाटा छा गया। नेताओं में भगदङ मच गई। बैठकें होने लगीं।

तीन दिन बीते। राष्ट्रपिता का स्वास्थ्य गिरने लगा। दो दिन और बीत गए। हालत और गिर गई।

नेहरू जी से नहीं देखा गया। १८ जनवरी को उन्होंने भी प्रतिज्ञा की कि वे भी एक दिन का उपवास रखेंगे।

डा० राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आजाद, आदि नेता लगभग १०० प्रतिनिधियों को लेकर राष्ट्रपिता के पास पहुँचे। उनसे अनशन तोङने की प्रार्थना की, वायदे किए, कसमें खाईं। राष्ट्र- पिता का कोमल हृदय पिघला। उन्होंने उपवास तोङ दिया। मौलाना आजाद ने उन्हें सन्तरे का रस पिलाया।

नेहरू जी मूक हो यह सब देखते रहे। राष्ट्रपिता ने उपवास तोङा तो उनकी बाँधे खिल गईं, गला भर आया। पिता के

प्यार के आगे पुत्र जैसे मचलता है, वैसे ही नेहरू जी का मन मचलने को चाहा।

उन्होंने राष्ट्रपिता से मुस्कराकर कहा, "देखिए, मैं आज उपवास कर रहा था। अब मुझे समय से पहले ही अपना उपवास तोड़ देना पड़ेगा।"

राष्ट्रपिता हंस पड़े। उन्होंने वात्सल्यपूर्ण दृष्टि से नेहरू जी की ओर देखा। उनका मानस-पुत्र, उनका उत्तराधिकारी, भारत का प्रधानमंत्री होते हुए आज भी कितना मासूम, कितना निश्छल और कितना नन्हा-सा बालक लग रहा है।

राष्ट्रपिता अब खुश थे। सब लोगों ने संतोष की सांस ली और अपने-अपने घर चल दिए।

शाम को राष्ट्रपिता ने नेहरू जी को एक पर्चे पर लिखकर भेजा :

"चि० जवाहरलाल, उपवास छोड़ो। बहुत वर्ष जियो और हिंद के जवाहर बने रहो!"

परन्तु कौन जानता था कि वह बापू, जिसने इतनी कुरबानियां कीं, जिसने हमें स्वतंत्रता दिलाई, और आज स्वतंत्रता दिलाने के बाद जो सत्ता, अधिकार आदि सबसे दूर होकर विरक्त तपस्वी का जीवन बिता रहा है, उसी बापू को कोई अदूरदर्शी गोली मार देगा।

३० जनवरी १९४८ की वह कलंकित शाम।

शाम के ५ बजे थे। बापू बिड़ला भवन में प्रार्थना सभा में जा रहे थे। तभी एक व्यक्ति ने पिस्तौल निकाली और दनादन तीन गोलियां बापू की छाती पर दाग दीं।

बापू 'हे राम' कहकर गिर पड़े और फिर कभी नहीं उठे। नेहरू जी के दिल पर यह सबसे बड़ा आघात था। १९३१

में उनके पिता श्री मोतीलाल की मृत्यु हुई थी और आज उनके आध्यात्मिक तथा राजनीतिक पिता भी चल बसे थे। वे फफक- फफककर रो पडे ।

उन्होंने अपने संदेश में कहा- "मित्रो और साथियो ! हमारे जीवन से प्रकाश जाता रहा और सब तरफ अंधेरा छा गया है। मैं नहीं जानता मैं आपसे क्या कहूँ। हमारे प्रिय नेता, जिन्हें हम बापू कहते थे, जो राष्ट्रपिता थे, अब नहीं रहे। शायद मेरा ऐसा कहना गलत है। फिर भी हम उन्हें नहीं देखेंगे, जैसा कि हम इन बहुत वर्षों से देखते आये थे। उनके पास दौडकर सलाह लेने या उनसे सांत्वना पाने के लिए अब हम न जा सकेंगे। यह एक भयानक आघात है- केवल मेरे लिए ही नहीं, बल्कि इस देश के करोडों लोगों के लिए भी ।"

फिर उन्होंने कहा - "मैंने कहा कि प्रकाश जाता रहा, लेकिन मैंने गलत कहा। क्योंकि वह प्रकाश, जिसने इस देश को आलोकित किया, कोई साधारण प्रकाश नहीं था। जिस प्रकाश ने इस देश को अनेक वर्षों से आलोकित किया है, वह भविष्य में भी अनेक वर्षों तक इस देश को आलोकित करता रहेगा और एक हजार वर्ष बाद भी यह प्रकाश इस देश में दिखाई देगा और दुनिया इसे देखेगी तथा यह अनगिनत हृदयों को शान्ति प्रदान करेगा ।..."

एक युग समाप्त हो गया था। सत्य और अहिंसा का पुजारी चला गया था । बीसवीं शताब्दी का बुद्ध अपनी अनन्त यात्रा पर चल दिया था ।

नेहरू अकेले रह गए थे ।

७

विश्व-शांति का संदेश वाहक

बापू संत थे और जवाहरलाल कर्मठ सिपहसलार। एक धर्मप्राण बा व्यक्ति थे और दूसरे कर्मप्रधान। एक की आवाज में भगवान बुद्ध की करुणा थी और दूसरे की आवाज में अत्याचार और आक्रान्ता के विरुद्ध लडने वाले सम्राट अशोक का जोश। दोनों की भाषा अलग-अलग थी, लेकिन पथ एक।

इसीलिए बापू ने कहा था- "वह कहता है कि मेरी भाषा उसकी समझ में नहीं आती। वह यह भी कहता है कि उसकी भाषा मैं नहीं समझता। यह सही हो या न हो, किन्तु हृदयों की एकता में भाषा बाधक नहीं होती। और मैं जानता हूँ कि जब मैं चला जाऊँगा, तब वह मेरी ही भाषा बोलेगा।"

कितना सच कहा था बापू ने। वे जवाहर, जो स्वतंत्रता की प्राप्ति तक कर्मठ सैनिक की तरह स्वतंत्रता-संग्राम में लडते रहे और अपनी ओजभरी वाणी से समस्त भारत में जोश की लह फैलाते रहे, वही जवाहर बापू के जाने के बाद मन, वचन और कर्म से विश्व-शान्ति के पैगम्बर बन गए।

'जब मैं चला जाऊँगा, तब वह मेरी ही भाषा बोलेगा,' यही तो कहा था बापू ने। वह भाषा कौनसी थी ? वह भाषा थी - भगवान बुद्ध की, विश्व-शान्ति की, विश्व-बन्धुत्व की, सह- अस्तित्व की, करुणा और प्रेम की, दया और ममता की।

बहुत समय की बात है। नेहरू जी के दर्शनों के लिए बहुत

बडी भीड जमा हो गई थी। नेहरू जी की कार चली जा रही थी। लोग एक-दूसरे को धकेलकर आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहे

थे। इतने में एक व्यक्ति गिर पड़ा, दूसरा व्यक्ति उसकी पीठ पर चढ़कर नेहरू जी को देखने लगा। तभी नेहरू जी की निगाह उस पर पड़ गई। वे तुरन्त कार का दरवाजा खोलकर बाहर आ गये और उस व्यक्ति से तिलमिलाकर बोले, "मुझे क्या देखता है ? उसे देख जो तेरे पैरों तले कुचला जा रहा है।"

दूसरों को कुचलने वाले, दूसरों को गुलाम बनाने वाले, दूसरों का शोषण करने वाले, दूसरों की पीठ पर खड़े होकर ऊँचा चढ़ने वाले हमेशा-हमेशा नेहरू जी के शत्रु रहे।

इसी लिए भारत के स्वतंत्र होने के बाद नेहरू जी ने समस्त एशिया में जागरण का नारा लगाया, उपनिवेशवाद के विरुद्ध आवाज उठाई और दुनिया भर को विश्व-शान्ति का संदेश दिया।

अक्तूबर १९४८ में राष्ट्रमण्डल देशों के प्रधानमंत्री सम्मेलन में भाग लेने के बाद जब वे लौट रहे थे, तब उन्हें पेरिस में रुकना पड़ा। वहाँ संयुक्त राष्ट्र महासभा का अधिवेशन चल. रहा था। नेहरू जी को उसमें निमंत्रित किया गया।

नेहरू जी ने ३ नवम्बर १९४८ को संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देते हुए कहा-

"...यह सभा दो महायुद्धों के बाद और उन युद्धों के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आई। इन दो युद्धों की क्या शिक्षा रही है ? निश्चय ही इन युद्धों ने सिखाया है कि घृणा और हिंसा द्वारा आप शान्ति का निर्माण नहीं कर सकते।..."

दुनिया के अनेक देशों के प्रतिनिधि एकटक उनकी ओर देख रहे थे, और वे कहते जा रहे थे-

"एशिया में हम लोगों ने, जिन्होंने उपनिवेशवाद की सब बुराइयां भेली हैं, हरएक उपनिवेश की आजादी के लिए प्रतिज्ञा कर ली है। कोई भी शक्ति, चाहे छोटी हो या

बङी, जो इन लोगों की आजादी में बाधा डालती है, वह संसार की शान्ति के हक में अच्छा नहीं करती।..."

यह एक नए एशिया की आवाज थी, जाग्रत एशिया की, और एशिया की इस आवाज को बुलन्द कर रहे थे- नवोदित स्वतंत्र राष्ट्र भारत के प्रधानमंत्री नेहरू।

वह देश जो साल भर पहले तक गुलामी की जंजीरों में जकङा हुआ था, उसका प्रधानमंत्री आज दुनिया के प्रतिनिधियों के सामने खङा गुलामी और रंगभेद के विरुद्ध अपनी आवाज उठा रहा था, युद्ध-लोलुप देशों की भर्त्सना कर रहा था और विश्व-शान्ति का संदेश दे रहा था। सबके कान एकाग्र होकर उसके एक-एक शब्द को ग्रहण कर रहे थे, एक-एक वाक्य के महत्व को समझ रहे थे। राष्ट्रसंघ के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब सभी प्रतिनिधियों ने किसी के भाषण को इतनी उत्सुकता, इतनी शान्ति और इतनी गम्भीरता से सुना।

और नेहरू ? जो अब तक अपने देश के लोकप्रिय नेता थे, अब विश्वनेता बन गए थे; गुलाम देशों को स्वतंत्र बनाने वाले मसीहा बन गए थे, दुनिया भर में शान्ति का संदेश देने वाले दूत बन गए थे।

अनेक देशों से उनके पास निमंत्रण आने लगे। गुलाम देश के लोग उनसे सलाह लेने के लिए पत्र भेजने लगे; बङे बङे विद्धान और विचारक उनसे विश्व को युद्ध से बचाने के लिए प्रार्थना करने लगे। जो नेहरू भारत की जनता की आंखों के तारे थे, उन पर अब समस्त विश्व की आँखें टिक गई थीं। सब चाहते थे कि नेहरू उनके देश आयें और प्रेम तथा शान्ति का संदेश दें।

तब नेहरू जी ने सबसे पहले अमेरिका जाने का निर्णय किया। यह वह देश था, जो सबसे अधिक समृद्ध था और साथ

ही जिससे युद्ध का सबसे अधिक खतरा था।

अमेरिका भर में उनके स्वागत की तैयारी होने लगी। सभी प्रबुद्ध-गण और आम जनता आतुरता से उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगी।

अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' ने लिखा- "किसी व्यक्ति की लोकप्रियता यदि इस बात से आँकी जाए कि उसके देशवासी उसे स्वेच्छा से कितना सहयोग देते हैं, तो अमेरिका की जनता पहली बार दुनिया के सबसे अधिक लोकप्रिय व्यक्ति के दर्शन करेगी।"

बात सही थी। नेहरूजी को भारतवासियों से जितना प्यार मिला, जितना सम्मान मिला, उतना दुनिया में शायद ही किसी देश ने अपने किसी नेता को दिया हो। यही भारत की जनता की आँखों के तारे नेहरू ११ अक्तूबर १९४९ को जब अमेरिका के हवाई अड्डे पर उतरे, तो लाखों व्यक्तियों की आँखें उत्सुकता से उन पर टिक गईं। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रमैन ने आगे बढ़कर उनसे हाथ मिलाया; अनेक उच्चाधिकारियों ने उनका स्वागत किया;

१९ तोपों की सलामी दी गई; 'गार्ड आफ आनर' दिया गया। १३ अक्तूबर को नेहरू जी को अमेरिका की संसद 'सीनेट' में अपने विचार प्रकट करने के लिए जाना था। सारा हाल और दर्शक-गैलरी खचाखच भरी थी। तिल रखने को भी जगह न थी। शायद यह पहला अवसर था जब उस स्थान पर एक साथ इतने व्यक्ति इकट्ठे हुए हों। और ऐसा होना स्वाभाविक ही था। नवोदित महान् राष्ट्र का लोकप्रिय नेता और शान्ति का दूत जो आने वाला था।

नेहरू जी पहुँचे। समस्त व्यक्तियों ने खड़े होकर तालियाँ बजाते हुए उनका स्वागत किया। नेहरू जी हाथ जोड़ते हुए उस विशेष स्थान तक पहुँचे, जहाँ से उन्हें भाषण देना था। वे समस्त उपस्थितगणों को देख रहे थे और समस्त

उपस्थित-गण उन्हें । उनकी आँखों की प्यार की भाषा सबने पढ़ी, सबका प्यार उन पर उमड पडा ।

नेहरू जी कह रहे थे- "आपकी महान सफलताओं से कुछ सीखने के लिए मैं आपके देश आया हूँ और इसलिए भी आया हूँ कि आपके प्रति अपने देश की शुभकामनायें प्रकट करूँ । मेरी यात्रा दोनों देशों की जनता को एक-दूसरे को समझने में सहा- यक हो सकती है और उन्हें मित्रता के ऐसे सुदृढ़ बन्धन में बाँध सकती है, जो अप्रत्यक्ष होते हैं, लेकिन जो शारीरिक बन्धनों से अधिक मजबूत होते हैं और अलग-अलग प्रकार के देशों को एक सूत्र में बाँध देते हैं.....।"

श्रोता गद्गद हो गये। यह भारत की ३८ करोड जनता का संदेश था, जो नेहरू जी के शब्दों में बोल रहा था। यह भारत की सच्ची आवाज थी ।

समस्त श्रोता सुन रहे थे, भारत-माँ के उस लाडले बेटे की आवाज । राष्ट्रपिता गांधी ने एक बार कहा था कि 'जब मैं नहीं रहूँगा, तब जवाहरलाल मेरी ही भाषा बोलेगा ।' आज वह बात सच निकल रही थी। नेहरू जी अमेरिका के इतने विशाल सीनेट में गांधी जी की ही भाषा बोल रहे थे, सत्य और अहिंसा की, प्यार और प्रेम की, विश्वबन्धुत्व और शान्ति की। वे कहते जा रहे थे-

"विश्व-शान्ति की रक्षा और मानव स्वतन्त्रता का विकास ही हमारी विदेश नीति का उद्देश्य है। दो दुखान्त युद्ध हुए, जिससे अब युद्ध की कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। शान्ति के बिना विजय बेकार होती है। ऐसी दशा में विजयी और विजित, दोनों भूतकाल के गहरे और दुखदायी घावों से तथा भविष्य के भय से चिन्तित रहते हैं। क्या आज की दुनिया के बारे में यह बात गलत है ? क्या यह दुखद स्थिति बनी रहनी चाहिए? क्या विज्ञान और धन की शक्ति मानव समाज

के सर्वनाश के लिए खर्च की जानी चाहिए ? प्रत्येक राष्ट्र को, चाहे वह छोटा हो या बडा, इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देना है। जो राष्ट्र जितना बडा है, उसकी जिम्मेदारी भी उतनी ही बडी हो जाती है।"

नेहरू जी के इस भाषण से दुनिया भर में तहलका मच गया । कैल तक जो स्वतन्त्रता का मसीहा था आज वह शान्ति का भी मसीहा बन गया था। जिसे अब तक मुख्यतः भारत का नेता माना जाता था, आज वह विश्व भर का नेता बन गया था।

न्यूयार्क में जब उनका नागरिक अभिनन्दन किया गया, तब वहाँ के मेयर ने घोषणा की- "आज वह व्यक्ति हमारे सामने है जिसने बिना बल-प्रयोग के स्वतन्त्रता प्राप्त करने की शिक्षा दी है। वह व्यक्ति हमारे सामने है, जो इस दुनिया में उस शाश्वत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे शान्ति प्राप्त हो सकती है-न केवल भारत को, वरन दुनिया के समस्त राष्ट्रों को। ऐसे महान व्यक्ति का स्वागत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।"

फिर तो नेहरू जी अमेरिका में जहाँ-जहाँ गए, जनता ने उनके स्वागत में आँखें बिछा दीं। वे तीन सप्ताह तक अमेरिका गैर कनाडा के अनेक स्थानों पर शान्ति और विश्व-बन्धुत्व का देश देते रहे ।

८

संसार युद्ध के कगार पर

१९५० में सारा संसार धीरे-धीरे युद्ध के कगार पर पहुँच गया था। कोरिया के प्रश्न को लेकर दुनिया की सबसे बङी दो शक्तियाँ - अमेरिका और रूस- आपस में लङ मरने को तैयार हो गईं। इनमें युद्ध शुरू होने का मतलब था- तीसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत और वह तीसरा विश्वयुद्ध इतना भयं- कर होता कि सम्भवतः समस्त मानव जाति ही इस संसार से उठ जाती । एक अणुबम ने हिरोशिमा में जो कुछ किया वही सब न जाने कितने देशों में होता ।

बात यह थी कि दूसरे विश्वयुद्ध से पहले कोरिया एक राष्ट्र था। जापान और चीन के बीच दक्षिण की ओर स्थित यह छोटा- सा देश-कोरिया-दूसरे विश्वयुद्ध में जापान से हार गया था । बाद में रूस, ब्रिटेन और अमेरिका ने मिलकर एक ओर जर्मनी को हराया और दूसरी ओर जापान को । कोरिया को उत्तर की ओर से रूस जीतता हुआ आया और दक्षिण की ओर से अमेरिका । फिर इन दोनों देशों ने कोरिया को दो भागों में बाँट दिया।

कोरिया के सीने पर बंटवारे की जो रेखा डाली गई, वह थी ३८ अक्षांश की। इस रेखा के उत्तर में रूस की फौज का शासन हो गया और दक्षिण में अमरीकी फौज का ।

धीरे-धीरे दोनों फौजों में सीमा को लेकर मुठभेङ होने लगी और २५ जून १९५० को वहाँ युद्ध शुरू हो गया ।

नेहरू जी ने १३ जुलाई १९५० को रूस के प्रधानमन्त्री को पत्र लिखा कि वे कोरिया में युद्ध बन्द कराने का प्रयत्न

करें। रूस के प्रधानमन्त्री का उत्तर आया कि वे भी शान्ति स्थापित करने के पक्ष में हैं।

कोरिया का मामला संयुक्त राष्ट्र संघ में गया। उसने तुरन्त वहाँ फौज भेज दी। इस फौज में अमेरिका, ब्रिटेन, फाँस आदि देशों के सैनिक थे।

भारत के प्रधानमन्त्री नेहरू के सामने जब सैनिक भेजने का सवाल आया तो उन्होंने साफ मना कर दिया। वे जानते थे कि कोरिया में सैनिक भेजने के माने हैं- युद्ध में भाग लेना। जो व्यक्ति दुनिया को शान्ति का संदेश दे रहा था, वह युद्ध के लिए सैनिक क्यों भेजता? लेकिन कोरिया में जो सैनिक घायल हो रहे थे, उनका क्या होगा? यह सोचकर नेहरू जी ने वहाँ चिकित्सा दल भेज दिया।

संयुक्त राष्ट्र संघ की सेना दक्षिण कोरिया पहुँची। उसने उत्तरी कोरिया के आक्रमणकारियों को ३८ अक्षाँश से बाहर खदेड़ दिया और इसके बाद जोश में आकर खुद भी ३८ अक्षांश पार कर उत्तर की ओर बढ़ने लगी।

नेहरू जी इन सब घटनाओं का बारीकी से अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने तुरन्त संयुक्त राष्ट्र संघ की सेना को चेतावनी दी कि वह ३८ अक्षांश पार न करे और न उत्तरी कोरिया में घुसे, अन्यथा उत्तरी कोरिया की समस्त जनता संयुक्त राष्ट्र संघ के विरुद्ध हो जाएगी।

नेहरू जी की भविष्यवाणी सच निकली। उत्तरी कोरिया में संयुक्त राष्ट्र संघ की सेना के घुसते ही उत्तरी कोरिया की समस्त जनता सर पर कफन बाँधे सैनिकों से लड़ने मैदान में आ गई। विमानों से बम गिरने लगे, सैनिक कट मरने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। संयुक्त राष्ट्र संघ बदनाम हो गया। तब दुनिया के नेताओं ने महसूस किया कि भारत के नेता नेहरू कितने दूरदर्शी हैं। वे राजनीति और जनता की भावना

को कितनी गहराई से समझते हैं।

इसके बाद ही वारसा में दूसरा विश्व शान्ति सम्मेलन हुआ, जिसमें ८० देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन ने अपने प्रस्ताव में कहा- "युद्ध का खतरा स्त्रियों, बच्चों, पुरुषों के- समस्त मानव जाति के सिर पर मंडरा रहा है।... शान्ति के आगमन की प्रतीक्षा नहीं की जाती, उसे जीतने के लिए संघर्ष करना होता है। आओ, हम संयुक्त रूप से प्रयास करें और युद्ध को बन्द करने की माँग करें, जो आज कोरिया को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है और जो समस्त संसार को अपनी लपटों में लेने वाला है।"

नेहरू जी ने भी स्वतंत्रता दिवस पर १५ अगस्त १९५० को लाल किले से भाषण देते हुए कहा - "आप जानते हैं कि दुनिया में अजीब हालत है। एशिया के एक कोने में लड़ाई हो रही है। हालाँकि लड़ाई एक छोटे मुल्क में है, फिर भी भयानक लड़ाई है। मालूम नहीं कब तक वह चले, मालूम नहीं वह बढ़े या वहीं रहे। हमारी कोशिश है वह बढ़े नहीं, दुनिया भर में आग न लगे। हमारी कोशिश है कि वह जल्दी से जल्दी रुक जाए...।"

काफी अधिक प्रयत्नों के बाद २७ जुलाई १९५३ को कोरिया में युद्ध-विराम का समझौता हुआ। वहाँ शान्ति स्थापित करने का भार भारत को सौंपा गया। तब ५ अगस्त को पहला भारतीय शान्ति-दस्ता कोरिया पहुँचा। वहाँ हिन्द नगर बनाया गया और २४ सितम्बर तक समस्त युद्ध बन्दियों को भारतीय सेना ने अपनी देख-रेख में ले लिया।

इस तरह नेहरू जी की दूरदर्शिता और शान्ति की नीति से समस्त संसार युद्ध के कगार तक पहुँचने के बाद भी बच गया।

लेकिन इसी बीच एक और घटना हो गई। १९४९ में चीन

में गणराज्य की स्थापना हुई और १९५० में उसने तिब्बत में अपनी फौजें भेजकर उस पर कब्जा कर लिया। नेहरू जी कुछ न कह सके। वह चीन और तिब्बत का घरेलू मामला था। दूसरे के घरेलू मामलों में नेहरू जी दखल नहीं देना चाहते थे। चीन बराबर भारत से मित्रता का ढोंग रच रहा था। उस समय नेहरू जी को क्या मालूम था कि चीन के दिल में कितना कपट है।

जून १९५४ में चीन का प्रधानमन्त्री चाऊ-एन-लाई भारत आया। यहाँ जितनी धूमधाम से उसका स्वागत हुआ, उतना शायद उसका अपने देश में भी नहीं हुआ होगा।

फिर दोनों ने पंचशील पर हस्ताक्षर किए जिसमें ये सिद्धान्त रखे गए : (१) एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना। (२) एक-दूसरे के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाई न करना। (३) एक-दूसरे के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करना। (४) समानता और परस्पर हित की नीति का पालन करना। (५) शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति का पालन करना।

फिर नेहरू जी अक्तूबर १९५४ में चीन गए। वहाँ उन्होंने कहा- "मैं यह शान्ति और सद्भावना का दूत बनकर आया

नेहरू जी इसके बाद वियतनाम और इन्डोनेशिया गए और वहाँ भी उन्होंने शान्ति और सद्भावना का संदेश दिया।

जब युद्धप्रिय देशों ने अपने संगठन को मजबूत करने और कमजोर देशों को दबाने के लिए एशिया के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में दक्षिण-पूर्व एशिया संधि संगठन (सीएटो) बनाया और पश्चिमी क्षेत्र में बगदाद संधि की, तो समस्त एशिया के छोटे-छोटे देश इन सैनिक संधियों से थर्रा उठे। उन्हें लगा कि एशिया अब तीसरे

विश्वयुद्ध का केन्द्र बन जाएगा। तब नेहरू जी ने इन सैनिक- संधियों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई - "यह साफ जाहिर है कि बगदाद और सीएटो जैसी सैनिक-संधियों का रवैया गलत है, खतरनाक है, नुकसानदायक है। यह सही तरीकों को रोकती और गलत तरीकों को बढ़ावा देती हैं। हमारा विचार है कि संधियाँ दुनिया को गलत रास्ते पर ले जाती हैं।"

विश्व नेता नेहरू की यह आवाज दुनिया भर में गूंज उठी। एशिया और अफ्रीका के शान्तिप्रिय देश शान्ति सम्मेलन बुलाने का प्रयास करने लगे। नेहरू जी की प्रेरणा से पहले दिल्ली में एशियायी सम्मेलन हुआ, जिसमें एशिया के १३ देशों ने भाग लिया।

फिर इन्डोनेशिया में १८ से २४ अप्रैल १९५५ तक दूसरा शान्ति-सम्मेलन हुआ, जिसे बाँडंग सम्मेलन कहा जाता है। इसमें एशिया और अफ्रीका के २९ देशों ने भाग लिया । इन्डो- नेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा, "मानव इतिहास में गैर-गोरी जातियों का यह पहला सम्मेलन है।"

वास्तव में इतना बङा शान्ति सम्मेलन पहले कभी नहीं हुआ था। यह नेहरू जी की ही प्रेरणा थी, जिससे समस्त एशिया और अफ्रीका जाग उठा था और दुनिया के युद्धलोलुप बङे-बङे देशों को शान्ति और प्रेम का सन्देश दे रहा था।

सम्मेलन ने अपने प्रस्ताव में कहा- "अणुशक्ति को शान्ति- पूर्ण निर्माण में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। मानवता को पूर्ण विनाश से बचाने के लिए जरूरी है कि निरस्त्रीकरण किया जाए और अणु-हथियारों के निर्माण तथा प्रयोग पर रोक लगाई जाए ।... उपनिवेशवाद का अन्त किया जाए ।... विश्व-शान्ति के लिए पंचशील का पालन किया जाए।"

यह सम्मेलन नेहरू जी की देन थी। जो नेहरू कोरिया-युद्ध

के समय विश्व-नेता और शान्ति-दूत के रूप में उभर रहे थे, वे अब पूरी तरह विश्व-नेता बन चुके थे। संसार के सैकडों परा- जित और पीडित देश मार्गदर्शन के लिए उनकी ओर देखने लगे; बडे-बडे देश उनसे सलाह लेने लगे; उनके एक-एक शब्द पर दुनिया गम्भीरता से विचार करने लगी। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पूरे संसार में फैल गया; उनकी महानता सर्वत्र विदित होने लगी; उनकी शान्ति की ज्योति पूरे संसार में जगमगाने लगी।

९

समाजवाद के पथ पर

एक बार किसी ने शंका प्रकट की थी कि - "पण्डित जवाहर- एन लाल नेहरू सारी दुनिया में तो शान्ति का नारा लगाते हैं, गुलाम देशों को आजाद होने की प्रेरणा देते हैं, लेकिन वे स्वयं अपने भारत के लिए क्या कर रहे हैं ?"

शंका प्रकट करने वाले सज्जन शायद भूल गये थे कि पण्डित नेहरू देश की उन्नति के लिए जो कुछ भी कर रहे थे वह दो चार हजार व्यक्तियों के लिए नहीं, बल्कि देश के चालीस करोड लोगों के लिए कर रहे थे। उन्होंने प्रधानमन्त्री की हैसियत से स्वतन्त्रता दिवस को लाल किले से जो पहला भाषण दिया था उसी में उन्होंने स्पष्ट कर दिया था - "जो जमींदारी प्रथा है, उसको हटाने की कोशिश कर रहे हैं। इस काम को हमें जल्दी करना है और फिर हमें सारे देश में बहुत कुछ आर्थिक

तरक्की करनी है, कारखाने खोलने हैं, घरेलू उद्योग-धन्धे बढ़ाने हैं, जिससे देश की धन-दौलत बढ़े और इस तरह से नहीं बढ़े कि वह थोडी सी जेबों में जाय, बल्कि आम जनता को उससे फायदा हो।"

जनता के उद्धार के लिए देश में अप्रैल १९५१ से पंचवर्षीय योजना शुरू हुई। उसी साल नेहरू जी ने लाल किले से घोषणा की - "आप शायद जानते हों कि अभी कुछ दिन हुए एक योजना, एक पांच वर्ष की योजना या प्लान, नेशनल प्लान, राष्ट्रीय योजना निकाली गई, जिसका मतलब है कि किस तरह से हम इस बडी लडाई को जीतें। बडी लडाई यानी हिन्दुस्तान की गरीबी के खिलाफ और बेकारी के खिलाफ लडाई। किस तरह से हिन्दुस्तान में ज्यादा काम हो और ज्यादा पैदावार हो, और ज्यादा धन-दौलत निकले, जो आम लोगों में जाय। बडा काम है, थोडे से आदमियों का नहीं। चालीस करोड आद- मियों के लिए, एक बडी योजना बहुत सोच-विचार के बाद बनी है।"

तब देश ने एक नई करवट ली, वह नई दिशा की ओर बढ़ने लगा, उन्नति और समृद्धि की ओर। पैदावार बढ़ाने के लिए आन्दोलन किया गया, नए कल-कारखाने लगाये गये, भाखडा-नंगल, दामोदर. घाटी योजना आदि बडी-बडी योजनाएं चलने लगीं। गांव में सम्पूर्ण लोकतन्त्र के लिए पंचायती राज की स्थापना हुई। सामुदायिक विकास शुरू हुआ। दुनिया ने देखा कि भारत समाजवाद की ओर बढ़ रहा है।

कभी गांधी जी ने कहा था कि- 'मेरे बाद जवाहरलाल मेरी ही भाषा बोलेगा।' उन्हीं गांधी जी ने कल्पना की थी कि हरेक गांव अपने में सम्पूर्ण लोकतंत्र होना चाहिए। अब नेहरू जी गांधी जी की भाषा में ही बोलने लगे थे और सामुदायिक विकास तथा पंचायती राज के द्वारा गांव-गांव में लोकतंत्र की स्थापना

CHADDA

करने लगे थे। इन सामुदायिक केन्द्रों के बारे में नेहरू जी ने अपने उद्गार प्रकट किये - "देश भर में अब ये मानवीय सक्रियता के केन्द्र हैं और ये केन्द्र दीपक की तरह अपने आसपास के अंधेरे को दूर कर रहे हैं। इन्हें बढ़ना चाहिए और इतना बढ़ना चाहिए कि पूरी भारतभूमि में प्रकाश फैल जाय।"

पण्डित नेहरू देश की बागडोर थामे कभी शहर में जाते, कभी गांव में। जगह-जगह वे देश की उन्नति के लिए, देश की समृद्धि के लिए लोगों को प्रेरित करते। जनता-प्रेमी, जनता के बीच जाकर जनता का ही बन जाता। और जनता भी दीवानों की तरह लाखों की संख्या में उनके दर्शन करने, उनके भाषण सुनने आती।

एक बार वे दक्षिण भारत की यात्रा कर रहे थे। पाण्डिचेरी स्टेशन पर ट्रेन रुकी। हजारों की संख्या में लोग उनके दर्शन करने आये हुए थे। लेकिन पुलिस उन्हें स्टेशन के अन्दर नहीं जाने दे रही थी। नेहरू जी को सुनाई दिया- 'नेहरू जिन्दाबाद।' नगता था जैसे हजारों आदमी एक साथ नारे लगा रहे हों। नेहरू जी ने खिड़की से बाहर झांका, लेकिन वहां उन्हें कोई नहीं दिखाई दिया। वे समझ गये कि पुलिस जनता को स्टेशन के अन्दर नहीं आने दे रही है। वे पुलिस वालों पर नाराज होकर बोले, "मैं पुलिसमैनों को देखना पसन्द नहीं करता। मुझे मेरी जनता चाहिए। वह वहां है।"

यह कहकर नेहरू जी रेल के डिब्बे से बाहर कूद पड़े और सीधे वहां चल दिये, जहां हजारों की संख्या में लोग खड़े थे। अजीब दृश्य था। सीढ़ी पर खड़े नेहरू जी मुस्करा रहे हैं और नेहरू-प्रेमी जनता उन्हें मुस्कराते देख जिन्दाबाद के नारे लगाये जा रही है।

कौन होगा ऐसा व्यक्ति, जिसने अपनी जनता से इतना प्यार

किया हो और कौन होगा ऐसा व्यक्ति, जिसे जनता ने इतना प्यार दिया हो। कौन होगा ऐसा व्यक्ति, जिसने जनता के हित के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया हो और फिर भी जो जनता के प्यार से इतना सम्पन्न और समृद्ध रहा हो।

मायथान बांध का काम जोर-शोर से चल रहा था। नेहरू जी देखने पहुँचे और मजदूरों से घुल-मिलकर बात करने लगे। एक मजदूर से उन्होंने पूछा, "तुम काम क्यों करते हो ?" "पेट की खातिर" मजदूर ने उत्तर दिया। यह उत्तर सुनकर नेहरू जी को बडी ग्लानि हुई। उन्होंने अपने पीछे खडे इंजीनियरों से नाराज होकर कहा, "आप लोगों ने देश की इज्ज़त धूल में मिला दी। इतने दिनों की आजादी के बाद भी यह नहीं समझ सके कि काम देश के निर्माण के लिये होता है।"

बेचारे इंजीनियर शर्म से सिर झुकाकर रह गये।

देश का निर्माण- यही नेहरू जी का सबसे पहला लक्ष्य रहा। इसीलिये खम्भात में जब तेल के एक कुएं से नेहरू जी की सफेद अचकन पर तेल के धब्बे पड गये, तो उन्होंने बडे गर्व से मुस्कराकर कहा, "मैं इसी पोशाक में संसद की बैठक में जाऊँगा। इससे सब लोगों को मालूम हो जायेगा कि हमारे पास अब अपना तेल हो गया है।"

इतना गर्व था नेहरू जी को अपने देश पर, अपने देश के प्राकृतिक साधनों पर। देश में पहले कहीं भी पेट्रोल और मिट्टी के तेल के कुएं नहीं थे। नेहरू जी की प्रेरणा से अनेक जगह खोज की गई और तब पता चला कि खम्भात और अंकलेश्वर में खोदने पर तेल मिल सकता है। इस सूचना से ही नेहरू जी गर्व से फूल उठे थे कि अब भारत को पेट्रोल या मिट्टी के तेल के लिए दूसरे

देशों का मुँह नहीं ताकना पडेगा।

उनके प्रयत्नों से ही भाखडा बांध बना; दामोदर घाटी योजना चली; मायथान, हीराकुड, नागार्जुन सागर, रेंड, कोसी आदि अनेक बांध बने; राउरकेला, दुर्गापुर और भिलाई में इस्पात कारखाने लगे; बंगलौर टेलीफोन उद्योग, पेरम्बूर में रेल डिब्बा कारखाना, चितरंजन में रेल इंजन कारखाना तथा अनेक जगह खाद कारखाने, पिम्परी में पेनिसिलीन कारखाना तथा अनेक प्रकार के छोटे-बडे कारखाने लगे। उनके प्रयत्न से छोटे उद्योग पनपे; दूर-दूर दुर्गम स्थानों तक सडकें बनीं; तार और टेलीफोन लगे; किसानों की भलाई के लिये सहकारी समितियां खुलीं।

देश आगे बढ़े, देश उन्नति करे- यही नेहरू जी की अदम्य कामना थी।

मध्य प्रदेश की बात है। एक बार कुछ लोग उनसे मिलने आए। उनमें एक पटवारी भी थे।

नेहरू जी ने उनसे पूछा, "कहिए, आप क्या करते हैं ?" "जी, मैं तो बहुत छोटा आदमी हूँ। पटवारी हूँ," उसने उत्तर दिया।

"अरे वाह," नेहरू जी ने प्रसन्न होकर हाथ मिलाते हुए कहा, "पटवारी तो बहुत बडा आदमी होता है।"

नेहरू जी का कहना था कि देश के निर्माण में लगा प्रत्येक व्यक्ति बडा आदमी है- चाहे वह पटवारी हो या डिप्टी, अफसर हो या क्लर्क, मालिक हो या मजदूर। केवल शर्त यह है कि वह

देश की उन्नति में लगा रहे। 'आराम हराम है,' नेहरू जी ने एक बार कहा और बार- बार कहा। वे स्वयं २०-२० घण्टे काम करते थे। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अनेक समस्याएं उनके सामने रहती थीं।

निर्माण-पथ पर बढ़ने वाले को आराम कहां ?

किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा, "हमारी कौन-कौन सी प्रमुख समस्याएं हैं ?"

"हमारी चालीस करोङ समस्याएं हैं, अर्थात् जितने देशवासी उतनी ही समस्याएं," नेहरू जी ने उत्तर दिया, "हमें हरेक की समस्या का ध्यान रखना है। जब हम हरेक की समस्या का ध्यान रखकर चलेंगे, तभी अपने देश का भला कर सकेंगे । हरेक व्यक्ति खुशहाल होगा, लेकिन यह जरूरी है कि हरेक व्यक्ति अपने हाथ से काम करे, उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न करे और दूसरों पर निर्भर न रहे।"

१०

लौह-कपाट खुले

'प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जून १९५५ के प्रथम सप्ताह सोवियत रूस की राजकीय यात्रा करेंगे," यह समाचार अखबारों में छपा, तो सारी दुनिया में तहलका मच गया ।

यह माना जाता था कि रूस परदे के पीछे है; वह लोहे के दरवाजों के अन्दर बन्द है। न वहां कोई जा सकता है और न वहां से कोई आ सकता है। रूस के नेता किसी भी अन्य देश के नेता को अपने यहां बुलाना पसन्द नहीं करते और न किसी देश में जाना चाहते हैं। इसीलिए जब रूस-सरकार ने नेहरू जी को रूस आने का निमंत्रण दिया और नेहरू जी ने उसे स्वीकार कर

लिया, तो दुनिया भर में तहलका मच गया। 'नेहरू रूस जाएंगे,' सब की जबान पर यही शब्द थे और सभी गम्भीरता से सोचते थे कि क्या रूस में नेहरू जी का उचित आदर-मान हो सकेगा? क्या रूस वाले नेहरू जी की शान्ति की आवाज सुनेंगे?

सोवियत रूस के लिए भी ७ जून १९५५ का दिन एक ऐतिहासिक दिन था। एशिया के नवोदित राष्ट्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री विश्वशान्ति का संदेश देने वहां पहुंच रहा था। सारा मास्को दुल्हन की तरह सजा दिया गया। जगह-जगह द्वार बनाए गए, तोरण और पताकाएं लगाई गईं। बडे-बडे अक्षरों में लिखा गया - "भारत के प्रधानमंत्री नेहरू का अभिवादन, स्वागतम्।"

नेहरू जी अपनी पुत्री इन्दिरा और अन्य साथियों के साथ मास्को हवाई अड्डे पर पहुँचे। उनके स्वागत में चारों ओर भारत और रूस के राष्ट्रीय झण्डे कंधे से कंधा मिलाकर लहरा रहे थे।

उस समय रूस के प्रधानमंत्री श्री बुलगानिन थे। उनके साथ सैकडों मंत्री, उच्चाधिकारी, राजदूत, गण्यमान्य व्यक्ति और पत्रकार पण्डित नेहरू का स्वागत करने हवाई अड्डे पर खडे थे। नेहरू जी ने सबसे हाथ मिलाया। मास्को के बालकों

ने उन्हें गुलदस्ते भेंट किए। बच्चों को देख नेहरू जी गद्गद हो उठे। उन्होंने बच्चों को भरे कण्ठ से धन्यवाद दिया। भारत और रूस के राष्ट्रीय गानों के तराने गूंज उठे। रूसी सेना ने नेहरू जी को सलामी दी।

जनता के अदम्य उत्साह, बच्चों के हंसमुख चेहरे और नेताओं द्वारा हार्दिक स्वागत को देखकर नेहरू जी अपनी यात्रा की थकान भूल गए।

सामने माइक लगा था। समस्त उपस्थित-गण उनकी आवाज सुनने को उत्सुक थे। नेहरू जी धीरे-धीरे माइक के सामने गए और पहली बार अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी में बोले-

"यहां सोवियत संघ में आने की मेरी इच्छा बहुत पहले से रही है। इस प्रसिद्ध और ऐतिहासिक नगर में मैं बहुत पहले आना चाहता था। मेरी इच्छा आज पूरी हुई है। यहाँ आकर मुझे बहुत खुशी हुई है। मैं अपने को एक यात्री समझता हूँ और द्यापकी सरकार तथा जनता के लिए महान शुभेच्छाए लिए हुए एक यात्री के रूप में ही यहाँ आया हूँ। मैं आपके विषय में और भी अच्छी तरह तथा और अधिक जानकारी प्राप्त करने यहाँ आया हूँ। और मेरा पूर्ण विश्वास है कि मेरे आने से हमारे सम्बन्ध और भी दृढ़ होंगे। इस हार्दिक एवं मैत्रीपूर्ण स्वागत के लिए मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।"

करतल ध्वनि और जय-जयकार से सारा हवाई अड्डा गूंज उठा।

फिर नेहरू जी तथा श्री बुलगानिन कार में बैठकर लेनिनग्राड मार्ग से उस स्थान को गए, जहाँ नेहरू जी के रहने का प्रबन्ध था। इस लम्बे मार्ग पर दोनों ओर रूसी जनता नेहरू जी के दर्शन करने खडी थी। सभी हाथ हिला हिलाकर तथा स्वागत का नारा लगाकर अपना हर्ष व्यक्त कर रहे थे और नेहरू जी मुस्कराते हुए सबके अभिवादन का उत्तर देते जा रहे थे।

पहले ही दिन नेहरू जी ने रूस की जनता का मन मोह लिया था और रूस की जनता ने नेहरू जी का।

नेहरू जी के स्वागत में रूस के सभी पत्र-पत्रिकाओं ने लेख प्रकाशित किए थे और शुभकामनाएं प्रकट की थीं। 'प्रावदा' ने लिखा था - "भारतीय गणराज्य के प्रधान श्री जवाहरलाल नेहरू आज हमारे देश में पधार रहे हैं। सोवियत संघ की जनता

अपने मित्र भारत के इस सुपुत्र का स्वागत करती है...।"

और भारत के ये सुपुत्र जवाहर जहां-जहां गए, जनता ने खुले दिल से उनका स्वागत किया। जगह-जगह 'भारत और रूस की मित्रता-जिन्दाबाद' के नारे लगते रहे।

नेहरू जी के साथ कुछ भारतीय पत्रकार भी थे। एक पत्रकार ने रूसी जनता के इस उत्साह को देखकर एक मजदूरिन से पूछा, "तुम नेहरू जी को देखकर इतना हर्ष क्यों प्रकट कर रही हो ?"

"क्योंकि नेहरू जी शान्ति के समर्थक हैं और रूसी जनता भी शान्ति चाहती है। इसीलिए उसे भारत से अत्यन्त प्रेम है," उस मजदूरिन ने उत्तर दिया।

नेहरू जी आलूस्ता गये। वहां से वे और उनके साथी एक छोटे से जहाज 'अंगारा' से क्रीमिया के किनारे-किनारे चले। 'आतेंक' तरुण पायनियरों की नाव उस जहाज के निकट पहुँची और नाव में बैठे सब बच्चे एक साथ चिल्ला उठे - "प्रधानमंत्री नेहरू आर्तेक में हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।"

जहाज किनारे लगा। एक हजार से भी अधिक बच्चे लाइन में खडे एक स्वर में बोले- "श्री नेहरू का अभिवादन है। प्यारे मेहमानों का स्वागत !!"

तरुण पायनियरों ने माचिग धुन बजाई। सबसे छोटी लडकी ने नेहरू जी को पायनियर की लाल टाई भेंट की। नेहरू जी ने उन्हें चन्दन की छडी दी। फूलों के तोरणों के बीच हंसते-गाते बच्चों को देख नेहरू जी का चेहरा खिल उठा।

एक लडकी ने पूछा, "क्या यह स्थान आपको पसन्द है ?" नेहरू जी ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "मुझे रूसी जनता

और खासकर रूसी बच्चे बहुत पसन्द हैं।" बच्चों के बीच भाषण देते हुए नेहरू जी ने कहा, "मैं यह मिलन कभी नहीं भूलूंगा और आपका अभिवादन भारत के

बच्चों तक पहुँचा दूंगा। मैं आशा करता हूँ कि जब आप और भारत के बच्चे बडे हो जाएंगे, तब आप लोग एक दूसरे के साथ सहयोग करेंगे।"

नेहरू जी अपनी पुत्री इन्दिरा और अन्य सहयोगियों के साथ मध्य एशिया में अश्काबाद, ताशकन्द, समरकन्द, आलम अता, रुबजोवस्क आदि अनेक स्थान देखने गये। जहां-जहां वे गये, जनता ने खुले दिल से उनका स्वागत किया। उनके लिए रूस न तो पर्दे के पीछे रहा और न लोहे के दरवाजों के अन्दर बन्द।

लौटते हुए नेहरू जी ने अपने उद्गार प्रकट किये - "हम इस महान देश की जनता के प्रति भारतीय जनता के अभिवादन एवं गुभेच्छायें प्रकट करने आये थे। अब हम अपने देश और अपनी जनता के प्रति आपके प्रेम और सद्भावों से लदे हुए घर वापस जा रहे हैं।"

लौटते हुए नेहरू जी ने अपने उद्गार प्रकट किये - "हम इस महान देश की जनता के प्रति भारतीय जनता का अभिवादन एवं शुभेच्छायें प्रकट करने आये थे। अब हम अपने देश और अपनी जनता के प्रति आपके प्रेम और सद्भावों से लदे हुए घर वापस जा रहे हैं।"

लौटते समय नेहरू जी वारसा, बेल्ग्रेड, लन्दन और काहिरा के रास्ते शान्ति का संदेश देते, पंचशील का महत्व बताते तथा भारत के भाल को उज्ज्वल करते हुए लौटे।

सारा भारत आँखें बिछाये उनके स्वागत को खडा था। उन्होंने विदेशों में भारत के सम्मान को जितना ऊंचा किया और अनेक देशों से जिस तरह मित्रता स्थापित की, उससे समस्त भारत उनका कृतज्ञ था। भारत उनका था और वे भारत के रत्न थे।

CHADDA

इसीलिये जब नेहरू जी भारत वापस पहुँचे, तो उस समय के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने सबसे पहले जो काम किया वह था नेहरू जी को 'भारत रत्न' का अलंकार प्रदान करना।

फिर भारत के निमंत्रण पर सोवियत रूस के प्रधानमंत्री मार्शल बुलगानिन तथा उनके सहयोगी श्री ह्यश्चोव आदि १८ नवम्बर १९५५ को भारत आए।

नई दिल्ली के पालम हवाई अड्डे से राष्ट्रपति भवन तक लाखों व्यक्तियों ने सड़कों को रंगबिरंगे फूल-पत्तों और कागजों से सजाकर, 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई' के नारे लगाकर तथा उन पर फूलों की वर्षा करके उनका स्वागत किया।

वे आगरा, जयपुर, बंगलौर, कलकत्ता आदि अनेक शहरों में गए और सब जगह उनका जो स्वागत हुआ, उससे सिद्ध हो गया कि भारत उनसे मित्रता बढ़ाने का कितना इच्छुक है।

उस समय श्री श्चोव ही मार्शल बुलगानिन के प्रमुख सहायक थे। वे कुछ गर्वीले और उत्साही प्रकृति के हैं।

भारत-यात्रा के दौरान एक दिन उन्होंने बड़े गर्व से नेहरू जी को बताया कि "रूसी वैज्ञानिकों ने एक ऐसा अस्त्र तैयार कर लिया है, जो एक साथ लाखों का विनाश कर सकता है।"

नेहरू जी शान्ति से उनकी गोंक्ति सुनते रहे। फिर उसी तरह गम्भीर रहकर, बिना उत्तेजित हुए शालीनता से बोले, "आप जानते हैं, मिस्टर ह्यश्चोव, कि लगभग २००० वर्ष पूर्व एक महान योद्धा ने इस भारत पर शासन किया था। उसका नाम सम्राट अशोक था। उसने अनेक युद्ध लड़े और अपने राज्य को बढ़ाया। उसके सेनापति हर युद्ध में विजयी होते और आकर बताते कि युद्ध में हजारों मारे गए हैं और अनेक बन्दी बना लिए गए हैं। अशोक आखिर इन हत्याकाण्डों से ऊब गया और उसका झुकाव बौद्ध धर्म की ओर होने लगा। एक दिन जब

सेनापति ने उसे बताया कि इस युद्ध में भीषण रक्तपात हुआ है, लाखों मारे गए और शत्रु का समस्त राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया है, तो अशोक यह सब न सह सका। वह अपनी गद्दी से उठ खडा हुआ, उसने अपनी म्यान से तलवार निकाली और उसके दो टुकडे कर डाले। फिर वह गरजकर बोला, "बस, बहुत हिंसा और रक्तपात हो चुका। अब आगे नहीं होगा। समस्त देश में शान्ति का साम्राज्य रहेगा।"

ख्ाश्चोव चुपचाप नेहरू जी का कथन सुनते रहे। कुछ न बोले। नेहरू जी ने उन्हें भारत के इतिहास की एक ऐसी घटना सुना दी थी, जो आज के युग में भी अनुकरण के योग्य थी।

नश्चोव उसी दिन समझ गए कि नेहरू जी कितने शालीन हैं और साथ ही अपने शान्ति के अभियान में कितने दृढ़ हैं।

रूसी नेता जब भारत की यात्रा कर वापस लौटे, तो वे पंचशील के सबसे बडे समर्थक बन चुके थे। उनके दिल में नेहरू जी के प्रति श्रद्धा थी, भारतवासियों के प्रति प्यार और भारत के प्रति सम्मान।

११

युद्ध की लपटें और शान्ति का कारवां

इधर नेहरू जी शान्ति का संदेश देने दुनिया के लगभग सभी देशों की यात्रा कर रहे थे, और उधर स्वार्थ-लोलुप देशों के युद्ध-उन्माद के कारण अनेक देशों में युद्ध की लपटें उठ रही थीं।

दुनिया में दो शक्तिशाली देश अमेरिका और रूस हैं। एक पूँजीवादी देश है और दूसरा साम्यवादी। दोनों ही एक-दूसरे के कट्टर शत्रु रहे। उनके प्रभाव से पूरी दुनिया दो गुटों में बंटती जा रही थी। नेहरू जी जानते थे कि इन दो गुटों में कभी भी तनातनी हो सकती है। और तब ? तब अणु-शस्त्रों से सारी दुनिया तबाह हो जाएगी । अतः वे दोनों देशों में मेल कराने का भरसक प्रयत्न करने लगे ।

इन्डोनेशिया और कोरिया के प्रश्न पर युद्ध की जो लपटें उठी थीं, उन्हें नेहरू जी ने ही शान्त किया था। फिर इन्डोचीन का प्रश्न उठ खडा हुआ । नेहरू जी ने भी अपनी बुलन्द आवाज से वहां की लपटों पर शान्ति का जल छिडका ।

उन्हीं के प्रयत्न से तीन बडे देशों का पहला शिखर सम्मेलन हुआ ।

मिस्र में स्वेज नहर है, जो भूमध्यसागर तक जाती है। इस पर पहले ब्रिटेन का अधिकार था । १९५६ में मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने उसका राष्ट्रीयकरण कर दिया। इससे ब्रिटेन, फ्रांस और इजराइल क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने मिस्र पर हमला कर देने के लिए अपनी फौजें भेज दीं। एक बार फिर विश्वयुद्ध छिडने की आशंका हो गई ।

इसी बीच रूस और हंगरी में मतभेद हो गया और रूस ने अपनी फौजें हंगरी पर आक्रमण करने के लिये भेज दीं। डर था कि यदि कोई भी पश्चिमी देश हंगरी की मदद करेगा तो विश्व- युद्ध छिड जाएगा ।

दो-दो जगह विश्वयुद्ध का भय और बीच में शान्ति के दूत नेहरू । समस्त शान्तिप्रिय राष्ट्र नेहरू की ओर देखने लगे ।

नेहरू जी स्वयं चिन्तित थे। क्या होगा इस दुनिया का ? किस तरह बुझे यह युद्ध की ज्वाला ? उन्होंने लोकसभा में बडे दुखी स्वर में कहा- "हम मिस्र में होने वाली घटनाओं से बहुत

दुखी हैं। इतने ही दुखी हम हंगरी में होने वाली घटनाओं से हैं। दुनिया भर में यदि कहीं भी स्वतंत्रता पर हमला होता है, तो हमारा दुखी होना स्वाभाविक है।"

फिर समस्त शान्तिप्रिय देश नेहरू के साथ हो गए। ब्रिटेन, फ्रांस, इजरायल और रूस का आगे बढ़ना बन्द हो गया। युद्ध एक बार फिर टल गया।

लेकिन इस तरह कब तक युद्ध की लपटें उठेंगी और उन्हें शान्त किया जाएगा? नेहरू जी ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि वे गुटों से अलग रहेंगे; किसी भी सैनिक संधि में भाग नहीं लेंगे और युद्ध में किसी का भी पक्ष नहीं लेंगे। अनेक छोटे-छोटे देश इसी प्रकार गुटों से अलग रहना चाहते थे लेकिन इन शक्ति- शाली देशों से डरते थे। नेहरू जी के नेतृत्व में वे सब देश गुटों से अलग हो गए।

गुटों से अलग रहने वाले इन देशों को मिलाकर नेहरू जी ने 'शान्ति क्षेत्र' बनाया। ऐसा क्षेत्र जहां युद्ध न हो, जहां समस्त देश पंचशील का पालन करें और शान्ति तथा सह-अस्तित्व से रहें। नेहरू जी का विचार था कि इस 'शान्ति क्षेत्र' को धीरे-धीरे समस्त दुनिया में फैला दिया जाए। इसके लिए नेहरूजी ने अनेक देशों की शान्ति-यात्राएं कीं।

नेहरू जी का भरसक प्रयत्न था कि रूस और अमेरिका में मित्रता हो जाए और वे आपस में लडना तथा दुनिया में युद्ध का भय पैदा करना छोड दें। इसीलिए १९६१ में रूस ने जब अणुबम परीक्षण किया तो नेहरू जी सीधे रूस पहुँचे और वहां प्रधानमंत्री श्री ह्यश्चोव से मिले। ह्यश्चोव से उनकी जो बातें हुईं, उसी के परिणामस्वरूप रूस ने फिर दुबारा अणु-परीक्षण नहीं किया।

उधर अमेरिका भयभीत हो गया था। उसने अणु-बमों से बचने के लिए 'रक्षा-स्थल' बनाने शुरू कर दिए थे। नेहरू जी

यह सुनकर बहुत दुखी हुए। वे अमेरिका गए।

अमेरिका में केनेडी नए-नए राष्ट्रपति बने थे। वे नेहरू जी के बहुत भक्त थे। उन्होंने अमेरिका की सीनेट में राष्ट्रपति पद से २९ जनवरी १९६१ को पहली बार राष्ट्र के नाम सन्देश दिया था, और उसमें कहा था- "यहीं इसी सदन में १४ वर्षों तक लगातार बैठकर मैंने दोनों सदनों के सदस्यों से प्रेरणा प्राप्त की है। मैं नेहरू के आदर्शवाद से बहुत प्रभावित हुआ

अमेरिका में नेहरू जी का धूमधाम से स्वागत हुआ। अब वे उन विश्व नेताओं में थे, जिन्हें देखने के लिए और जिनके एक-एक शब्द सुनने के लिए लाखों की भीड़ टूट पड़ती है।

हवाई अड्डे पर ही एक पत्रकार ने नेहरू जी से पूछा, "भारत जैसे तटस्थ देश विश्व-शान्ति के लिए क्या योगदान कर सकते हैं?"

"शान्ति और सहयोग के वातावरण का प्रसार," नेहरू जी ने उत्तर दिया।

अमेरिका में राष्ट्रपति केनेडी और उनमें घण्टों बातें हुईं।

तीसरी बार ५ नवम्बर १९६१ को जब केनेडी ९० मिनट तक बात करने के बात उन्हें कार तक छोड़ने बाहर आये तो फोटोग्राफरों और पत्रकारों ने दोनों को घेर लिया।

पत्रकारों ने पूछा, "आप लोगों की बातचीत कैसी रही?" "हम लोगों की बातचीत बहुत बढ़िया रही," केनेडी ने उत्तर दिया।

नेहरू जी ने भी कहा, "हमारी बातचीत बड़ी सुन्दर रही।"

राष्ट्रपति केनेडी ने अपने उद्गार प्रकट किये - "विश्व में नेहरू जी जैसा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का हामी और कोई नहीं

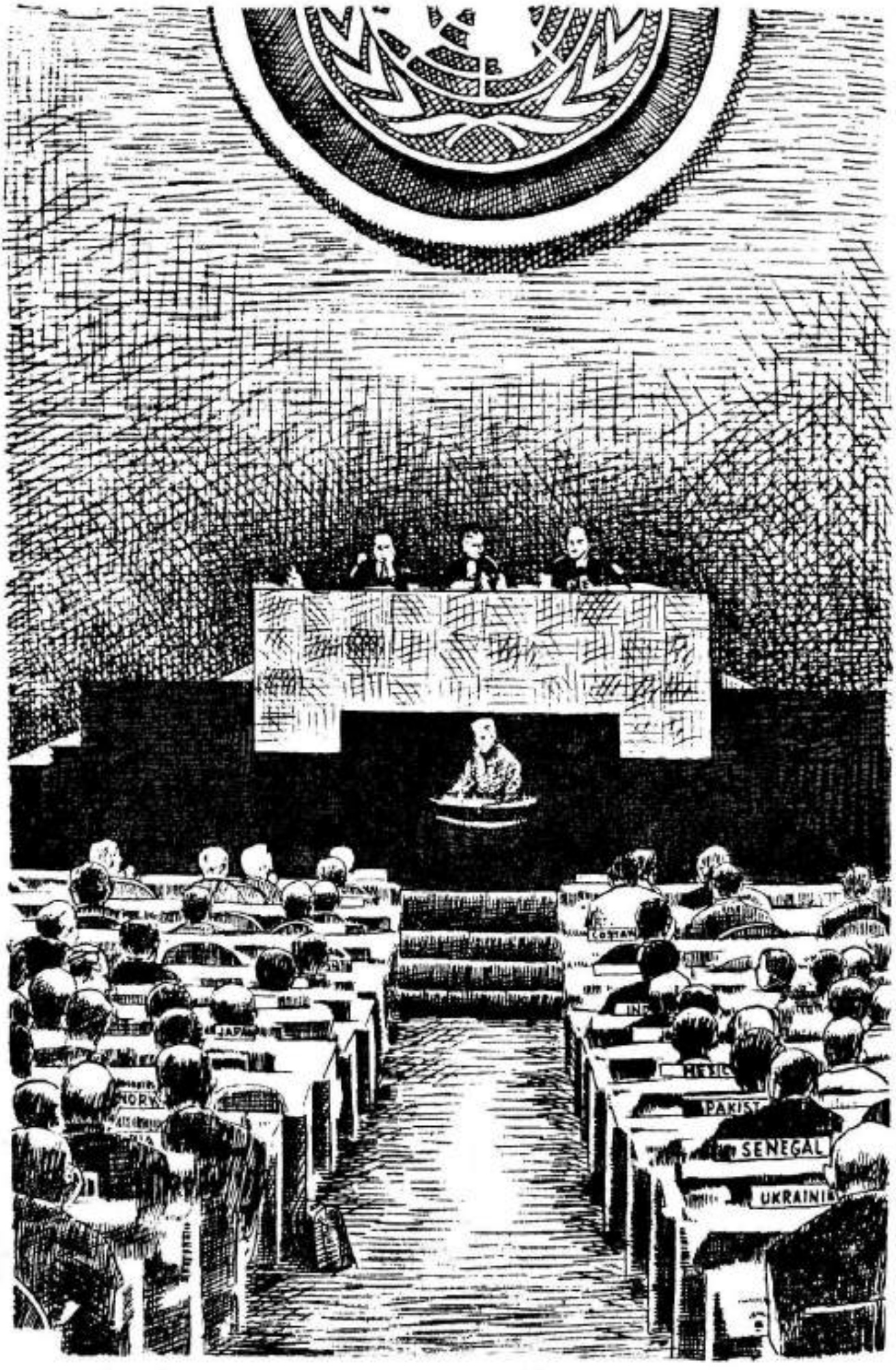
SENEGAL
UKRAINE

है।... नेहरू जी का मैं आदर करता हूँ। वार्ता के बाद उनके प्रति मेरी श्रद्धा और बढ़ गई है।

१० नवम्बर १९६१ को नेहरू जी जब संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में भाषण देने गए, तब वहाँ तिल रखने को जगह नहीं थी। दुनिया की उस प्रमुख प्रतिनिधि संस्था में नेहरू जी ने शान्ति का सन्देश देते हुए कहा - "आधुनिक युग में जब खतरनाक से खतरनाक अणुबम तैयार हो चुके हैं, तब संसार के सामने निरस्त्रीकरण के अलावा और कोई मार्ग नहीं है।..... दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है, जो युद्ध चाहता हो। रूस और अमेरिका जैसे बडे-बडे देश, जो तरह-तरह के अणु-अस्त्रों से लैस हैं, वे भी युद्ध नहीं चाहते। तो फिर क्या बात है कि युद्ध की सम्भावना को रोकने में हम सफल नहीं हो सके हैं?"

शान्ति के दूत का यह प्रश्न ऐसा था, जिसका उत्तर कोई नहीं दे पा रहा था। उन्होंने फिर रूस के अणु-परीक्षण, अमेरिका के रक्षा-स्थल और दुनिया में फैलने वाले भय का जिक्र करते हुए बडे दुखी स्वर में कहा- "यह बडे दुख की बात है कि हम इस भय को समाप्त कर देने के बजाय, चूहों की तरह जमीन के नीचे दुबकने और रहने की सोचते हैं।"

दुनिया के बडे-बडे नेताओं के बीच यह विश्व-नेता बिना झिझके, बिना किसी भय के सभी युद्ध-लोलुपों को भिडकियाँ दे रहा था और सब शान्त होकर सुन रहे थे।

नेहरू जी ने स्पष्ट घोषणा की "हमारे सामने दो ही रास्ते हैं- एक तो शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से रहना और दूसरा अपना अस्तित्व मिटा देना।"

कितना सच कहा था उस विश्वनेता ने। इस दुनिया में अब केवल मिलकर ही रहा जा सकता है। यदि मिलकर नहीं रह

सकते तो युद्ध होगा ही और युद्ध हुआ तो समस्त मानव-जाति इस धरती से उठ जाएगी।

नेहरू जी की इसी घोषणा के फलस्वरूप अणु-परीक्षण रोकने के लिए बडे-बडे देशों ने सन्धियाँ कीं।

फिर नेहरू जी के प्रयत्न से ही अमेरिका के राष्ट्रपति और रूस के प्रधानमन्त्री में सीधी वार्ता के लिए वाशिंग्टन से मास्को तक 'हाट लाइन' बिछाई गई। इस 'हाट लाइन' से वे बिना किसी रुकावट के सीधे बात कर सकते थे और तुरन्त निर्णय ले सकते थे।

यह जवाहरलाल ही थे, जिनके जौहर से यह सब हुआ। भारत आगे बढ़ता गया और दुनिया युद्ध की लपटों से बचती गई।

जो नेहरू अब तक हर बार शान्ति स्थापना की वकालत करते थे, वे धीरे-धीरे अनेक देशों के मतभेद कम करने के लिए निर्णायक बन गये थे। बडे-बडे देशों के नेता कोई भी बडा कदम उठाने से पहले सोचने लगे थे कि, 'इसका नेहरू पर क्या प्रभाव पडेगा?' 'नेहरू इस बारे में क्या कहेंगे ?' नेहरू पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?'

१२

अभी चलना है मीलों दूर

जीवन ७१ से भी अधिक वसन्त देख चुका था और ७१ से भी जी अधिक पतझड। लेकिन अनन्त पथ का यह पथिक चला ही जा रहा था, तेज कदमों से। कहीं थकान नहीं, आराम नहीं, क्षण भर की भी फुरसत नहीं।

सारा देश, नहीं, सारा संसार उसकी ओर ताक रहा था- उसके मार्गदर्शन के लिए, उसके शान्ति के संदेश के लिए, उसके प्यार के लिए, उसके आदेश के लिए। और वह अपना एक-एक क्षण इस संसार के लिए होम रहा था। नीलकण्ठ भगवान शिव की तरह समस्त संसार का गरल उसने अपने कण्ठ में धारण कर लिया था और संसार को अमृत लुटाता हुआ मुस्करा रहा था। कितनी स्नेहिल थीं वे आँखें, कितनी निश्छल थी, वह मुस्कान।

भारत की राजधानी दिल्ली और दिल्ली का वह क्षेत्र तीन मूर्ति। इसी तीन मूर्ति में प्रधानमंत्री भवन।

भोर हो गई है। लान में नन्हीं-नन्हीं ओस-भीगी दूब चमक रही है, पेडों की पत्तियों में कम्पन आ गया है और चिडियां चहचहा रही हैं। सूर्य भगवान की गुलाबी किरणें उस विशाल भवन के ऊपर की मंजिल में खिडकियों से छनकर कमरे के अन्दर तक पहुँच गई हैं। समस्त वातावरण में हल्का-हल्का मीठा- मीठा शाश्वत नाद गूंज रहा है- "मैं अस्तित्ववान हूँ।"

उस शाश्वत नाद से और प्रभात के आलोक के मधुर संस्पर्श से जवाहरलाल जाग गए हैं। मानो शास्ता-विधाता की इस माया को देखने के लिए विस्मय से उनकी आँखें खुल गई हों। वे तुरन्त बिस्तर से उठ जाते हैं।

यह नए दिन का आरम्भ है। कल जहाँ तक बढ़े थे, आज उससे आगे बढ़ना है। वे एक बार कमरे के चारों ओर देखते हैं। सामने महात्मा गांधी का चित्र टंगा है, मेज पर भगवद्गीता रखी है और उसकी बगल में भगवान बुद्ध की करुणा मूर्ति। महात्मा गांधी ने उन्हें रास्ता दिखाया; भगवद्गीता ने कर्मयोग का संदेश दिया और भगवान बुद्ध ने करुणा का। जवाहरलाल उनकी ओर देखकर फिर बाहर देखने लगते हैं, खिडकी से बाह्र। दूर, बहुत दूर तक उनकी दृष्टि चली चाती है, अन्तरिक्ष

से भी बहुत दूर। क्षण भर के लिए एक कल्पना, एक स्वप्न उनके मायावी लोचनों में आकर ओझल हो जाती है।

दैनिक कार्यों से निबटकर वे शीर्षासन करते हैं और स्नान- घर की ओर बढ़ते हैं, तो एक पुरानी बात याद आ जाती है। वे मुस्कराते हैं और जल्दी से स्नानघर में घुस जाते हैं।

काफी पुरानी बात है। तब महात्मा गांधी जीवित थे। एक दिन नेहरू जी उनके निकट बैठे थे। गांधी जी को विनोद सूझा। उन्होंने पूछा, "मैंने सुना है, आजकल तुम सिर के बल चलते हो।"

"सिर के बल नहीं चलता," नेहरू जी ने तत्काल उत्तर दिया, "शीर्षासन करता हूँ। इससे दिमाग की ताकत बढ़ती है।"

"लेकिन तुम्हारा दिमाग तो बढ़ा नहीं मालूम होता," बापू ने विनोद किया।

"ठीक है, अब बकरी का दूध पिया करूंगा," नेहरू जी ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

बापू खिलखिलाकर हंस पडे। उनकी आंखों में वात्सल्य छलक श्राया था। नेहरू जी को उनसे पिता जैसा नहीं, बल्कि मां जैसा प्यार मिला था। हाय ! बापू कहां चले गए तुम अब। किससे मिलेगा मुझे इतना प्यार !

स्नानघर से लौटते हैं तो मन कुछ भारी-सा हो जाता है- बापू की याद के कारण।

वे जल्दी-जल्दी अपने कार्यालय के कमरे में पहुँच जाते हैं। कल रात काफी देर तक उन्होंने कुछ पत्र लिखाये थे, कुछ संदेश और कुछ आवश्यक निर्देश। वे सब टाइप होकर मेज पर रख दिए गए हैं।

रूस के राष्ट्रपति को निमंत्रित करने के बारे में एक टिप्पणी है। ईरान के शाह के जन्मदिवस पर शुभकामना संदेश है;

सूडान के राष्ट्रीय दिवस पर बधाई संदेश है; मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने जो व्यक्तिगत पत्र भेजा था, उसका उत्तर है; भारत- चीन सीमा-विवाद धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा है। चीनी विमानों ने भारतीय सीमा का अनेक बार उल्लंघन किया है। इस बारे में चीन सरकार को विरोधपत्र भेजा जा रहा है। योजना-आयोग के लिए कुछ आवश्यक निर्देश हैं। कुछ संसद सदस्यों ने अपने इलाके की समस्याएं लिख भेजी थीं, उनका उत्तर है।

एलकाइन पार्क (अमेरिका) की श्रीमती एच० ब्रिकलिन ने पत्र के साथ एक डालर का चैक भेजा है। पत्र में लिखा है- "प्रिय प्रधानमंत्री जी, इस धन से उस व्यक्ति के लिए रोटी खरीदी जाए, जिसे भूखा मरने से रोका जा सकता है।" १० वर्ष की लड्की और ८ वर्ष के लड्के की यह मां श्रीमती ब्रिकलिन हर सप्ताह एक डालर का चैक भेज देती है। प्रधानमंत्री और भारतीय जनता के प्रति उसके भावपूर्ण प्रेम और सहानुभूति से जवाहरलाल भावविभोर हो जाते हैं। उसे भी उत्तर दिया जा रहा है।

गढ़वाल जिले के नौगांव के छात्र रैवाधर को ६०० रु० भेजने का आदेश है। यह बालक आठवीं कक्षा तक छात्रवृत्ति के बल पर पढ़ता रहा और फिर पढ़ाई यकायक रुक गई। गरीबी के कारण उसे दिल्ली आकर घरेलू नौकरी करनी पडी थी। इसी बीच वह नेहरू जी से मिला था और उन्हें अपनी दुख-गाथा सुनाई थी। नेहरू जी का कोमल हृदय पिघला और अब उस बालक को आगे पढ़ने के लिए ६०० रु० का बैंक ड्राफ्ट भेजा जा रहा है। अन्य अनेक बच्चों के पत्र हैं- अपने 'चाचा नेहरू' के नाम। सबका उत्तर लिख दिया गया है।

जवाहरलाल हरेक कागज को गौर से पढ़ रहे हैं; उनमें कुछ सुधार करते हैं, विराम-अर्धविराम लगाते हैं और हस्ताक्षर कर

देते हैं।

डेढ़ घण्टा बीत गया है। साढ़े सात बज गए हैं। जवाहरलाल उठकर अपने कमरे में चले जाते हैं। चूड़ीदार पाजामा और चुस्त शेरवानी पहनते हैं। हीरालाल माली लाल गुलाब की कली रख गया है। उसे अपने बटन होल में लगाते हैं और खिले गुलाब की तरह सीढ़ियां उतरकर नीचे बैठक के कमरे में चले

जाते हैं। अनेक लोग मिलने आए हुए हैं, कुछ अकेले और कुछ भुण्डों में । विदेशी सैलानी, किसानों की टोली, गांव के छोटे-से स्कूल के कुछ छात्र अपने अध्यापक के साथ, बीमार व्यक्ति, सताई हुई औरतें, भ्रष्ट अधिकारियों की शिकायत करने वाले कुछ व्यक्ति, अपने हाथ से बुना पसमीना भेंट करने के लिए आया हुआ वृद्ध कश्मीरी, अपनी संस्था के लिए सहायता माँगने वाले कुछ कार्यकर्ता, हर प्रकार के लोग मिलने आये हैं और जवाहरलाल सबसे मिल रहे हैं, सबकी सुन रहे हैं। वे सबके मसीहा हैं, सबका दुख दूर करने को तत्पर हैं, सबसे घुल-मिलना चाहते हैं।

नाश्ते का समय हो गया है। जवाहरलाल खाने के कमरे की ओर बढ़ रहे हैं। इन्दिरा जी एक संसद सदस्या के साथ पहले ही से बैठी हैं। बाहर किसानों की टोली गद्गद स्वर में 'नेहरूजी जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए बाहर जा रही है। वे बहुत खुश हैं। आज देश के कर्णधार उनसे गले मिले । नेहरू जी मुस्कराते हुए नाश्ते के कमरे में पैर रखते हैं। इन्दिरा जी और संसद सदस्या खड़ी हो गई हैं। जवाहरलाल जी एक कुर्सी खींच कर बैठ जाते हैं ।

"पण्डित जी," 'संसद सदस्या धीमे से कहती हैं। जवाहर-

लाल टोस्ट पर हलका-सा मक्खन लगाते हुए उनकी ओर देखते हैं और फिर अपने गम्भीर विचारों में खो जाते हैं। संसद सदस्या नारी समाज पर होने वाली ज्यादतियों के बारे में बता रही हैं।

फिर दो और संसद सदस्य पहुँच जाते हैं। जवाहरलाल उन्हें भी अपने पास बिठा लेते हैं और चाय के प्याले पेश करते हैं। "पण्डित जी, मैं आज खास तौर पर यह बताने आया हूँ कि..." एक संसद सदस्य कुछ उत्तेजित होकर बोलते हैं।

जवाहरलाल अपने हाथ से टोस्ट पर मक्खन लगाकर मुस्कराते हुए उनकी ओर बढ़ाते हैं। संसद सदस्य उस निष्कलंक मुँह को, उस प्यार भरी दृष्टि को देखते रह जाते हैं; जबान बन्द हो जाती है, हाथ टोस्ट की ओर बढ़ता है।

नाश्ता समाप्त हो चुका है। जवाहरलाल थोडी देर टहलने के लिए बाहर लान की ओर बढ़ रहे हैं।

"चाचा नेहरू, जिन्दाबाद," कुछ बच्चे उन्हें देख चिल्ला पडते हैं। धीर-गम्भीर मुख पर हल्की-हल्की मुस्कान आ जाती है। धीमे कदम कुछ तेज हो जाते हैं। अब वे बच्चों के बीच घुल- मिल गए हैं। बच्चों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया है।

"आयो, तुम्हें एक जानवर दिखाऊं," जवाहरलाल कह रहे हैं, मानो एक बच्चा दूसरे बच्चे को अपनी कोई अनोखी चीज दिखाना चाहता हो ।

बच्चे उनके साथ उस ओर बढ़ते हैं, जहां उनका प्रिय 'पाण्डा' है। यह भी अजीब जानवर है, जो उन्हें आसाम में भेंट में मिला है। जवाहरलाल दस्ताना पहनकर उस घेरे में चले जाते हैं, जहां पाण्डा है। बच्चे बाहर ही रह जाते हैं। 'पाण्डा' पेड के तने पर बैठा है। जवाहरलाल को देखकर वह कुछ बोली बोलता है, मानो अपने रहनुमा का स्वागत कर रहा हो। जवाहर- लाल उसकी पीठ सहलाते हैं और फिर उसे उतारकर बच्चों

के बीच ले आते हैं। बच्चे कौतुक से उस अनोखे जानवर को देख रहे हैं।

"अच्छा बताओ, यह कौन जनावर है?" जवाहरलाल पूछते हैं।

"यह भालू है," एक बच्चा उत्तर देता है।

"वाह, खूब पहचाना," जवाहरलाल हँसते हैं, "अरे, कहीं भालू ऐसा होता है ?"

वह बच्चा खिसिया जाता है।

दूसरा बच्चा अपना ज्ञान बघारता है, "नहीं, यह उदबिलाव है।"

"उदबिलाव ? अरे, उदबिलाव तुमने देखा भी है," जवाहर- लाल फिर हँस पड़ते हैं, "यह न भालू है, न उदबिलाव । यह भालू और उदबिलाव के बीच की किस्म का जानवर है। जब में आसाम गया था, तो वहाँ मुझे भेंट में मिला था ।"

बच्चे हंस पड़ते हैं- निश्छल हंसी, निर्विकार मासूम हंसी । जवाहरलाल भी हंसते हैं- बच्चों की तरह ।

"चाचा जी, हम आप के साथ तस्वीर खिचवायेंगे, "एक बच्चा मचलकर कहता है।

"अच्छा खिचवा लो।"

फोटो खिंचती है।

"चाचा जी, हमारी आटोग्राफ-बुक में कुछ लिख दीजिए," एक बच्चा अपनी आटोग्राफ-बुक उनकी ओर बढ़ाता है।

जवाहरलाल उस पर लिख देते हैं।

घड़ी की सुई आगे बढ़ती जा रही है। साढे नौ बज चुके हैं। बच्चों को छोड़ने का जी नहीं चाह रहा है। बच्चे भी उन्हें नहीं छोड़ना चाहते । लेकिन काल की यह गति ?

"देखो, मेरे लिए बहुत-सा काम पड़ा हुआ है," जवाहरलाल उन्हें समझाते हैं, "अब मुझे दफ्तर जाना है। जय हिन्द ।"

"जय हिन्द," बच्चे भी चिल्लाते हैं। जवाहरलाल तेजी से अपने कमरे की ओर बढ़ते हैं।

जवाहरलाल की कार चली जा रही है- विदेश मंत्रालय की ओर। वहां स्वीडेन के एक शिष्टमण्डल से मिलना है; विदेशी मुद्रा का अध्ययन करने के लिए आए हुए विश्व बैंक के प्रतिनिधि से मिलना है; जापान के कुछ कृषि विशेषज्ञों से मिलना है; रूस के राजदूत भी मिलने आयेंगे; अमेरिका के राजदूत अपने राष्ट्र- पति का पत्र लेकर आएँगे।

इन सबसे मिलकर जवाहरलाल की कार अब सीधे बढ़ रही है-लोकसभा की ओर। आज ११ बजे उन्हें अनेक प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

लोकसभा का प्रश्नोत्तर काल। प्रधानमंत्री पर प्रश्नों की बौछर हो रही है। चीन ने भारत के जो इलाके हडप लिए हैं, उन्हें वापस लेने के लिए क्या किया जा रहा है ? चीन के विमानों ने कितनी बार भारतीय सीमा का उल्लंघन किया ? क्या उसे विरोधपत्र भेजा गया है, यदि नहीं तो क्यों? पाकिस्तान से सिंधु पानी समझौते की क्या स्थिति है ? क्या तटस्थ राष्ट्र सम्मेलन में कश्मीर का प्रश्न उठाया जाएगा ?

अनेक प्रश्न हो रहे हैं। जवाहरलाल शालीनता से उत्तर देते जा रहे हैं। कभी-कभी कोई संसद सदस्य बौखला जाता है। जवाहरलाल फिर भी नम्रता से उत्तर देते हैं। वह नहीं मानता, तेजी में आ जाता है। तब जवाहरलाल एक व्यंग्य बाण छोडते हैं। संसद सदस्य परास्त हो जाता है।

प्रश्नोत्तर-काल समाप्त हो गया है। नेहरू जी वहीं अपने कक्ष में चले जाते हैं। मुलाकात करने वाले संसद सदस्यों का तांता लग गया है। वे एक-एक करके आ रहे हैं। बहुत से कागज सामने रखे हैं, अनेक रिपोर्ट हैं, अनेक विवरण, अनेक निमंत्रण।

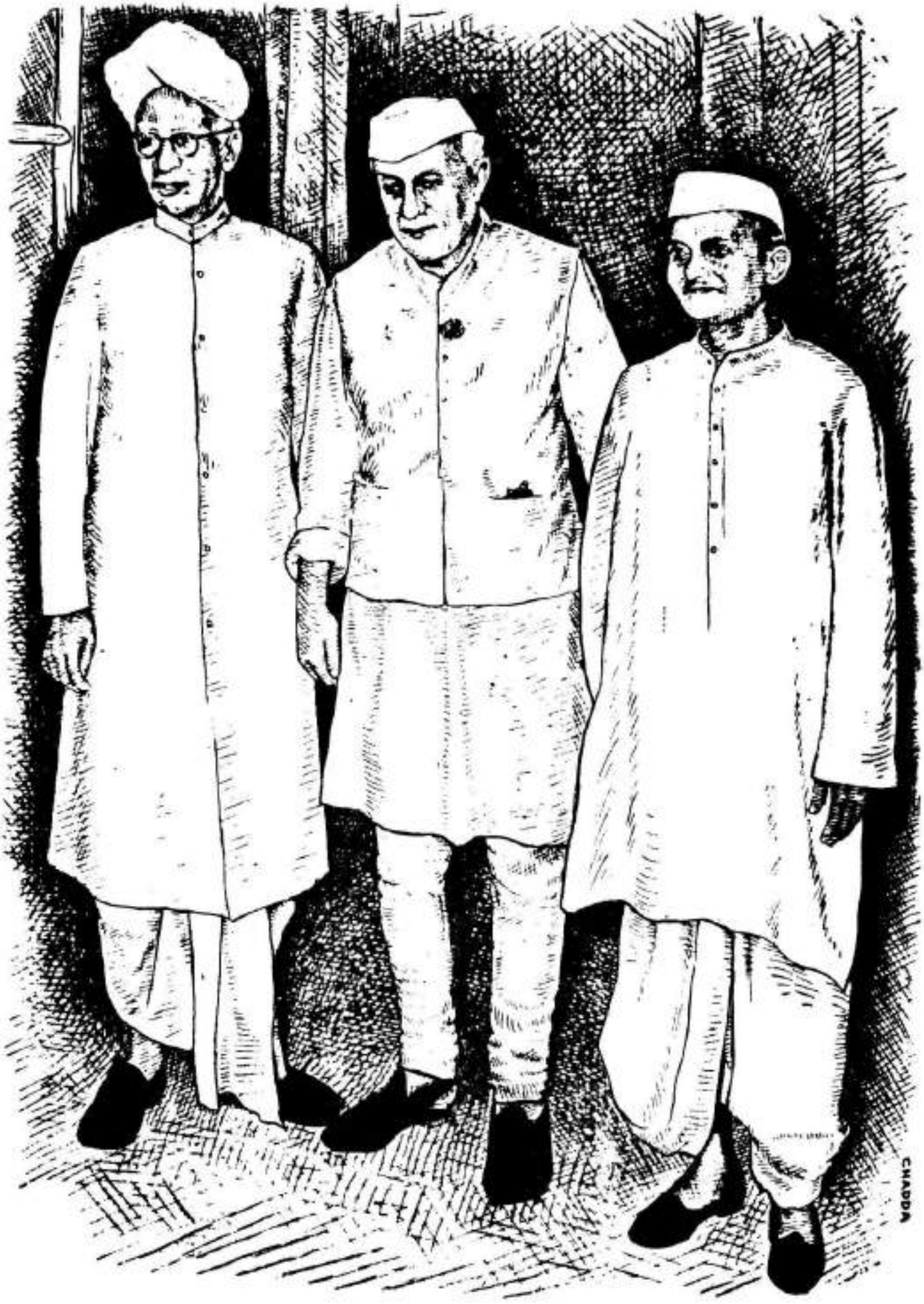
CHADDA

जवाहरलाल सबको गौर से देख रहे हैं। सहायक सचिव उनके काम में हाथ बंटा रहे हैं।

डेढ़ बजने वाला है। जवाहरलाल जी को घर पहुँचना है। तीन राज्यों के मुख्य मंत्रियों को दोपहर के खाने पर बुला रखा है। नेहरू जी तेजी से कमरे से बाहर निकलते हैं। लाबी में ४-५ पत्रकार उन्हें नमस्ते करते हैं। नेहरू जी मुस्कराकर उत्तर देते हैं। ये पत्रकार, जहाँ देखो वहीं मौजूद । गांधी जी ने कहा था कि, 'अगर मैं नरक में भी जाऊं, तो भी वहाँ मुझे पत्रकार अवश्य मिल जाएँगे ।'

एक पत्रकार आगे बढ़ आया है। कहता है, "आजकल बनारस विश्वविद्यालय में बडी गडबढ़ी चल रही है। उसके बन्द होने तक की नौबत आ गई है।"

"हूँ", नेहरू जी मुस्कराते हैं। पत्रकार कुछ गहरी बात जानना चाहता है, इसीलिए भूमिका बाँध रहा है। जाने कौन-सी थाह लेने की इच्छा है।

"क्या सरकार बनारस विश्वविद्यालय को कहीं और ले जाएगी ?" पत्रकार पूछ रहा है। अच्छा, तो पत्रकार यह जानना चाहता है। शायद लोगों ने

कुछ अफवाहें उडा दी हैं। "जी, आप कहें तो बनारस को ही कहीं और ले जाएँ," वे पत्रकार की ओर देखकर कहते हैं।

पत्रकार ठिठक जाता है और नेहरू जी कार के अन्दर घुस जाते हैं। ड्राइवर खटाक से कार का दरवाजा बन्द कर देता है। नेहरू जी खिसयाये पत्रकार को देखकर मुस्कराते हैं। पत्रकार भी होठों पर जबरदस्ती मुस्कान लाता है। वह नेहरू जी की थाह लेने आया था, बैरंग लौट रहा है।

कार तेजी से तीन मूर्ति के फाटक से अन्दर घुसकर पोर्च में

रुक जाती है। चपरासी कार का दरवाजा खोलता है। नेहरू जी तेजी से निकलकर खटाखट सीढ़ियां चढ़ते हैं और खाने के कमरे में पहुँच जाते हैं। तीनों मुख्य मन्त्री खडे होकर अभि-वादन करते हैं। नेहरू जी मुस्कराकर हाथ मिलाते हैं।

खाना चल रहा है और उसके साथ बातें भी। नेहरू जी एक-एक से उनके बारे में, उनके परिवार के बारे में, उनके राज्य की स्थिति के बारे में पूछ रहे हैं। मुख्य मन्त्री उत्तर देते जा रहे हैं।

मुख्य मन्त्रियों को विदा कर नेहरू जी कुछ देर आराम करने चले जाते हैं। अभी तीन बजे राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक है; फिर दिल्ली पब्लिक स्कूल के वार्षिक समारोह में जाना है, फिर राष्ट्रपति भवन ।

नेहरू जी आराम करने लेटते ही हैं कि किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई देती है। वे खिडकी के पास पहुँचते हैं। नीचे देखते हैं कि कुछ मजदूरिनें लान की घास छील रही हैं। दूर पेड के नीचे बच्चा रो रहा है।

नेहरू जी सीधे नीचे उतरते हैं। गन्दे चिथडों में लिपटे उस बच्चे को गोद में उठा लेते हैं। बच्चा चुप हो जाता है। टुकर- टुकर उनकी ओर देखने लगता है। नेहरू जी मुस्कराते हैं; ये निश्छल मासूम आँखें । मजदूरिन दौडती हुई आती है। बच्चे को ले लेती है। हाय ! उसके कारण आज पण्डित जी आराम भी न कर पाये ।

लेकिन नेहरू जी को धाराम न करने का कोई मलाल नहीं । उन्होंने चिथडों में लिपटे उस मैले-कुचैले गरीब बच्चे की आँखों में पढ़ा है- प्यार का सन्देश; उसके कपडों में देखी है देश की गरीबी - देश की गरीबी दूर करनी ही होगी। ये गन्दी बस्तियाँ। इन्हें नए साफ-सुथरे घरों में बदलना ही होगा। ये मासूम गरीब

बच्चे। ये ही तो देश की दौलत हैं, - भावी नागरिक।

पौष्टिक खाना, कपडा, और शिक्षा। राष्ट्रीय विकास परि- षद की बैठक में नेहरू जी का भाषण चल रहा है। यह वह परिषद है, जो योजना आयोग की योजनाओं को स्वीकार करती है, उन्हें चलाती है।

चार बजने वाले हैं। नेहरू जी की कार दिल्ली पब्लिक स्कूल की ओर बढ़ रही है। बच्चे कतारों में खडे हैं। "चाचा नेहरू जिन्दाबाद" के नारे लगा रहे हैं।

बच्चों के बीच नेहरू जी फिर बच्चे बन गये हैं। वे सीधे मंच पर न जाकर बीच में ही उतर गये हैं। बच्चों ने उन्हें घेर लिया है। हंसी, खिलखिलाहट और कहकहे। प्रबन्धक परेशान। निजी सचिव बार-बार बताना चाहता है कि ठीक ५ बजे राष्ट्रपति भवन पहुँचना है।

नेहरू जी जल्दी-जल्दी मंच पर पहुँचते हैं। भाषण होता है और फिर मंच से कूदकर "जयहिन्द" कहते हुए चल देते हैं। केवल ३० मिनट का कार्यक्रम लेकिन स्कूल के बच्चों पर 'चाचा नेहरू" की अमिट छाप।

जवाहरलाल राष्ट्रपति भवन पहुँच गये हैं। यूगोस्लाविया के नये राजदूत राष्ट्रपति के सामने अपने परिचय-पत्र पेश कर रहे हैं। नेहरू जी गुमसुम बैठे हैं। जाने कितने विचार, कितनी समस्यायें दिमाग में चक्कर काट रही हैं।

हल्का चाय-पान। नेहरू जी उसी तरह गम्भीर। थोडी- सी बातें नए राजदूत के साथ, फिर वही चुप्पी।

अब कार सीधे विज्ञान-भवन की ओर दौड रही है। वैज्ञा- निकों का सम्मेलन चल रहा है। प्रो० हाल्डेन, डा० कोठारी श्रादि अनेक उच्चकोटि के वैज्ञानिक पहुंचे हुए हैं।

नेहरू जी का भाषण चल रहा है- "आज के युग में वैज्ञा- निकों का बडा महत्व है। उनकी जिम्मेदारी बहुत अधिक है। जब देश में अधिक से अधिक संख्या में वैज्ञानिक तथा इंजीनियर तैयार होंगे, तभी उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न साकार हो सकता है।... आज हम एक संक्रमण काल से गुजर रहे हैं. यदि हम विनाश से बचना चाहते हैं तो हमें शान्ति का मार्ग अपनाना होगा...।"

अब कार तेजी से लौट रही है, तीन मूर्ति की ओर। ७ बज रहे हैं। अमेरिका के प्रसद्धि पत्रकार नार्मन काजिन्स इन्तजार कर रहे होंगे।

गाडी फिर तीन मूर्ति के पोर्च पर रुक गई है। चपरासी दरवाजा खोलता है। पास ही प्राइवेट सेक्रेटरी भी खडा है।

"यह ड्राइवर थक गया है। यह अब आराम करे। इसकी जगह मुझे दूसरा ड्राइवर दे दो। शायद मुझे अभी फिर जाना पडे," नेहरू जी उससे कहते हैं।

"आप भी तो थक गये हैं," प्राइवेट सेक्रेटरी कह रहा है। "अरे, मेरे थकने की कोई बात नहीं," नेहरू जी मुस्कराकर कहते हैं, "इस ड्राइवर को आराम मिलना चाहिए।"

बैठक के कमरे में जाकर नेहरू जी गद्दीदार आराम कुर्सी पर बैठ जाते हैं। दिन भर की दौडधूप के बाद भी चेहरे पर शान्ति और ताजगी है। थकान के कहीं कोई चिन्ह नहीं। नार्मन काजिन्स भी आकर बैठ गये हैं। बातें चल रही हैं, बिल्कुल अनौपचारिक घरेलू ढंग पर।

काजिन्स इण्टरव्यू लेने आये थे, लेकिन नेहरू जी ही उनसे पूछ रहे हैं. "आप पहले भी भारत आये थे। इस बार आपको भारत में क्या फरक लगा ?"

"अब लोगों का जीवन-यापन अधिक ऊँचा दीखता है," काजिन्स उत्तर दे रहे हैं, "सरकार की आलोचना भी पहले से

अधिक पढ़ने-सुनने को मिलती है। हो सकता है, जनता की हालत में जो सुधार हुआ है, वही इसका कारण हो, पर मेरा ख्याल है कि अखबारों से आपको जो शिकायत है, उसे आप जनता से मिलकर दूर कर लेते हैं।"

"हाँ, सबसे अधिक आराम मुझे भीङ के सामने महसूस होता है," नेहरू जी भावों में बह रहे हैं, "मैं जनता का हो जाता हूँ, जनता मेरी। जनता से मुझे नई ताकत मिलती है। बदले में मैं उसे अपने विचारों में साझीदार बनाने की कोशिश करता हूँ। इसे एक किस्म का लेन-देन समझ लीजिए।"

"आप लेखक भी तो हैं। आपके शब्द इतिहास का निर्माण करते हैं," काजिन्स को पूछने का मौका मिल जाता है।

"उँह" नेहरू जी हंस पङते हैं, "मैंने लेखक बनने के लिए लिखना शुरू नहीं किया था। मुझे तो कुछ विचार पेश करने थे.."

बातें चलती रहती हैं। नेहरू जी गद्दी से सिर टिकाकर आराम से बैठे हैं। काजिन्स को एक मौका मिलता है।

वे पूछने हैं, "प्रधानमंत्री जी। भारत को गांधी जी की विरासत बहुत बङी है और शायद इतिहास कहेगा कि उनकी सबसे बङी विरासत खुद आप हैं। पर भारत को आपकी विरासत कौन है?"

यह महत्वपूर्ण प्रश्न, 'नेहरू के बाद कौन ?' प्रत्येक व्यक्ति यही सवाल पूछता है। नेहरू जी गहरी सांस लेते हैं।

"भारत को मेरी विरासत कौन है ? अपनी हुकूमत कर सकने वाले चालीस करोङ भारतीय" नेहरू जी उत्तर देते हैं, "लोग अवसर पूछते हैं कि मेरा उत्तराधिकारी कौन होगा ? शायद लोग चाहते हैं कि मैं किसी को, या किन्हीं को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दूँ। पर मैं तो इस दृष्टि से सोचता ही नहीं। मेरा विश्वास थोङे से नेताओं के बजाए सारी जनता को स्वशासन चलाने की शिक्षा देने में है। मुख्य चीज है- मंजिल;

और उस मंजिल की ओर चालीस करोङ लोगों को आगे बढ़ना है।"

नेहरू जी अपने विचारों में डूबते जा रहे हैं। नार्मन काजिन्स एक-एक शब्द गौर से सुनने के लिए कुछ आगे झुक गये हैं। वातावरण गम्भीर हो गया है।

भारतीय लोकतंत्र के जनक नेहरू जी कहते जा रहे हैं, "मैं किसी को अपना उत्तराधिकारी चुन लू- यह मेरे सारे सोचने के ढर्रे से मेल नहीं खाता। मुझे कोई राजवंश थोङे ही चलाना है। लोकतंत्र पर इतना सब लिखने और बोलने के बाद, मैं किसी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर जाऊँ-यह कितनी खौफनाक चीज होगी। मेरी सबसे बङी देशसेवा यह होगी कि समय की आवश्यकता के अनुसार नेता पैदा करने में मैं जनता की मदद करू।"

समय बीतता जा रहा है। अभी बहुत से काम करने को पङे हुए हैं। काजिन्स भी इस बात को जानते हैं। नेहरू जी खिङकी से बाहर देखने लगे हैं। काजिन्स उठते हैं। नेहरू जी बङे प्रेम से हाथ मिलाते हैं; फिर उन्हें छोङने दरवाजे तक आते हैं।

निजी सचिव कमरे में आकर बताता है कि प्रतिरक्षा मंत्री तीन बार फोन कर चुके हैं; नेहरू जी सीधे कार्यालय वाले कमरे में पहुँचते हैं। प्रतिरक्षा मंत्री से फोन मिलाया जाता है। उधर से वे नागालैण्ड के बारे में, उत्तरी भारत-चीन सीमा की ताजी स्थिति के बारे में बता रहे हैं। नेहरू जी गम्भीर होकर सुन रहे हैं।

तभी न्यूयार्क से फोन आाता है। संयुक्त राष्ट्र में हमारे स्थायी प्रतिनिधि कुछ सलाह चाहते हैं। नेहरू जी उन्हें समझा रहे हैं।

रात के खाने का समय हो गया है, लेकिन विदेशों से फोन

श्राते जा रहे हैं। तटस्थ राष्ट्रों के सम्मेलन के बारे में लंका की प्रधानमंत्री श्रीमावो बण्डारनायके पूछ रही हैं। पेरिस स्थित भारतीय राजदूत फांस के विदेशमंत्री का आवश्यक संदेश पढ़- कर सुना रहे हैं।

रात का खाना चल रहा है। स्वीडन के नए राजदूत सपत्नीक खाने पर आये हुए हैं।

रात्रिदेवी के काले पंख फैलते जा रहे हैं। अंधेरा और घना होता जा रहा है। पक्षी अपने घोंसलों में सो चुके हैं। नेहरू जी के तीनों कुत्ते पुतली, पप्पी और मधु ऊँघने लगे हैं। समस्त मानव जाति सोने की तैयारी कर रही है। और प्रधानमंत्री नेहरू ?

वे गम्भीर विचारों में खोये अपने कार्यालय वाले कमरे की ओर बढ़ रहे हैं। अभी बहुत काम पडा हुआ है। निजी सचिव के साथ तीन-चार और कर्मचारी बैठे हैं।

मेज पर अनेक रिपोर्ट हैं, फाइलें हैं, पत्र हैं, संवाद हैं। नेहरू जी एक-एक को गौर से पढ़ रहे हैं और उत्तर लिखाते जा रहे हैं।

आधी रात बीत चुकी है। नेहरू जी की निगाह घडी की सुइयों पर अटक जाती है।

"भई, माफ करना, आज भी देर हो गई। अब जाओ । सवेरे आकर टाइप कर लेना," नेहरू जी अपने निजी सचिव से बडी आत्मीयता से कह रहे हैं। उनका प्यार सचिव तथा अन्य कर्मचारियों की सारी थकान मिटा देता है। वे चले जाते हैं।

नेहरू जी उठते हैं। खिडकी के बाहर देखते हैं। चारों ओर सुनसान, कहीं-कहीं खम्भों पर बिजली का प्रकाश । प्रकृति का सुप्त सौंदर्य । जवाहरलाल का कलाकार हृदय जाग उठता है- "सौंदर्य की आत्मा, तुम्हारी ज्योति तो आकाश में छलक रही है; तुम दीपक की नन्हीं-सी लौ में कैसे छिप जाती हो ?"

जवाहरलाल अपने सोने के कमरे की ओर बढ़ते हैं। हाथ में प्रसिद्ध पत्रकार लुई फिशर की नयी पुस्तक है।

कमरे में सामने गांधी जी का चित्र टंगा है-क्षण भर उसे देखते हैं। फिर निगाह मेज की ओर बढ़ती है- वहाँ भगवान बुद्ध की करुणा-मूर्ति है- "मैं उस पथिक की पगध्वनि सुनता हूँ, अपने इस समुद्र-तट से।"

जवाहरलाल फिर अपने विचारो में खो जाते हैं। दिन भर जो दौङता रहा और जिसके पीछे इतनी भीङ दौङती रही, अब वह अकेला है, निपट अकेला - महात्मा गांधी के चित्र और भगवान बुद्ध की करुणा-मूर्ति के बीच। मेज पर भगवद्गीता है - कर्मयोग का संदेश देने वाली।

जवाहरलाल खिङकी से बाहर देखते हैं-नक्षत्रों से भरा रहस्यमय आकाश।

यात्री थक गया है। पथ अनन्त है। आज की यात्रा काफी लम्बी रही; कल सुबह फिर उठना है और यात्रा पर चलना है। आज जहाँ तक चले, कल उससे आगे चलना है।

सो जाओ, आओ ! अनन्त पथ के पथिक। निद्रा देवी अपनी बाँहें फैलाये तुम्हारी प्रतिक्षा में है। कल का विहान भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। सो जाओ, सो जाओ, कल फिर यात्रा करनी है, लम्बी यात्रा। सो जाओ, भारत माता के लाडले जवाहर, सो जाओ।

१३

मित्रघात और लम्बी यात्रा को थकान

अनन्त पथ सामने था और जवाहरलाल शान के साथ चले जा अरहे थे। । वे जीवन के ७२ वर्ष पूरे कर ७३ वें वर्ष में पदार्पण कर रहे थे, लेकिन कहीं भी थकान का नाम नहीं, आराम नहीं। वही स्फूर्ति, सजग मस्तिष्क और युवकों जैसी गति । केवल चार-पांच घण्टे की नींद और बाकी समय देश के लिए, देशवासियों के लिए, विश्व के लिए, विश्व-शान्ति के लिए ।

नेहरू जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में जोरदार शब्दों में कहा था कि दुनिया में सह-अस्तित्व और सहयोग मनाने के लिए 'अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष' मनाया जाना चाहिए। तब विश्व के नेताओं ने निर्णय किया कि जब शान्ति-दूत नेहरू जीवन के ७५ वर्ष पूरे करेंगे, तब यह 'अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष' मनाया जाए ।

लेकिन इस दुनिया में स्वार्थलोलुपों की कमी नहीं । २० अक्तूबर १९६२ का वह अनाहूत दिन। चीन ने अपनी विशाल सेना लेकर भारत की उत्तरी सीमा पर अचानक हमला कर दिया। मित्रघात का इतना बङा उदाहरण दुनिया के इतिहास में शायद ही कहीं मिले ।

यह वही चीन था, जहाँ कम्यूनिस्ट शासन के स्थापित होते ही, जिसे १ अक्तूबर १९४९ को सबसे पहले भारत ने मान्यता दी थी। अनेक देश उसके विरुद्ध थे, फिर भी भारत ने उसकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। यही नहीं बल्कि संयुक्त राष्ट्र में भी भारत बराबर अपनी आवाज बुलन्द कर रहा था कि

संयुक्त राष्ट्र में चीन को भी स्थान मिले। यह वही चीन था जिसके साथ भारत ने सबसे पहले पंचशील पर हस्ताक्षर किए थे। यह वही चीन था, जिसके प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई का भारत में अभूतपूर्व स्वागत हुआ था और भारतीय जनता ने 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे लगाए थे। यह वही चीन था जिसने जवाहरलाल जी का अपने देश में शानदार स्वागत किया था और मित्रता का दावा किया था।

उसी चीन ने २० अक्तूबर १९६२ को अचानक भारत पर हमला कर दिया। नेहरू जी को लगा कि उनके साथ धोखा हुआ है, उनकी पीठ पर छुरा घोंपा गया है। फिर भी उन्होंने अपना संतुलन नहीं खोया।

उन्होंने दुनिया के सभी देशों के प्रधानमत्रियों तथा राष्ट्र- पतियों को लिखा - "यह बडे शोक की बात है कि चीनियों ने भारत की नेकी का जवाब बुराई से दिया है। जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ है, हमारी नीति बराबर चीन के साथ मित्रता और अच्छे सम्बन्ध रखने की रही है और हमने दुनिया की परिषदों में चीन का पक्ष लिया है। मगर दुख है कि बदले में चीन ने हमसे शत्रुता ही नहीं, बल्कि छल और कपट का व्यवहार किया है।"

यह एक ऐसे व्यक्ति की वाणी थी, जिसके साथ गहरा विश्वासघात हुआ था। जो अपमान के कडवेपन को मन ही मन महसूस कर रहा था, लेकिन उसका उबाल बाहर नहीं आने देना चाहता था। जो इतना बडा धोखा खाने के बाद भी संयत था।

२२ अक्तूबर को नेहरू जी ने रेडियो से भारत की जनता के नाम संदेश दिया - "... हिन्दुस्तान ने खास तौर से कोशिश करके दोस्ती का और सहयोग किया चीनी हुकूमत से, वहाँ के लोगों से; और उसकी तरफ से दुनिया की अदालतों में वकालत की;

और उसी चीनी सरकार ने इस भलाई का जवाब दिया बुराई से। यहाँ तक कि वह हमारे मुल्क पर हमलावर हुई और उसके कुछ हिस्सों पर कब्जा किया। कोई भी खुद्दार मुल्क इसको बर्दाश्त नहीं कर सकता; न इसको पसन्द करेगा। जाहिर है कि हिन्दुस्तान, जिसके लोग आजादी से मुहब्बत करते हैं, कभी भी इसके नीचे सिर नहीं झुका सकते, चाहे कुछ भी नतीजा हो।"

प्रधानमंत्री नेहरू के इस आवाहन से समस्त भारत एक होकर चीन का सामना करने के लिए तैयार हो गया। जातिभेद, धर्मभेद, भाषाभेद आदि सब मामूली झगडे भुला दिए गए। एक-एक व्यक्ति देश की आजादी के लिए बलिदान होने को तैयार हो गया। देश का नेतृत्व नेहरू के हाथ में था और देश का बच्चा-बच्चा नेहरू के इशारे पर सिर कटाने को तैयार था।

दिल्ली के रामलीला मैदान में विशाल सार्वजनिक सभा में नेहरू जी ने कहा - "आजादी हमें प्यारी है। हम आजादी के लिए लडने को तैयार हैं; आजादी पर कोई हमला हो तो हर तरह उस पर न्यौछावर होने के लिए तैयार हैं..।" ७२ वर्ष का वृद्ध कर्मयोगी और शान्तिप्रेमी अब आहत शेर की तरह दहाड रहा था और सारा देश उसके इशारे पर मातृभूमि के लिए न्यौछावर होने के लिए तैयार हो रहा था।

भारत पर आक्रमण हुआ है - इस समाचार से सारे संसार में तहलका मच गया। शान्तिप्रिय देश भारत, शान्ति-दूत नेहरू का भारत - उस पर कोई देश आक्रमण कर दे, यह आश्चर्य की ही बात थी।

अमेरिका और ब्रिटेन ने तुरन्त सहायता भेजी; अनेक देशों ने चीन की भर्त्सना की, और तटस्थ राष्ट्रों ने तुरन्त सम्मेलन बुलाया।

चीन ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इतने देश भारत की सहायता के लिए तैयार हो जाएँगे, इतने देश भारत की

प्रशंसा और चीन की भर्त्सना करेंगे। चीन ने अचानक हमला किया था और उसे आशा थी कि वह भारत के थोडे से सिपाहियों को मार-काटकर आगे बढ़ता चला जाएगा; लेकिन भारत के वीर जवानों ने लद्दाख में चुशूल तथा नेफा में वालोंग के मोर्चे पर उनके दांत खट्टे कर दिए। इन मोर्चों पर चीन को लेने के बदले देने पड गए। तब उसको आँखें खुलीं और २१ नवम्बर को अर्थ-रात्रि को उसने अचानक युद्ध-विराम की घोषणा कर दी।

लेकिन उसके मित्रघात ने, उसकी धोखेबाजी ने नेहरू जी को पस्त कर दिया। जो ७२ वर्षीय नेहरू एक-एक कदम में दो-दो सीढ़ियां चढ़ते थे, जो बच्चों के साथ दौड लगाते थे, वही अब कन्धे झुकाये, माथे पर बल डाले चलने लगे थे।

जनवरी १९३४ में भुवनेश्वर (उडीसा) में कांग्रेस अधिवेशन चल रहा था। नेहरू जी हमेशा की तरह उसमें भाग ले रहे थे। ७ जनवरी को वहीं यकायक उनके शरीर के दाहिने भाग में पक्षाघात का आक्रमण हो गया। जिसने हमेशा 'आराम हराम है' का नारा लगाया था, उसी को बाध्य होकर आराम करना पडा।

कुछ दिन बाद वे ठीक हो गए और दिल्ली वापस लौट आये। डाक्टरों तथा शुभचिन्तकों के बार-बार मना करने पर भी वे कर्मयोगी की तरह फिर अपने काम पर जुट गए। वे अस्वस्थ थे, फिर भी भैसालोटन गए, बम्बई गए, दिल्ली में अनेक समारोहों में गए, अनेक व्यक्तियों से मिले और उनसे अनेक समस्याओं पर बातें कीं, कार्यालयों में अनेक कागजात देखे और उन पर अपनी टिप्पणियाँ लिखीं।

लेकिन शरीर उम्र और काम के बोझ से शिथिल होता चला गया। उन्हें आराम करने को कहा गया। वे न माने। फिर

किसी प्रकार उन्हें ४ दिन आराम करने देहरादून जाने के लिए तैयार किया गया।

२३ मई १९६४ की सुबह। देहरादून के पोलोग्राउण्ड में स्त्री-पुरुषों और बच्चों की भीड़ लग गई। आज फिर उनके हृदय-सम्राट अपनी सुपुत्री इन्दिरा के साथ ४ दिन के लिए देहरादून आने वाले थे।

हेलिकाप्टर ने धीमे से पोलोग्राउण्ड की जमीन बुई। 'चाचा नेहरू जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूंज उठा। सिर पर श्वेत टोपी, टोपी के किनारे-किनारे श्वेत बाल, श्वेत अचकन और अचकन के बटन-होल में मुस्कराता लाल गुलाब, श्वेत चूड़ीदार पाजामा। चेहरे पर तेज, लेकिन उस तेज में थकन की हलकी- हलकी रेखाएँ।

पोलोग्राउण्ड से सर्किट हाउस तक रास्ते भर स्त्री-पुरुषों की भीड़। बच्चों द्वारा फूलों की वर्षा और 'चाचा नेहरू जिन्दाबाद' के नारे। चाचा नेहरू बच्चों के बीच आ गए, बच्चे बन गए, चेहरा फिर गुलाब की तरह मुस्कराने लगा।

२४ मई की सुबह। हाथ में ताजा गुलाब लिए नेहरू जी लान में खड़े मुस्करा रहे थे और उनके स्वस्थ खिले चेहरे को देखकर लोग कह रहे थे, "इस युवक को वृद्ध कहने वाला भृठा है। ये तो चिर-यौवन के प्रतीक हैं, हृदयसम्राट हैं।"

दिन में नेहरू जी अपने कुछ मित्रों से मिले, फिर आराम किया, फिर निजी सचिव को कुछ पत्र लिखाये और कुछ दफ्तरी काम किया।

शाम को श्रीप्रकाश जी, उनसे मिलने सर्किट हाउस पहुँचे। श्रीप्रकाश जी, जो नेहरू जी से केवल ६ महीने छोटे थे, जो लन्दन से ही नेहरू जी से परिचित थे और भारत आने पर भी अनेक

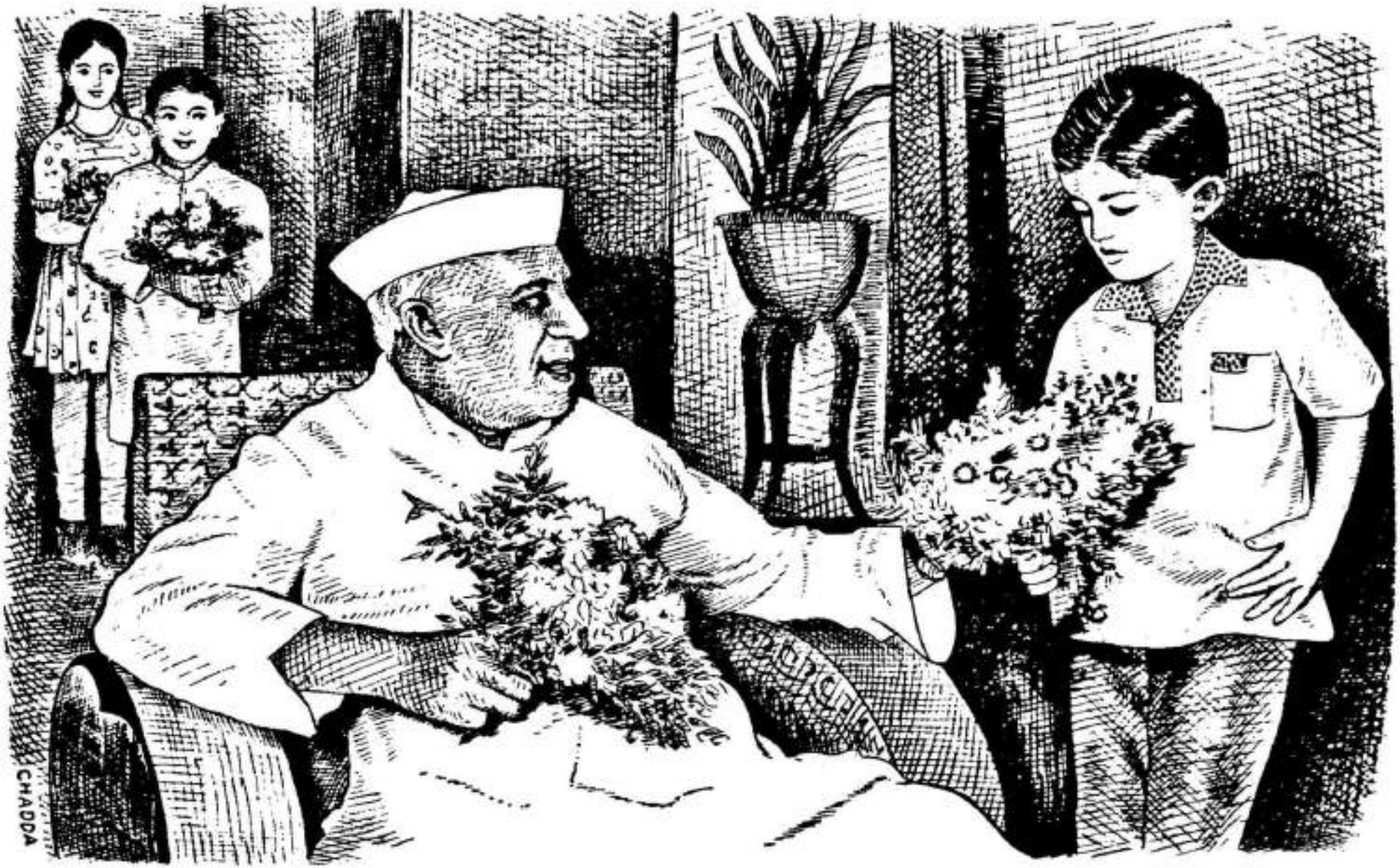
CHADDA

आन्दोलनों में साथ रहे। वे जब मिलने आये तो उन्हें नेहरू जी का स्वास्थ्य देख बहुत दुख हुआ।

उन्होंने कहा, "जवाहरलाल, मैंने पहले कभी भी तुम्हें ऐसी हालत में नहीं देखा था और न इसकी कल्पना ही कर सकता था। मुझे तो रोना श्राता है।"

यह कहते-कहते श्रीप्रकाश जी की आँखों से आँसू की दो बूंदें चू पडीं।

फिर बहुत-सी पुरानी बातें याद आईं। और जब श्रीप्रकाश जी चलने को हुए तो नेहरू जी भी उनका निवासस्थान देखने चल दिए।

खूबसूरत जगह पर छोटी-सी कुटिया देख नेहरू जी को खुशी हुई। बगीचा देखा, पुस्तकालय देखा, जलपान किया।

जब जाने को हुए तो श्रीप्रकाश जी ने मिन्नत के स्वर में कहा, "जवाहर, क्यों नहीं इन अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का बोझ कम कर देते। यदि ऐसा करोगे तो मेरी तरह सीधे खडे रह पाओगे।"

नेहरू जी केवल मुस्कराकर रह गए। जाते समय दोनों गले मिले। नेहरू जी ने उन्हें अपनी बाँहों में कस लिया - जाने क्यों।

२५ मई की सुबह। नेहरू जी लान में बैठे उसी तरह मुस्कराते रहे। बच्चे फूल दे जाते तो कहते, 'धन्यवाद।' शाम को घूमने निकले। सहस्रधारा गए और प्रसन्नचित्त लौटे।

फिर २६ मई १९६४। दोपहर को आराम करने के बाद शाम को नर-नारियों के अगाध समुद्र के बीच से होती हुई उनकी कार पोलोग्राउण्ड पहुँची। हेलिकाप्टर खडा था। नेहरू जी उसमें बैठे। सामने अपार जनता को देख मुस्कराये।

'पण्डित नेहरू जिन्दाबाद' के गगनभेदी नारों से पूरा देहरादून गूंज उठा। अनेक हाथ, अनेक रूमाल हिलने लगे। पौने पाँच बजे विमान घरघराया, कुछ सरका, फिर उठा और उठता चला गया। हाथ और रूमाल हिलते रहे, 'पण्डित नेहरू जिन्दाबाद' के नारे लगते रहे - लगते रहे।

१४

काल को छाया-तोन मूर्ति की ओर

रह मई की ही रात । नेहरू जी अपनी सुपुत्री इन्दिरा के साथ दिल्ली पहुँचे । श्री लालबहादुर शास्त्री आदि नेताओं ने उनका स्वागत किया। वे प्रसन्नचित्त और तरोताजा लग रहे थे।

रात के खाने के बाद वे काफी देर तक अपने कार्यालय में काम करते रहे ।

"मैंने सब फाइलें निपटा दी हैं," उन्होंने अपने सहायक से कहा और विश्राम करने चल दिए । कौन जानता था कि यही उनका अन्तिम विश्राम था ।

और२७ मई १९६४ की वह मनहूस सुबह । ६ बजकर २० मिनट पर उन्होंने इन्दिरा जी को बताया कि उनकी पीठ में दर्द हो रहा है। डाक्टरों को तत्काल फोन किया गया। लेकिन उनके आने से पहले ही नेहरू जी बेहोश हो गए।

काल की छाया तीन मूति भवन की ओर बढ़ती जा रही थी; डाक्टर भरपूर शक्ति से उसे रोकने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन विधना पर किसका बस ?

काल ने अपने विशाल पंख फैला दिए थे। मानव की विवशता पर नियति मुस्करा रही थी। काल ने उस थकित मानव को अपने अंक में ले लिया था।

जिस महामानव को हमने एक क्षण भी आराम नहीं करने दिया था, अब वही महामानव काल के अंक में लेटकर अनन्त विश्राम कर रहा था। कितना थक गया था वह, कि एक बार जो सोया तो फिर कभी आँखें नहीं खुलीं।

ढाई बजे तक दुनिया के कोने-कोने में समाचार फैल गया।

सारा संसार स्तब्ध था। शान्ति का दूत चला गया था; मानव-मुक्ति का मसीहा इस संसार से उठ गया था; एक महान विचारक, महान राजनीतिज्ञ। महान जन-सेवक, महान कलाकार और साहित्यिक, महान कर्मयोगी अनन्त-निद्रा में निमग्न हो गया था। देश के इतिहास का एक युग समाप्त हो गया था; दुनिया के इतिहास का एक अध्याय पूरा हो गया था।

देश-विदेशों में शोक की लहर फैल गई थी। बड़े-बड़े नेता, दार्शनिक, वैज्ञानिक शोक में डूब गए थे। तीन मूर्ति का वह प्रांगण मंत्रियों, राजदूतों, संसद सदस्यों, कलाकारों, किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, बच्चों, वृद्धों से भर गया।

भारत के सभी नगरों में शोक का वातावरण छा गया, कार्यालय बन्द हो गए, दुकानें बन्द हो गईं, सिनेमा बन्द हो गए। सर्वत्र कुहराम मच गया। उस महामानव के अन्तिम दर्शन करने के लिए आने वालों से रेलगाड़ियां भर गईं, विशेष विमान दिल्ली की ओर आने लगे, अनेक कारें, ट्रकें, बसें खचाखच भरकर

दिल्ली की ओर चल पड़ीं।

विदेशों से अनेक बड़े-बड़े नेता इस महामानव को अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करने दिल्ली की ओर रवाना हो गए, सभी देशों के झण्डे आधे झुका दिए गए; राष्ट्रों के प्रधानों से शोक- संवाद आने लगे।

संयुक्त राष्ट्र संघ का झण्डा आधा झुका दिया गया; संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक तत्काल रोक दी गई और एक मिनट का मौन रखा गया। परिषद के अध्यक्ष श्री रोजर सेद ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा- "नेहरू जी ऐसे राजनीतिज्ञ थे जिनका आदर्श अनेक संततियाँ गुजर जाने पर भी धुंधला नहीं होगा। भारत का शोक संयुक्त राष्ट्र संघ का शोक है..।"

अमेरिका के राष्ट्रपति जानसन ने कहा- "नेहरू का इससे बढ़कर और कोई स्मारक नहीं हो सकता कि दुनिया में कोई युद्ध न हो।" सोवियत रूस के प्रधानमंत्री ने कहा -... "उनकी मृत्यु भारतवासियों के लिए ही नहीं बल्कि समस्त विश्व के लिए भी भारी क्षति है।" ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ ने कहा - "विश्व की शान्ति-प्रेमी जनता उनके निधन पर शोक मनायेगी...।" संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासिर ने कहा - "नेहरू जी मिस्र की जनता के और उसकी आकाँक्षाओं के विश्वसनीय मित्र थे। वे केवल भारत ही नहीं बल्कि समस्त मानवता के प्रकाशपुंज थे।" लंका की प्रधानमंत्री श्रीमावो बण्डारनायके ने कहा- "उन्होंने शान्ति के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था...।" मलयेशिया के प्रधानमंत्री टुंकू अब्दुल रहमान ने कहा - "पण्डित नेहरू मेरी प्रेरणा के श्रोत थे।" अरब लीग के महामंत्री ने कहा- "अरब जनता ने दुनिया में अपना सबसे बडा मित्र और बन्धु खो दिया है।"

और स्वयं नेहरू जी ने अपने बारे में क्या कहा था ? नेहरू जी ने कहा था- अगर मेरे बाद कुछ लोग मेरे बारे में सोचें तो मैं चाहूँगा कि वे कहें -

'वह एक ऐसा आदमी था, जो पूरे दिल व दिमाग से हिन्दुस्तान से और हिन्दुस्तानियों से मुहब्बत करता था और हिन्दुस्तानी भी उसकी खामियों को भुलाकर उसको बेहद,

अजहद मुहब्बत करते थे।"

बेहद मुहब्बत - अजहद मुहब्बत - भारत माता की गुलामी की जंजीरें तोड़ने वाले, भारतवासियों को निरंतर प्रगति के पथ पर ले जाने वाले, दुनिया को शान्ति का पाठ पढ़ाने वाले, ओ जवाहर ! जितना प्यार तुमने अपने प्यारे भारत को दिया और जितना प्यार भारत ने तुम्हें दिया, उतना प्यार क्या कभी किसी को मिल सकेगा ?

यकीन न हो, तो देख लो तीन मूर्ति के आगे आँसुओं से तर दो लाख स्त्री-पुरुषों और बच्चों की इस भीड़ को; रात के दो बजे भी तुम्हारे अन्तिम दर्शन करने वालों, तुम्हें अन्तिम प्रणाम करने वालों की इस डेढ़ मील लम्बी लाइन को। देख लो इन स्त्रियों को जो आँखों में आँसू और अंजुलियों में फूल लिए खड़ी हैं, देख लो इन वृद्धों को जो घण्टों से लाइन में खड़े हैं, देख लो इन नन्हे-नन्हे बच्चों को जिनके गालों पर आँसुओं की रेखाएं बन गई हैं, फिर भी जो सिसकियाँ लेते हुए 'चाचा नेहरू जिन्दाबाद' के नारे लगाते जा रहे हैं।

यकीन न हो तो देख लो अपने इस जादू को। जब तुम मंच पर खड़े होते थे, तब सामने लाखों की भीड़ रहती थी; जब तुम कहीं जाते थे, तब सड़कों के किनारे अनगिनत लोग तुम्हारी एक झलक देखने खड़े रहते थे, और आज जब तुम चिर-निद्रा में अपने भवन के दरवाजे के पास लेटे हो, तब भी लाखों की भीड़ तुम्हें देखने को आतुर है।

आज घर-घर मातम छाया हुआ है। सूरज भी शोक-विह्वल होकर बादलों की ओट हो गया था; आसमान ने तुम्हारे शोक में दो बूँद आँसू लुढ़का दिए थे, हवा भी बेचैन होकर बेतहाशा दौड़ी थी। और जाने क्यों हर बार लगता है कि धरती भी डगमगा जाएगी।

क्यों ?

क्योंकि जितना प्रेम तुमने इस जनता को दिया और जितना प्रेम इस जनता ने तुम्हें दिया, उतना प्रेम न कोई पा सका है और न पा सकेगा। तुम जो मरने के बाद भी इस भारत की मिट्टी का अंग बन जाना चाहते हो, तुम जो चाहते हो कि तुम्हारी कुछ भस्म गंगा में डाल दी जाए, जिससे वह भारत-माता के चरण पखारने वाले समुद्र में मिल जाए, और कुछ भस्म विमान से बिखेरी जाए, जिससे वह भारत के खेतों की उस मिट्टी में मिल जाए, जिसमें किसान मेहनत करते हैं।

ऐसी बसीहत किसने की होगी इस दुनिया में ? किसने आज तक लिखा कि उसकी भस्म को उन खेतों में मिला दिया जाए, जिसमें किसान मेहनत करते हैं ? केवल तुमने लिखा, इसीलिए तो भारत का बच्चा-बच्चा तुमसे इतनी मुहब्बत करता है।

१७

कारवां गुजर गया....

काल-रात्रि अपना आहार कर अब पंख समेटने लगी है, आसमान के झिलमिलाते तारे धीरे-धीरे ओझल होते जा रहे हैं। भोर होने लगी है।

२८ मई १९६४ की भोर।

अनेक विमान दिल्ली पहुँच चुके हैं, अनेक पहुँचने वाले हैं; अनेक रेलगाडियाँ, ट्रक, कारें, बैलगाडियाँ आ चुकी हैं, अनेक आने वाली हैं। अन्तिम दर्शन करने वालों की लाइन उसी तरह लगी हुई है। भीङ बढ़ती जा रही है।

पूरब से सूर्य झाँकने लगा है। हीरालाल माली फिर सामने आ गया है। सुबक रहा है, आँसुओं की धारा बह रही है, नेहरू जी के चरणों में गुलाब रखते हुए कह रहा है-"पण्डित जी, गुलाब की कली लाया हूँ।" लेकिन धन्यवाद के रूप में उसे पण्डित जी की जो मोहक मुस्कान मिलती थी, वह आज क्यों नहीं मिली ? क्यों ? माली जोर से रो पडा है, हाथों में मुँह छिपाये वहाँ से हट गया है, दूर चला गया है, डर रहा है उसके रोने से कहीं पण्डित जी की नींद न खुल जाए।

धूप तेज होने लगी है। भीड बढ़ती जा रही है। 'चाचा नेहरू जिन्दाबाद' और 'नेहरू अमर हैं', नारे लगते जा रहे हैं। शव को ले जाने की तैयारी होने लगी है। नेहरू जी के इस पार्थिव शरीर को जमुना के उसी किनारे ले जाया जाएगा, जहाँ १६ वर्ष पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पार्थिव शरीर को ले जाया गया था । जमुना के इस ओर एक तरफ राष्ट्रपिता गांधी की समाधि है-राजघाट, और दूसरी तरफ भारत माता के लाडले सपूत की समाधि बनेगी - शान्तिघाट । स्वतंत्रता संग्राम में दोनों साथ-साथ रहे और अब दोनों की समाधियाँ भी साथ- साथ रहेंगी ।

११ बज चुके हैं। तैयारी हो रही है। नर-नारी व्याकुल होते जा रहे हैं। । धूप तेज होती जा रही है

११।। बज गए हैं। तोपगाडी पहुँच चुकी है। इसी से नेहरू जी के पार्थिव शरीर को ६ मील दूर शान्तिघाट ले जाया जाएगा ।

११ बजकर ४४ मित्तट धरती डगमगा रही है। पूरा भवन काँप उठा है। लोग एक-दूसरे को देख रहे हैं। यह क्या है ? भूकम्प ? हां, भूकम्प !

जब इस धरती से कोई महान आत्मा उठती है, तो इसी प्रकार घरती काँपती है।

तीन मूर्ति के आगे लाखों की भीड़ जमा है; लाखों लोग ६ मील लम्बे रास्ते पर खड़े हैं; लाखों लोग शान्तिघाट पहुँचे चुके हैं।

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन, उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन, मंत्रिमण्डल के सदस्य, अनेक राज्यों के राज्यपाल और मुख्य मंत्री, अनेक दलों के नेता, संसद सदस्य, वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, मजदूर, किसान सब बेचैन दिखाई दे रहे हैं।

विदेशों से ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लार्ड ह्यम, लंका की प्रधानमंत्री श्रीमावो बण्डारनायके, नेपाल के प्रधानमंत्री डा० तुलसीगिरि, यूगोस्लाविया के प्रधानमंत्री पीटर्स स्ताम्बोलिक, संयुक्त अरब गणराज्य के उपराष्ट्रपति श्री हुसैन शफी, पाकिस्तान के विदेश मंत्री श्री जुल्फिकार भुट्टो, ईरान के गृह मंत्री डा० जवाद सदर, ब्रिटेन की रानी के प्रतिनिधि लार्ड माउण्टबेटन आदि सैकड़ों लोग पहुँच चुके हैं- शान्ति-दूत नेहरू को अन्तिम विदाई देने।

यह शरीर बड़ा कृतघ्न है। प्राणवायु के निकलते ही यह पाषाण शिला की तरह निश्चेष्ट हो जाता है। लाख प्रयत्न करो, क्षण भर को भी नहीं जागता, एक अंग तक हरकत नहीं करता। जो अपनी अचकन पर एक गुलाब लगाता था, आज शोकग्रस्त लोगों ने उस पर करोड़ों गुलाब बिखेर दिए हैं, फिर भी वह चुप है, शान्त, निश्चेष्ट। जनता को देख वह कैसा मुस्कराता था, बच्चों के बीच कैसा खिलखिलाता था, वृद्धों के बीच किस शालीनता से बोलता था, अव्यवस्था देख किस तरह भड़क जाता था। वही जनता का प्यारा, बच्चों का चाचा, वृद्धों का जवाहर आज शान्त है, बिल्कुल चुप।

हमेशा वह बोलता था और जनता सुनती थी; आज जनता बोल रही है और वह मौन है। उसका दिव्य शान्त चेहरा देखकर

लग रहा है कि अभी बोल देगा। यकायक उठकर आँसुओं से भीगी, क्रन्दन करती, इधर से उधर भटकती जनता के बीच अपनी छडी लेकर पहुँच जाएगा और अपनी चिरपरिचित तुनकमिजाजी में आकर कहेगा, "यह क्या बदतमीजी है। जरा आँख लग गई थी, सोने भी नहीं दिया। हटो, भागो यहां से, यह क्या कुहराम मचा रखा है ?" और फिर स्त्रियों की नम आँखें, वृद्धों के गालों पर पडी रेखाएं और बच्चों के मासूम चेहरे देखकर यकायक चुप हो जाएगा और फिर मुस्कराकर कहेगा, "भई, माफ करना, अनुशासन मुझे बहुत प्रिय है। उसे टूटते देख मैं कभी-कभी अनुशासन से बाहर हो जाता हूँ।"... और फिर जनता हंस पडेगी. और फिर वह भी खिलखिलाने लगेगा।

लेकिन नहीं, यह असम्भव है। शरीर बडा कृतघ्न है। प्राणवायु के निकलते ही वह पाषाण-शिला की तरह निश्चेष्ट हो जाता है।

पूरी तैयारी हो चुकी है। १ बजकर १० मिनट हो गए हैं। सैनिक-बैण्ड से शोकधुन बज रही है, पण्डितगण मंत्रोच्चार कर रहे हैं। नेहरू जी का शव तोपगाडी पर रख दिया गया है। सिर खुला है, बाकी शरीर तिरंगे झण्डे से ढंका है और उसके ऊपर अनगिनत फूल बिखरे हैं।

शव-यात्रा आरम्भ हो गई है। रास्ते के दोनों ओर सैनिक हथियार उल्टे करके खडे हैं। आगे क्षेत्रीय कमाण्डर की जीप है, फिर पायलेट हैं, उनके पीछे शव को उठाए तोपगाडी, उसके पीछे खुली कार में इन्दिरा जी और उनके पुत्र संजय और उनके बाद कारों का काफिला।

तीन मूर्ति का मुख्यद्वार। द्वार के बाहर जनता का अपार सागर। सडकें, पेड, मकान की छतें सब जगह लोग ही लोग। १ बजकर २० मिनट हो गए हैं। तोपगाडी द्वार को पार

कर बाहर निकल रही है। जनता भारी शोक से क्रन्दन कर उठी है। लोग सिसकियां भर रहे हैं। बिलख-बिलखकर रो रहे हैं। 'जवाहरलाल नेहरू अमर हों' के नारे लगा रहे हैं।

कल बादल छाये थे । आज वे न जाने किस कोने में छिपकर सिसक रहे होंगे। सूर्य एकटक देख रहा है धरती के इस सूर्य को, ज्योतिपुंज को । आज अन्तिम दिन है, कल से नहीं दिखाई देगा। आकाश का सूर्य इस अन्तिम दर्शन का एक क्षण भी नहीं खोना चाहता । एकटक देख रहा है।

कडकती गर्मी पड रही है, फिर भी कोई टस से मस नहीं होता । लगता है मानों राजधानी का समस्त जीवन आज एक ही रास्ते पर आकर जम गया है, उस रास्ते पर जहाँ से उसका प्रिय जवाहर अन्तिम यात्रा कर रहा है।

मानवों के इस अथाह सागर के बीच से अर्थी बढ़ती जा रही है, धीरे-धीरे । 'चाचा नेहरू जिन्दाबाद,' 'पण्डित नेहरू अमर हों,' के नारों के बीच तोपगाडी के ऊपर शान्त मुद्रा में लेटा वह महामानव चला जा रहा है... नहीं, ले जाया जा रहा है - अन्तिम यात्रा पर ।

जो एक-एक दिन सैकडों मील चला था, कभी विमान पर, कभी रेलगाडी में, कभी कार में, कभी बैलगाडी पर, कभी पैदल; जो पैदल भी इतनी तेज चलता था कि साथ चलने वाले पिछड जाते थे, जो एक-एक डग में दो-दो सीढ़ियाँ लाँघता था, आज वह तोपगाडी पर शान्त लेटा था और सेना के ६० जवान उसे खींच रहे थे। विधि की कितनी बडी विडम्बना है यह ।

तीन मूर्ति से विजय चौक केवल एक मील है। जन-सागर के बीच से होती हुई यह अर्थी पूरे ५० मिनट में यहाँ पहुँची है। यह वही स्थान है जहाँ हर साल गणराज्य दिवस समारोह में लाखों लोग नेहरू जी के दर्शन करते थे, उन्हें चलते-फिरते हंसते-

खिलखिलाते देखते थे; आज भी लाखों लोग यहां उनके दर्शनों के लिए खड़े हैं। अन्तर केवल इतना है कि आज वे चलेंगे नहीं, खिलखिलायेंगे नहीं।

अर्थी राजपथ से गुजर रही है। दोनों ओर लाखों की भीड़ है। कड़कड़ाती धूप, अपार जनसमूह। स्त्रियां रो रही हैं, बच्चे बिलख रहे हैं, अनुशासन टूट चुका है। अर्थी के पीछे लाखों लोग पागलों की तरह भागते चले जा रहे हैं। 'चाचा नेहरू जिन्दाबाद', 'पण्डित नेहरू अमर हैं' के नारे लग रहे हैं। अर्थी पर फूलों की वर्षा हो रही है, आँखों से गंगा-जमुना बह रही है, भीड़ के रेले में पैर लड़खड़ा रहे हैं, अनेक मूच्छित हो गए हैं, अनेक फफक- फफककर रो रहे हैं, अनेक पागलों की तरह अर्थी के पीछे-पीछे भाग रहे हैं।

लेकिन एक वह है, जो खामोश लेटा है, २० लाख व्यक्तियों की इस भीड़ को देखकर भी उठता नहीं, जागता नहीं, मुस्कराता नहीं। शान्त, गम्भीर चेहरा, लेकिन वही आकर्षण। लगता है कि अभी बोल देगा।

"अरे उसका सिर तो ढक दो। कितनी गर्मी पड़ रही है," एक बुढ़िया की ममता जाग उठी है।

"मां, अब क्या गर्मी क्या सर्दी। हंस उड़ गया है, मिट्टी बची है," बगल में खड़ा एक व्यक्ति कहता है।

बुढ़िया उसकी ओर देखती है, उसकी वेदनामय मुस्कान देखती है और फफक-फफककर रो पढ़ती है, "नहीं, नहीं, ऐसा न कहो। ऐसा न कहो।"

सारे जनसमूह में शोक की लहर दौड़ जाती है, क्रन्दन से वातावरण क्षुब्ध हो उठता है, आँसुओं से भरती गीली हो जाती है।

अर्थी आगे बढ़ती जा रही है। राजपथ से इण्डिया गेट, फिर तिलक मार्ग, मथुरा रोड, इन्द्रप्रस्थ मार्ग, रिंग रोड होती हुई

राजघाट पहुँच गई है। यह वह स्थान है, जहाँ १६ वर्ष पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पार्थिव शरीर को हमने आग के शोलों के हवाले किया था। आज उसी के निकट राष्ट्रनिर्माता नेहरू को उसी तरह आग के शोलों के हवाले करना है। शोक- संतप्त जनता 'पण्डित नेहरू अमर हैं' नारे लगा रही है, ऊपर से हेलिकाप्टर गुलाब के फूलों की वर्षा कर रहा है और अर्थी बढ़ती जा रही है।

लाल चबूतरा, ५ फुट ऊंचा और १६ फुट चौरस । चबूतरे पर १० मन चन्दन की लकडियां । ३ घण्टे में ६ मील की शव- यात्रा सवा चार बजे शाम को समाप्त हो गई है। नेहरू जी का पार्थिव शरीर चिता के ऊपर रख दिया गया है। पण्डितगण वेद-मंत्रों का उच्चारण कर रहे हैं। गंगाजल छिड़का जा रहा है, रेशमी चादरें चढ़ाई जा रही हैं, गुलाब और गेंदे के फूल अर्पित किए जा रहे हैं । ५ लाख जनता आँसू पोंछती हुई, सिसकियाँ लेती हुई इस मर्मभेदी दृश्य को चुपचाप देख रही है।

बड़े-बड़े नेता शव के पास जाकर अन्तिम प्रणाम कर रहे हैं। बहन विजयलक्ष्मी पण्डित अपने लाडले भाई को इस तरह लकडियों के ऊपर लेटा नहीं देख सकी हैं, अन्तिम प्रणाम करने के लिए चबूतरे पर जाते ही फफक-फफककर रो पड़ी हैं और हाथों से मुँह छिपाये लौट आई हैं।

घाघरा-ओढ़नी पहने एक प्रौढा स्त्री केसर देवी आँखों में आँसू और हाथ में शुद्ध घी का छोटा-सा पीपा लिए चली आ रही है। वह अपने प्रिय नेता से कभी मिली थी। आज सीधे अपने गाँव से चली आई है, अन्तिम बार मिलने, अपने प्रिय नेता की चिता पर घी चढ़ाने । जनता में एक बार फिर शोक की लहर दौड़ गई है। केसर देवी से घी का पीपा लेकर चिता तक पहुँचा दिया गया है।

४ बजकर ३७ मिनट हो गए हैं। संजय ने चिता में अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी है।

सैनिकों ने अन्तिम विदाई के लिए गोलियाँ दाग दी हैं। बिगुल वाले शोक-धुन बजा रहे हैं। वर्दी पहने हुए अफसर अन्तिम सलामी दे रहे हैं।

अग्नि प्रज्ज्वलित हो गई है। चिता धू-धूकर जलने लगी है। समस्त जनता व्याकुल हो उठी है। फूलों का राजकुमार आज आग के शोलों के बीच झुलस रहा है, जल रहा है। जनता पागल हो रही है, जोर-जोर से रो रही है, और 'नेहरू अमर हैं,' 'नेहरू जिन्दाबाद' चिल्ला रही है।

माउण्टबेटन बडे दुखी स्वर में रस्क से कह रहे हैं, "मेरा यह दुर्भाग्य रहा है कि मुझे भारत की दो महान आत्माओं-- महात्मा गांधी और पण्डित नेहरू- की अन्त्येष्ठी देखनी पडी है।"

अग्नि की लपटों ने राष्ट्रनायक, शान्ति-दूत, भारत-माता के लाडले जवाहर का पार्थिव शरीर अपनी बाँहों में भर लिया है। हंस कल उड चुका था। मिट्टी बची थी। आज वह मिट्टी भी पंचभूत में मिल गई है।

एक मनवन्तर समाप्त हो गया है।